

आर.एन.आई. नं. 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 जून 2022
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 जून 2022
ISSN : 2456-611X



राम चमकते भानु समाना

वर्ष : 60 अंक : 05
मूल्य : 10/- पृष्ठ संख्या : 64
डाक पंजीयन संख्या BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणापासक

धार्मिक पाक्षिक



बिन्दु से सिन्धु तक

- आज्ञा का पालन मन की सहज-सरल वृत्ति होने पर ही हो सकता है।
- मनोबल को बढ़ाने के लिए धैर्य व सहनशीलता की जरूरत है।
- उन्नति के आधार में आत्मविश्वास ही होता है।
- छोटी-सी गलती भी जीवन के सुख को नष्ट-भ्रष्ट कर सकती है।
- भोजन से पूर्व शांत भाव से विचार करना चाहिए कि मेरे द्वारा किया गया भोजन मेरी साधना में सहयोगी हो।
- व्यक्ति बहुत सुनता है, बहुत विचार करता है, पर जब मौके पर आचरित करना हो तो सब भूल जाता है।
- सफलता के द्वार पर आकर यदि व्यक्ति द्वार को खोले नहीं, धक्का नहीं दे तो वह सफल कैसे हो सकता है?
- जिस प्रकार ठहरे हुए पानी में कुछ समय बाद दुर्गंध आने लगती है, वैसे ही ठहरे हुए विचार भी मलिन हो जाते हैं।
- आने वाली हर स्थिति, परिस्थिति के लिए व्यक्ति को सदैव तैयार रहना चाहिए। कभी भी स्वयं को विचलित नहीं होने देना चाहिए। हिम्मत और धैर्य ऐसे आत्मिक गुण हैं जो व्यक्ति को हर स्थिति, परिस्थिति से उबार सकते हैं।
- महापुरुषों के आदर्श को दृष्टि में रखकर आचरण करें तो अवश्य ही हमारा कल्याण होगा।
- स्वर्ण की परीक्षा आग में तयाने पर होती है, वैसे ही व्यक्ति कितना ही आत्मशक्ति सम्पन्न हो उसकी परीक्षा तो विकट परिस्थिति में ही होती है।
- ऊँचाई के लिए स्वार्थ त्याग का भाव विकसित करना होगा। स्वार्थ के स्थान पर समुदाय का हित सोचना होगा।
- आसमान को टिकने के लिए किसी स्तम्भ या दीवार की जरूरत नहीं होती, वह स्वयं का आधार है।
- यदि किसी प्रसंग से कोई कुछ कह दे तो निराश नहीं होना चाहिए अपितु उससे प्रेरित हो मन में उत्साहित होना चाहिए।
- संतोष का धन बाहर कहीं से नहीं लाना पड़ता, वह तो मनुष्य के मन में सद्विचारों से स्वयं ही उत्पन्न हो जाता है।

-यशम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

॥ जय गुरु नाना ॥

॥ जय महावीर ॥

॥ जय गुरु राम ॥



राम धमकते भानु ससान

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

कार्यसमिति एवं आमसभा बैठक सूचना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति व श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ की सत्र 2021-23 की विभिन्न कार्यसमिति बैठकें एवं आमसभा (समता युवा संघ) गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षों के सभापतित्व में 16-17 जुलाई 2022, शनिवार-रविवार को उदयपुर (राज.) में आयोजित होनी प्रस्तावित है, जिसमें शीर्ष यदाधिकारी, पूर्व अध्यक्ष, सभी अंचलों के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष/मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्य, संयोजन मण्डल सदस्य व विशेष आमंत्रित सदस्य एवं अन्तर्गत संस्थाओं के शीर्ष यदाधिकारीगण सादर आमंत्रित हैं।

विनीत-राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ



आगमवाणी

तुमंसि नाम तं चेव जं हंतव्वं ति मन्नसि।
तुमंसि नाम तं चेव जं अज्जावेयव्वं ति मन्नसि।
तुमंसि नाम तं चेव जं परियावेयव्वं ति मन्नसि।

–आचारांग (1/5/5)

जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है।
जिसे तू शासित करना चाहता है, वह तू ही है।
जिसे तू परिताप देना चाहता है, वह तू ही है।
(स्वरूप दृष्टि से सब चैतन्य एक समान हैं। यह अद्वैत भावना ही अहिंसा का मूलाधार है।)

The one whom you want to kill is yourself only.

The one whom you want to suppress is yourself only.

The one who you want to torment is Yourself only.

(All living beings are the same. This feeling of unity is the basis of non-violence.)

हिंसादो अविस्मण, वहपरिणामो य होइ हिंसा हु।
तम्हा पमत्तजोगो, पाणत्ववरोवओ णिच्चं॥

–समणसुत्तं (155)

हिंसा से विरत न होना और हिंसा का परिणाम रखना हिंसा ही है। इसलिए प्रमाद का योग नित्य-प्राणघातक है।

Not to shun violence and to keep violent disposition are both violent.

Therefore, the negligent action is always fatal.

दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं

–सूत्रकृतांग (1/8/6)

अभयदान ही सर्वश्रेष्ठ दान है।

The promise of protection of life is the best of charity.

वेराइं कुव्वई वेरी, तओ वेरेहिं रज्जती।

–सूत्रकृतांग (1/8/7)

वैरवृत्ति वाला व्यक्ति जब देखो तब वैर ही करता है। वह एक के बाद एक किए जाने वाले वैर से वैर को बढ़ाते रहने में ही आनन्द लेता है।

One with a disposition of enmity towards the others remains engrossed in the animus-thoughts. He revels in animosity.

साभार– प्राकृत मुक्तावली

अनुक्रमणिका



ऐसी वाणी बोलिये...	18
श्रीमद् भगवती सूत्र	21
श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र	22

THE PROCESS OF FREEDOM FROM BONDAGE	06
विभिन्न क्षेत्रों के शोकोद्गार	08
समतामय आचरण के 21 सूत्र	11
समभाव	16



पुरुषार्थ की महिमा	24
प्रतिपल स्मरणीय महासती सीता	35
आज की जीवनशैली खराब या अच्छी	39
आर्त्तध्यान क्यों होता है?	41
TRADITIONAL v/s MODERN LIFESTYLE: MAKING A CHOICE	43



गुरु की महिमा	14
ऐसे हमारे गुरु राम...	20
अमृत की एक बूंद	44

प्रत्याख्यान मार्गदर्शिका	25
विनय-10	31



चारित्रशील जीवन जानें	45
विविध श्रमणोपासक विशेषांक	46
गुरुचरण विहार	47

अहिंसा की खेती में सुखों की फसल उपजेगी

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

आज से ढाई हजार वर्ष पहले भगवान महावीर ने अहिंसा रूपी महान धर्म का उपदेश दिया था तथा अहिंसामय आचरण का रास्ता बताया था। महात्मा गांधी ने देश की स्वतंत्रता को प्राप्त करने में अहिंसा का प्रयोग किया। अहिंसा का मार्ग सर्वजनहिताय एवं सर्वजनसुखाय होता है। दूसरों को सुखी बनाओगे तो स्वयं भी सुखी बनोगे। दूसरों को दुःख देने से दुःख रूप परिणाम ही निकलेगा। याद रखें कि अहिंसा की खेती करने से सुखों की फसल उपजेगी।

कुएँ में या गुफा में अगर कोई आवाज लगावे कि तेरा बाप चोर है तो बताइए कि वापिस वहाँ से क्या प्रतिध्वनि फूटेगी? यही न कि तेरा बाप चोर है! तो जिसने जो कहा उसको उसका जवाब मिल गया। खोटा चिन्तन खोटा फल देगा। यह समझ लीजिए कि आपके साथ जो दूसरों का व्यवहार होता है, वह दूसरों का व्यवहार नहीं अपितु आपके अपने ही व्यवहार की अनुकृति होती है। भूल से उसे आप सामने वाले का व्यवहार समझ क्रोधित होते हैं या बदला लेने की बात सोचते हैं। इस सम्बन्ध में सही तरीके से सोचेंगे तो आपको स्पष्ट हो जाएगा कि यह आपकी ही किसी पहले की अशुभ करनी का यानी कि हिंसक वृत्ति का कुफल है। अतः सही तरीका यही है कि दूसरे को बुरे लगने वाले व्यवहार का अनुभव लेकर अपने ही व्यवहार को सुधारने तथा मधुर बनाने का प्रयास करना चाहिए। कवि ने इसे दर्पण का दृष्टान्त देकर समझाया है।

जोड़ोगे हाथ दर्पण को तो दर्पण भी जोड़ेगा।

चांटा दिखाओगे उसे तो वह भी चांटा दिखाएगा।।

जैसा करोगे वैसा ही फल आगे आएगा...

साभार- नानेशवाणी-26



डॉ. कोठारी का प्रश्न

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

डॉ. कोठारी ने प्रश्न किया- कुछ संत भगवन्त, जहाँ गोचरी की व्यवस्था नहीं हो पाती, वहाँ डब्बे लाने का कहते हैं। हमें क्या करना चाहिए? उत्तर- भगवान महावीर ने फरमाया है कि उनका शासन इक्कीस हजार वर्षों तक चलेगा। इसका अर्थ है साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका उतने समय तक अवश्य रहेंगे। साधु और श्रावक का लक्ष्य एक ही है, पर सामर्थ्य की न्यूनधिकता से ब्रतों की पालना में अन्तर है। श्रावक स्वयं के लिए भोजन बनाता भी है, बनवा भी सकता है, पर साधु न स्वयं खाना पकाते हैं और न दूसरों से पकवाते हैं। यदि उसे ज्ञात हो जाए कि अमुक गृहस्थ ने उसके लिए खाना बना दिया है तो वे उसे स्वीकार ही नहीं करते। शास्त्र कहता है कि साधु दस-बीस या सौ घरों से गोचरी लाया हो तो उस विपुल आहार में उसके निमित्त बने हुए भोजन का यदि थोड़ा-सा अंश भी मिल गया हो तो साधु को वह सारा खाना परठ देना चाहिए, उसे खाना नहीं चाहिए। जैसे शरीर के लिए विष घातक होता है, वैसे ही साधु के लिए बना हुआ भोजन संयम विघातक होता है। इसलिए उसे परठने (फेंक देने) का आदेश है। उसे खाना नहीं चाहिए। यदि भूखे भी रहना पड़े तो रहें। **श्री भगवती सूत्र में भगवान महावीर फरमाते हैं कि आधाकर्मों-साधु के लिए बनाया हुआ आहार यदि साधु करता है तो वह अल्प स्थिति वाले कर्मों को दीर्घ स्थिति वाला, अल्पप्रदेश वाले कर्मों को बहुप्रदेशी एवं मंद रस वाले कर्मों को तीव्र रस वाला बनाता है तथा बार-बार असाता वेदनीय कर्मों का बन्ध करता है। वह मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता है।** इस प्रकार से विचार करने पर स्पष्ट होता है कि संत-भगवन्तों को डब्बे का निर्देश नहीं देना चाहिए। उन्होंने पूछा-हमें क्या करना चाहिए? संत न डब्बा लाने का कह सकता है, न ही ले जाने का। ले जाने का कहने से वे स्वयं के दोष के भागी होते हैं। नहीं ले जाने का कहने से दूसरों को अन्तराय का प्रसंग बन सकता है। क्या करना? यह आपको ही निर्णय करना है। भगवान की आज्ञा का काम नहीं है, इतना कह सकते हैं।

27.5.2016, ज्ये.कृ.-5 शुक्रवार

साभार- आरोह



THE PROCESS OF FREEDOM FROM BONDAGE

Golden Glimpses of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.S.

Under the "Achar Vishuddhi Mahotsav" the english translated series of "Pujya Hukmesh" is presented below to make the readers aware about the life of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.SA.

Continued from 15-16 May 2022-

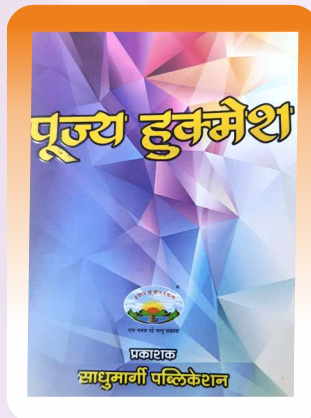
Dear children! The whole family started the preparations for Hukmichand's engagement but destiny had some other plans. The plan was to free this child from the bondage of this world and get him entrapped in the world of vairagya. The child who came into this world to disseminate the orders of Dev Jinendra to every human being and self-benefit is somehow stuck in this world of sins.

At last, destiny won and the driving force was Shri Lalchand Ji M.Sa. When Hukmichand came to know that Pujya Shri Lalchandji M.Sa. of Kota Gachchh was in Boondi, he finished his business work and immediately reached there to listen to Pujya Shri's discourses with full gratitude.

Pujya Shri Lalchand Ji M.Sa with his eloquent voice drenched with dazzling dispassion said- "O grandiose! The radiance that you feel in this rare male body, the cornerstone of all this radiance is the primary manpower (वीर्य) which is worshiped among the seven metals. This power is generated from our food. The nutritious

food we eat for 40 days makes two pounds of blood. Out of that two pounds of blood, two drops of manpower (वीर्य) are formed. Just as a more powerful cell in the battery gives more intense light, similarly, the more the manpower (वीर्य) is preserved, the more radiance is reflected through the body. One who elevates this power by conserving it more and more through the practice of celibacy, can one day transform the soul into a divine form, earning the power to conquer the whole universe. That is why the Tirthankars have told 'तवेसु वा उत्तमं बंधचेरं', that is, celibacy is highest among all forms of religious austerities."

Pujya Shri Ji presented biographies of various great men such as Jambu Kumar etc. in such a poignant manner that as soon as Hukmichand listened, the seed of vairagya sprouted in his fertile mind at the reception of rainwater in the form of the voice of Vitrag. As soon as the discourse got over, others got up and went to their respective places as per the routine, but Hukmichand got up and went straight to the feet of the Pujya Shri, bowed his head, and



requested- “Bhagwan! Today you have awakened my dormant consciousness. Now my conscience which is disturbed by the pleasures of this world wants to take restraint (संयम) at your feet. Therefore, I wish to take the resolution (vow) to practice complete celibacy. Also, give me such a blessing so that I can eagerly get permission from my parents and make my life meaningful by taking restraint (संयम) and start living an ascetic life. I am determined to follow you on this path”

Then Pujya Shri said- “अहासुहं देवानुप्पिया मा पडिबंधं करेह”. After receiving blessings in the form of this auspicious message from Pujya Shri, determined Hukmichand left from Bundi towards Tadaraisingh. Today, he was feeling so ecstatic that it was as if he had received the greatest treasure.

INNER VOICE

Dear children! Young Hukmichand with his resolute mind reached his home. On the other hand, the father and the family were waiting with a gaiety that when would Hukmichand come back from Bundi and when would he get engaged?

As soon as Hukmichand set foot in the house, Honourable Ratanchand Ji started saying in the language of mixed rebuke - “Son! In what work were you occupied in Bundi that it has been two days while waiting for you to come back... Well now, take a quick bath, wear good clothes and welcome the visiting guests. They have been sitting here waiting to see you for two days.” After

listening to the words of the father, it didn't take long for Hukm to understand the entire situation.

He understood that they are trying to get him engaged, tie him in shackles of marriage, and hold him captive in this world of sins like a prisoner. At the same time, he had already taken a vow to worship celibacy and had returned only to take permission from his parents to free himself from the bondage of the world and live like a saint at the feet of his guru.

Hukmichand didn't know what to tell his parents in such an environment. With such thoughts in mind, he became skeptical. But at the same time, his inner voice warned him and said - “Oh Hukm! Why are you uncertain about such a small thing? Recall what promise you made to Gurudev. Will you get distracted and forget the significance of this saying from Agam- ‘वंतं इच्छसि आवेऊं’?

If this happens, will you be not counted with crows and dogs? Oh, Hukm! After taking such a heroic vow (of celibacy), don't be a coward anymore. Explicitly tell everyone about the vow you have taken; such as a lion does not change its path, the teeth that come out of an elephant never go back in, and the sun never changes its direction, in the same way, you will not deviate from this resolution in any situation. Even if these things change their direction under some circumstances, you will still never change your decision.”

Continued...



विभिन्न क्षेत्रों के शोकोद्गार

गतांक 15-16 मई 2022 से आगे...

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री श्रीलालजी म.सा. का आषाढ शुक्ला 3 शनिवार संवत् 1977 को देवलोकगमन हो जाने से श्रावक समाज में शोक व गुरु से विरह की उदासीन लहर व्याप्त हो गई। सुदूर क्षेत्रों से जो व्यक्ति अपनी प्रत्यक्ष उपस्थिति देने में असमर्थ थे उन्होंने परोक्ष रूप से अपने-अपने स्थानों पर श्रद्धांजलि सभा रखकर आचार्य प्रवर को भावांजलि दी, जिनके कुछ भावोद्गार आप लोगों के समक्ष हैं-

लींबड़ी में पूज्य महाराजश्री का आगमन वैशाख शुक्ला 6 गुरुवार संवत् 1967 को 21 ठाणों से हुआ तब वे वहाँ के हाईस्कूल में ठहरे थे। उनके व्याख्यान में वहाँ के ठाकुर साहब प्रतिदिन उपस्थित होते थे। ऑफिस आदि जाने वाले लोग व्याख्यान का लाभ ले सकें इसलिए कोर्ट आदि का मॉर्निंग टाईम बदल दिया गया था, जिससे ऑफिस एवं ग्राम के अन्य इच्छुक समुदायों का जमाव खूब होता था। पूज्यश्री के व्याख्यान की शैली अत्यन्त आकर्षक, शास्त्रानुसार और देश, काल की वर्तमान भावनाओं की पोषक थी। उनकी प्रकृति अत्यन्त सरल और निर्मल थी। प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति सत्संग श्रवण का लाभ लेते थे और व्याख्यान में अनेक प्राचीन कवियों के काव्य, सुमधुर कंठ से शिष्यवर्ग के साथ इस तरह घोषित करते थे कि श्रोताओं पर गजब असर पड़ता था। मारवाड़ की वीरभूमि के इतिहास के दृष्टान्त और उन पर सिद्धान्तों की ऐसी मजेदार घटनाएँ सुनाते थे कि श्रोतागण रस में निमग्न बन जाते थे। व्याख्यान से उठने की इच्छा तो होती ही नहीं थी, क्योंकि गुरुदेव मधुर शैली में बुलन्द आवाज द्वारा श्रोताओं को सम्हालते रहते थे। उस समय यहाँ पण्डितराज बहुसूत्री स्वर्गस्थ महाराज श्री उत्तमचंदजी स्वामी अपने समुदाय सहित विराजते थे और वे भी व्याख्यान में हमेशा पधारते थे। उनके तथा अन्य श्रावकों के मुँह से यह सब तारीफ मैंने सुनी है तथा आचार्यदेव की वाणी की महिमा तो मैंने कईयों के मुँह से सुनी है।

पूज्यश्री जो कथन श्रोताओं के समक्ष प्रकट करते थे उसे श्रोता अपने हृदय में सत्य के सदृश स्वीकार करते थे और उस सत्य पर उनकी अचल श्रद्धा और दृढ़ प्रीति के

कारण ही वे श्रोताओं पर ऐसा उत्तम प्रभाव स्थापित कर सके थे। शास्त्रों में फरमाई हुई आज्ञाओं का वे असाधारण धैर्य और दृढ़ श्रद्धापूर्वक पालन करते थे।

जैन समाज का एक कोहिनूर अदृश्य हो गया है। चारित्र के हिमायती दो महात्मा काठियावाड़ में जन्मे हुए श्री गुलाबचन्द्रजी और राजपूताने में जन्मे हुए श्रीलालजी, दोनों ही अदृश्य हो गए हैं। दूसरे बहुत-से मुनि शुद्ध चारित्री हैं, व्याकरण, न्याय के ज्ञाता भी हैं, परन्तु गुलाब और श्रीलाल दो पुष्प अनोखे ही थे। एक में सत्य के लिए क्रोध (नोबल इण्डीगनेशन) और दूसरे में आत्मगौरव में से स्वाभाविक उत्पन्न हुआ गूंगा मान दृष्टिगत होता था। ये तो मूल्य बढ़ाने वाले तत्त्व थे। अप्रशस्त क्रोध और अप्रशस्त मान से ये बिलकुल भिन्न वस्तुएँ थीं। क्षत्रिय में और संघ के नायक में प्रशस्त क्रोध और प्रशस्त मान आवश्यक है और यह तो उनकी उज्वलता का सबूत है।

हम जैन धर्म के स्तम्भ, आचार्य प्रवर, विद्वान् मंडली के रत्न, क्षमा के भूषण, दया के सागर, शान्ति के उपासक, धर्मप्रेमी, निर्भीक, स्पष्टवादी, दिवा-रात्रि जैन धर्म का प्रचार करने वाले परमपद प्राप्त पूज्यश्री श्रीलालजी म.सा. के आषाढ शुक्ला 3 शनिवार संवत् 1977 को जयतारण शहर राजपूताना में स्वर्गारोहण का समाचार सुनते ही सब हतप्रभ हो गए।

यह दिवस जैन धर्म के इतिहास में काले अक्षरों में लिखा जाएगा। जिस बात की कुछ संभावना न थी, वही आँखों के सामने घटित हो गई। समस्त प्राणी जगत् जैन-जैनेत्तर को अथाह शोक-सागर में निमग्न कर उस दिन निष्ठुर काल ने स्थानकवासी जैन-वाटिका में वज्रपात

करके प्रस्फुटित और दिगन्त तक सौरभ विकीर्ण करने वाले सुमन को उसकी गौरवशालिनी लता की गोद में से उठा लिया। देखते ही देखते बिना किसी के दिल में पूर्व में इस बात का ख्याल भी आए और बिना किसी महान कष्ट के 51 वर्ष तक औदारिक शरीर की झोंपड़ी में रहकर अपने सुकृत्यमय जीवन में महाशुभ कर्मवर्गणाओं का बंध कर तैजस् और कार्मण शरीर को लिए हुए किसी वैक्रिय शुभ शरीर में दीर्घकाल के लिए स्थायी हो गए।

एक माह ही हुआ होगा कि अभी पंजाब प्रान्त के लाहौर नगर में अनेक गुणों के धारक जैन मुनि श्री शादीरामजी महाराज और दूसरे जैन नवयुवक पण्डित मुनि श्री कालूरामजी महाराज का जो सियालकोट में स्वर्गवास हुआ उसको तो हम भूल भी न पाए थे कि इतने ही में जैन धर्म के प्रचारक कार्यकर्ता और माननीय स्तम्भ का दुःखदायी समाचार एकाएक सुनते ही हमें लोकोक्ति **“फलक तूने इतना हँसाया न था कि जिसके बदले यों रुलाने लगा”** याद आती है।

आज वे पूज्यवर श्रीलालजी, जिनका नाम सोने में सुगन्ध की कहावत चरितार्थ करता था, हमारे बीच नहीं हैं। यदि शेष है तो वह है उन्होंने जैन धर्म की जो रक्षा, सेवा और अभिवृद्धि के लिए अपने जीवन को लगा दिया। मृत्युशय्या पर पड़े हुए भी प्राणप्रिय धर्म की हितकामना के उच्च विचार जिनके मस्तिष्क में घूमते रहे, जो दीन-दुःखियों के अकारण बंधु थे, जिनके पतन पर एक और शोक की कालनिशा, दुःख की तरंगें तथा हृदय विदारक हाहाकार ध्वनि और दूसरी तरफ समस्त नर-नारी, बूढ़े-बड़े और सर्वसाधारण के मुँह से यशःसौरभ का नाद चारों ओर गूँज रहा है। उनका देह और प्राण चिरकाल के लिए छुप जाने पर भी वे चिरंजीवी हैं। उनकी मृत्यु किसी प्रकार भी हो नहीं सकती। यमराज का शासन दण्ड उनकी विमल कीर्ति की अभेद्य चट्टान से टकराकर कुंठित हो जाता है, टुकड़े-टुकड़े होकर गिर जाता है। मनुष्य चक्षु से अगोचर रहने पर भी उनकी पूजनीय आत्मा बराबर विचरण करती रहती है। मरने के बाद भी उनके पवित्र और आदर्श जीवन पर मनन करने वालों के जीवन को पवित्र और उच्च करने का महान उपकार करता रहता है।

कार्यालय ने इस शोक संवाद को हर एक के कानों तक पहुँचाया। हमने अपने भाइयों से आशा की थी कि ज्योंही वे इस शोक समाचार को सुनेंगे अपने-अपने वहाँ शोकसभाएँ करेंगे तथा एक बड़ी भारी सभा संगठित करके वे **“श्रीलाल जैन फण्ड”** की स्थापना करेंगे।

उनका व्याख्यान जब तक होता रहता था तब तक इस दुःखमय संसार का भान ही भूल जाते और कोई दिव्यभूमि में बैठे हों, ऐसी सबके मन पर परमसुख और शांति की प्रतिछाया छाई रहती थी।

पूज्यश्री के दो मुख्य गुण थे जिन गुणों द्वारा जैन साधु या किसी भी पंथ या धर्म का त्यागी साधु अग्रेसर गिना जाता है, ये थे-

1. चैतन्य की स्वतंत्रता का सम्पूर्ण ज्ञान और
2. इस स्वतंत्रता के प्राप्त होने एवं विकसित होने के तादात्मक उपाय।

ये दोनों अलभ्य महान गुण आचार्यश्री के समागम वाले श्री वीर मार्ग के ज्ञाता जो-जो व्यक्ति हैं, सबको मालूम हैं। जैन साधु आत्मा में स्वगुण पैदा होने के लिए संयम ग्रहण करते हैं और वे इस महान विकट कार्य को परिपूर्ण करने के लिए सतत् परिश्रम करते हैं।

“मा हणो”, किसी जीव को मन, वचन और कर्म से दुःख मत दो, यह पूज्यश्री का अतिप्रिय और मुख्य उपदेश था। किसी जीव को तनिक भी दुःख होता देख या सुन वे मन में बड़े दुःखी होते थे और कभी-कभी उन्हें उनका वह दुःख सहन भी नहीं होता था।

संवत् 1967 में पूज्यश्री काठियावाड़ में विचर रहे थे। उस समय वर्षा न होने से भयंकर दुष्काल पड़ा। दया और क्षमा की मूर्ति के समान आचार्यश्री ने जब देखा कि बेचारे हजारों प्राणी सिर्फ घास के बिना मरण की शरण में जा रहे हैं तब उन्हें अत्यन्त दुःख हुआ। परिणाम स्वरूप आचार्यदेव ने दुष्काल पीड़ित दुःखी जानवरों की रक्षा के लिए शास्त्राधार से लाभ और पुण्य पर ऐसा सचोट उपदेश दिया कि उसके प्रभाव से श्रोतावर्ग में दया की उत्कृष्ट भावना उत्पन्न हुई और राजकोट जैसे छोटे शहर में एक ही दिन में तीस हजार रुपये इकट्ठे हो गए, जिनसे हजारों

श्रुमणोपासक

जानवरों को अभयदान मिला।

राजपूताना-मालवा इत्यादि में भी अनेक स्थानों पर गौरक्षा के लिए संस्थाएँ और ज्ञानशालाएँ मुख्यतः पूज्यश्री के सद्बोध से ही प्रारम्भ हुई हैं। इसी तरह छोटीसादड़ी वाले सद्गत सेठ श्री नाथूलालजी गोदावत ने बन्धुवत् सवा लाख रुपयों की उदारता प्रकट कर एक जैनाश्रम खुलवाया, वह भी पूज्यश्री के प्रभाव का ही सुफल था।

आचार्यश्री इतने अधिक प्रभावशाली, चारित्रवान और ज्ञानी थे कि प्रायः समस्त जैन मुनिराज उन्हें आचार्य के समान मान देते थे। उनकी सम्प्रदाय में 72 साधु मुनिराज विचरते थे। पूज्यश्री के महाप्रयाण के कारण युवाचार्य मुनि श्री जवाहरलालजी म.सा. अब आचार्य पद पर विराजित हुए, वे भी सर्वथा सुयोग्य हैं। स्थानकवासी जैन समाज के ऐसे महान पूज्य आचार्यश्री के निर्वाण से जैन समाज का एक अनमोल रत्न खो गया है।

साधु समाज के प्रमुख, शास्त्रसिद्धान्त के पारगामी, वीतराग आज्ञा का सभी साधुओं से पालन कराने वाले, जिनशासन की रक्षा करने में अडिग, साधुवृन्द में तनिक भी अपवित्रता दाखिल न हो जाए ऐसा पल-पल ध्यान रखने वाले, पवित्रता के पालक और समस्त दिन स्वाध्याय में लीन रहने वाले एक महात्मा थे आचार्यश्री। आपश्री की कमी तो साधु-समाज को हर क्षण खलेगी।

जैन समाज में समय अनुसार असरकारक, सचोट, शास्त्र, सिद्धान्त तथा नियमबद्ध ज्वलन्त उपदेश देने वाले महापुरुष महात्मा विरले ही होंगे और इसलिए जैन समाज के संसार व्यवहार को धर्म की दृष्टि से सुधारने को तत्पर उन जैसे संत की जैन समाज को बड़ी भारी क्षति हुई है। जिनका प्रताप, जिनकी वाणी, जिनकी शासन रक्षा, जिनका उपदेश, जिनका तप, जिनका उद्योत, जिनका उत्साह, ये सब उनमें एक साथ थे।

राजकोट में उन पर जैन और जैनेत्तर सबका ऐसा उत्तम प्रभाव रहा कि उनके स्वर्गवास से उन पर प्रेम प्रकट करने के लिए सिर्फ जैनियों ने ही नहीं अपितु आम जनता ने

15-16 जून, 2022

भी खेद प्रकट किया और हिन्दू, मुसलमान व्यापारियों ने तो आपश्रीजी के मान में व्यापार बन्द रख एक दिन धर्म-ध्यान में बिताया।

एक कवि की भाषा में- “अहिंसा इनके जीवन का मूल मंत्र था और जीवन में ताने-बाने की तरह फैल गया था। सत्य उनका मुद्रालेख था, तप उनका कवच था, ब्रह्मचर्य उनका सर्वस्व था, सहिष्णुता उनकी त्वचा थी, उत्साह उनका ध्वज था, अकूट क्षमा-बल जिनके हृदय पात्र या कमंडल में भरा था। सनातन योगी कुल का यह योग मालिक था। राग-द्वेष के झंझावातों से अलग, मेरे-तेरे के ममत्व-भाव से परे, सब जीवों के कल्याण के इच्छुक एवं सबके कल्याण हेतु सदा मशगूल रहते थे आचार्यदेव! महान धर्मगुरु, धर्माचार्य, शासन के शृंगार, परोपकारी, समर्थ वक्ता, समर्थ क्रियावान, कर्तव्यनिष्ठ को 51 वर्ष की अल्पवय में कालधर्म वश हो हमने एक अनुपम-अमूल्य आचार्य खोया है।”

शोक! शोक!! शोक!!!

प्रबल प्रतापी पूज्य अतिशय अमितधारी,
घोर ब्रह्मचारी उपकारी शिर सेहरो।
हुकममुनीश वंशभूषण 'विभूति लाल'
सत्तपशम संयमादि सर्वगुण गेहरो।
विक्रमीय संवत् उन्नीसौ सित्तर,
आषाढ शुक्ल तृतीया को पिछान आयु छेहरो।
ओदारिक देहगद् गेह, हेय जान हाय,
जाय-जय जाने धार्यो दिव्य देहरो॥2॥

जान जगत् बाल इन्द्रजाल को सौ खयाल,
जाने बालापन ही से मद-मोह को हटायो है।
सूरीश्वर हुकम वंश मांहि अवतंश समो,
जाको जश-बाद तम छहुंन में छायो है॥
दे दे उपदेश देश देशन में विशेष भांति,
भव्यों के हृदय में सुबोध बीज बोयो है।
स्वर्गीय जीवों की सुबोध देन काज राज जाय,
जयतारण जगतारण स्वर्ग सिधायो है॥3॥

-श्रीमज्जैन धर्मोपदेशा माधवमुनिजी म.सा.

साभार- अद्भुत योगी

-क्रमशः



समतामय आचरण के 21 सूत्र

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

ग्राम, नगर, समाज, राष्ट्र सभी के हितों की रक्षार्थ व समाज को सुदृढ़ व समतामय बनाने हेतु परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा. ने प्रत्येक व्यक्ति के धारण करने योग्य 21 सूत्र दिए हैं, जिन्हें यदि पूर्णतया आचरित किया जाए तो निश्चय ही एक विमल, स्वस्थ समाज का उदय होगा।



समतामय आचरण के अनेकानेक पहलू एवं रूप हो सकते हैं, किन्तु सारे तत्त्वों एवं परिस्थितियों को समन्वित करके उसके निचोड़ में इन 21 सूत्रों की रचना इस उद्देश्य से की गई है कि आचरण के पथ पर उन्हें पकड़ कर समता की गहन साधना आरंभ की जा सके। इन 21 सूत्रों में मनुष्य के अन्तर एवं बाहर के भावों व कार्यों का विश्व तक के व्यापक क्षेत्र में शांति एवं समता भरा तालमेल बिठाने का यत्न किया गया है। ये 21 सूत्र इस प्रकार हैं-

1. हिंसा का परित्याग
2. मिथ्या आचरण छोड़ें
3. चोरी और खयानत से दूर
4. ब्रह्मचर्य का मार्ग
5. तृष्णा घर अंकुश
6. चरित्र में दाग न लगे
7. अधिकारों का सदुपयोग
8. अनासक्त-भाव
9. सत्ता और सम्पत्ति साध्य नहीं

10. सादगी और सरलता
11. स्वाध्याय और चिन्तन
12. कुशीतियों का त्याग
13. व्यापार-शीघा और सच्चा
14. धनधान्य का शम-वितरण
15. नैतिकता से आध्यात्मिकता
16. सुधार का अहिंसक प्रयोग
17. गुण-कर्म से वर्गीकरण
18. भावात्मक एकता
19. जनतंत्र वास्तविक बने
20. ग्राम से विश्व धर्म
21. समता घर आधारित समाज

अब यहाँ इन 21 सूत्रों को सरल भाषा में संक्षिप्त टिप्पणी के साथ अंकित किया जा रहा है, जिन्हें पाठकों को अपने चिन्तन का विषय बनाना चाहिए।

सूत्र पहला : हिंसा का परित्याग- अनावश्यक हिंसा का परित्याग करना तथा आवश्यक हिंसा की अवस्था में भी भावना तो व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र आदि की रक्षा की रखना तथा विवशता से होने वाली हिंसा में लाचारी अनुभव करना, न कि प्रसन्नता।

समता साधक स्वहित की रक्षा में यदि उसे आवश्यक हिंसा करनी भी पड़े तब भी वह उस हिंसा का आचरण खेदपूर्वक ही करे तथा स्वहितों को परहित के लिए परित्याग करने की शुभ भावना का निर्माण करे, ताकि एक दिन वह पूर्ण अहिंसा का व्रत अंगीकार कर सके।

सूत्र दूसरा : मिथ्याचरण छोड़ें- झूठी साक्षी नहीं देना तथा स्त्री, पुरुष, पशु आदि के लिए भी न मिथ्या भाषण करना, न ही किसी रूप में मिथ्याचरण करना।

विषमता के फैलाव में झूठ का बहुत बड़ा योगदान होता है। अकेला झूठ ही सम तत्त्वों को विषम बना देता है। समता की लाठी सत्य होता है, तो झूठ अपने हर पहलू में विषमता की तीव्रता को बढ़ाता है।

सूत्र तीसरा : चोरी और खयानत से दूर- ताला तोड़कर, चाबी लगाकर या सेंध लगाकर वस्तु नहीं चुराना। दूसरों की अमानत में खयानत नहीं करना तथा चोरी के सभी उपायों से दूर रहना।

वर्तमान युग में अचौर्य व्रत को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। इसका संबंध श्रम-शोषण से है। एक मजदूर किसी मिल में मजदूरी करता है। वहाँ वह जो श्रम नियोजित करता है, एक तरह से वह श्रम यानी उसका उत्पादक मूल्य उस मिल के मालिक को अमानत रूप में मिलता है। अब यदि मालिक मजदूर के 10 रुपये प्रतिदिन के मूल्य की एवज में उसे 5 रुपये की ही बानगी देता है, तो यह इस नजरिये से अमानत में खयानत ही कहलाएगा। आज की जटिल आर्थिक व्यवस्था में **समता साधक** को चोरी के कई टेढ़े-मेढ़े तरीकों से बचना होगा।

सूत्र चौथा : ब्रह्मचर्य का मार्ग- परस्त्री का त्याग करना एवं स्वस्त्री के साथ भी ब्रह्मचर्य व्रत की अधिकाधिक अनुपालना करना तथा वासनाओं पर न सिर्फ कायिक, बल्कि वाचिक व मानसिक विजय की ओर आगे बढ़ना।

दुराचरण से दूर हटकर **समता-साधक** को अपने सदाचरण से आसपास के वातावरण से चारित्र शुद्धता की एक नई हवा बनानी चाहिए। इससे ब्रह्मचर्य संयम को बल देगा तथा संयम से समता का मार्ग प्रशस्त होगा।

सूत्र पाँचवाँ : तृष्णा पर अंकुश- स्वयं की सामर्थ्य के अतिरिक्त सभी दिशाओं में लेन-देन आदि समस्त व्यापारों का त्याग करना।

मनुष्य के स्वार्थ और तृष्णा पर अंकुश लगाना बहुत महत्वपूर्ण है। अपनी आवश्यकता के अनुसार तथा अपने श्रम से व्यक्ति यदि अर्जित करता है, तो वह अनावश्यक संग्रह के चक्कर में नहीं पड़ता है। उसका स्वार्थ जब इतनी सीमा से बाहर नहीं निकलता, तो वह घातक भी नहीं बनता है। अतः समता-साधक के व्यापार या धंधे का फैलाव इतना सीमित हो, जो उसके सामर्थ्य में हो तथा जितने कि उसे मूल में आवश्यकता हो।

सूत्र छठा : चरित्र में दाग न लगे- स्वयं के, परिवार के, समाज के एवं राष्ट्र आदि के चरित्र में दाग लगे, वैसा कोई भी कार्य नहीं करना।

व्यक्ति यदि स्वार्थ को सीमा में रखकर चल सके तो वह ऐसे कार्यों की उलझन में नहीं फंसेगा, जो स्वयं, परिवार, समाज अथवा राष्ट्र के चारित्र पर किसी भी रूप में कलंक की कालिमा पोते। एक **समता साधक** को अपने आचरण की सीमाएँ इस तरह रखनी होंगी कि जहाँ समस्त प्राणियों के हित की बात हो, परिवार हित के लिए वह स्वयं के हित का बलिदान करे। इसी तरह समाज के लिए परिवार के, राष्ट्र के लिए समाज के और मानव जाति के हितों के लिए राष्ट्रीय हितों का बलिदान करने को भी वह तैयार रहे। अपने-अपने स्तर पर चरित्र-रक्षा का यही क्रम होना चाहिए। किसी भी स्तर पर चरित्र संबंधी कलंक लगाने वाली हरकतों से तो समता साधक को बचना ही होगा।

सूत्र सातवाँ : अधिकारों का सदुपयोग- प्राप्त-अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करना तथा उनका व्यापक जनकल्याणार्थ सर्वत्र सदुपयोग करना।

समाज या राष्ट्र में अपनी योग्यता, प्रतिष्ठा आदि के बल पर कई व्यक्ति छोटे या बड़े पदों पर पहुँचते हैं, जहाँ उनके हाथ में अधिकारों का वर्चस्व आता है। **समता-साधक** का कर्तव्य होगा कि वह ऐसी स्थिति में उन प्राप्त अधिकारों का कतई दुरुपयोग न करे। यहाँ दुरुपयोग या सदुपयोग का अर्थ भी समझ लेना चाहिए। जो प्राप्त सार्वजनिक अधिकारों का अपने या अपने लोगों के स्वार्थों

श्रमणोपासक

की पूर्ति हेतु उपयोग करता है, वह उनका दुरुपयोग कहलाएगा। उन्हीं अधिकारों के सदुपयोग का अर्थ होगा कि उनका उपयोग सर्वत्र व्यापक जनकल्याण में आए जाए।

सूत्र आठवाँ : अनासक्त-भाव- सत्ता या अधिकार प्राप्ति के समय उनके अंधाधुंध प्रयोग की अपेक्षा तज्जन्य कर्तव्य-पालन के प्रति विशेष जागरूक रहना तथा प्राप्त सत्ता में आसक्त-भाव नहीं आने देना।

समता साधक के लिए यह आवश्यक है कि वह सम्पत्ति की ही तरह सत्ता में भी मूर्च्छा भाव यानी ममत्व दृष्टि पैदा न करे। अनासक्त भाव से सत्ता का प्रयोग किया जाए तो मनुष्य को पागल बना देने वाली सत्ता को भी समाज-राष्ट्र की सच्ची सेवा का शुद्ध साधन बनाया जा सकेगा।

सूत्र नौवाँ : सत्ता और सम्पत्ति साध्य नहीं- सत्ता और सम्पत्ति को मानव-सेवा का साधन मानना, न कि व्यक्ति जीवन का साध्य।

सत्ता और सम्पत्ति की शक्तियाँ समता-साधक के हाथों में मानव-सेवा की साधन रूप बनी रहनी चाहिए, सत्ता और सम्पत्ति यदि व्यक्ति के जीवन में साध्य रहे तथा सामाजिक सेवा का साधन रूप बन जाए तो समाज में इनके स्वस्थ वितरण की समस्या का भी सरल समाधान निकल आएगा। **समता साधक** को ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करने की दिशा में आगे बढ़ना होगा।

सूत्र दसवाँ : सादगी और सरलता- सादगी, सरलता एवं विनम्रता में विश्वास रखना तथा नए सामाजिक मूल्यों की रचना में सक्रिय बने रहना।

क्रान्ति न हठ है, न दुराग्रह है और न रक्तपात है। नए सामाजिक मूल्यों की रचना का नाम क्रान्ति है, जिसका क्रम सदा चलते रहना चाहिए, ताकि मूल्यों में विकारों का प्रवेश ही न हो सके। किन्तु समता-साधक जब क्रान्ति का बीड़ा उठाता है, तो उसमें सादगी, सरलता एवं विनम्रता की मात्रा भी बढ़ जाती है। जितनी अधिक साधना, उतनी

15-16 जून, 2022

ही अधिक सरलता। “अधिक सम्पन्नता, अधिक सादगी और अधिक विशिष्ट विकास तो अधिक विनम्रता” यह **समता साधक** का धर्म होना चाहिए।

सूत्र ग्यारहवाँ : स्वाध्याय और चिन्तन- चरित्र निर्माण की धारा में चलते हुए धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण पर बल देना तथा प्रतिदिन एक निर्धारित समय में स्वाध्याय एवं चिन्तन-मनन का क्रम नियमित बनाए रखना।

मनुष्य हर समय किसी न किसी कार्य में प्रवृत्त रहता ही है, किन्तु उसे यह देखने की फुरसत नहीं होती कि उसकी प्रवृत्ति उचित है अथवा अनुचित। इसकी जाँच-परख तभी हो सकती है, जब स्वस्थ एवं नैतिक संस्कार-निर्माण के साथ स्वाध्याय का नित-प्रति क्रम बने। स्वाध्याय के प्रकाश में अपने नित-प्रति के कार्यों की एक कसौटी तैयार होगी और उसके बाद जब चिन्तन-मनन का नियमित क्रम बनेगा, तो फिर समूचे कार्यों की गति उन्नायक दिशा की ओर ही मुड़ जाएगी।

सूत्र बारहवाँ : कुरीतियों का त्याग- सामाजिक कुरीतियों का त्याग करना तथा उनमें भी दहेज प्रथा को सख्ती से समाप्त करना।

जिस समाज में रूढ़ परम्पराओं एवं कुरीतियों का निर्वाह होता है, वह कभी भी जागृत समाज नहीं कहला सकता। वर्तमान समाज में जिस कदर कुरीतियाँ चल रही हैं, वे मानवता विरोधी बन गई हैं। दहेज प्रथा को ही लें, तो यह कितनी निकृष्ट है कि लड़के बेचे जाते हैं और उस पर गुरूर किया जाता है। एक **समता साधक** को स्वयं को न केवल ऐसी सारी कुरीतियों से मुक्ति लेनी होगी, बल्कि उनको समूल नष्ट करने के लिए उसे समाज के क्षेत्र में कड़ा संघर्ष भी छेड़ना होगा। समतामय स्थिति का निर्माण इस तथ्य पर निर्भर करेगा कि कितनी मजबूती से और कितनी जल्दी समाज को ऐसी कुरीतियों से मुक्त करके वहाँ मानवता-प्रसारिणी रीतियों का शुभारंभ किया जाता है?

सूत्र तेरहवाँ : व्यापार सीधा और सच्चा- वस्तु में मिलावट करके, कम ज्यादा तोल या माप कर अथवा

किसी भी अन्य प्रकार से धोखेपूर्वक नहीं बेचना तथा मायावी व्यापार से दूर रहना।

व्यापार सीधा और सच्चा रहे, तब तक तो वह समाज की सेवा का साधन बना रहेगा, किन्तु ज्यों ही उसे लोभ के दृष्टिकोण पर आधारित कर लिया जाएगा, तो वहीं भ्रष्टाचार एवं अत्याचार का कारण बन जाएगा। वर्तमान विश्व में आर्थिक साम्राज्यवाद का जो जटिल नागपाश दिखाई देता है, वह व्यापार की मिलावट, धोखाधड़ी और झूठबाजी से ही शुरु होता है। अतः **समता-साधक** का व्यापार सीधा और सच्चा बनें, यह जरूरी है।

सूत्र चौदहवाँ : धन-धान्य का सम-वितरण- व्यक्ति, समाज व राष्ट्र आदि की जिम्मेदारी के आवश्यक अनुपात के अतिरिक्त धन-धान्य पर निजी अधिकार नहीं रखना। अपने पास भी उचित आवश्यकता से अधिक धन-धान्य हो तो उसे ट्रस्ट के रूप में करके यथावश्यक सम्यक् वितरण में लगा देना।

इस कारण समता साधक को परिग्रह के ममत्व से दूर रहना होगा। एक ओर वह आवश्यकता से अधिक धन-धान्य एवं अन्य पदार्थों का संग्रह न करे, तो दूसरी ओर सम्पत्ति आदि भोग्य पदार्थों की न्यूनतम मर्यादाएँ भी ग्रहण करे। धन-धान्य आदि पदार्थों के सम-वितरण की समाज में जितनी सशक्त परिपाटी जितनी जल्दी कायम की जा सकेगी, उतनी ही श्रेष्ठता के साथ समता का भावनात्मक एवं क्रियात्मक प्रसार संभव हो सकेगा।

सूत्र पन्द्रहवाँ : नैतिकता से आध्यात्मिकता- नैतिक धरातल की पुष्टता के साथ सुघड़ आध्यात्मिक जीवन के निर्माणार्थ तदनु रूप सद्प्रवृत्तियों का अनुपालन करना।

समता साधक गृहस्थ धर्म में रहकर पहले नैतिक धरातल को पुष्ट बनाए और उस पुष्टि के साथ आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करे, ताकि वहाँ पर प्राभाविक रूप से नया वातावरण बना सके। यदि अपनी अर्जन प्रणाली, दिनचर्या या व्यवहार परिपाटी में नैतिकता नहीं समायी, तो भला वहाँ आध्यात्मिकता का विकास कैसे

किया जा सकेगा?

सूत्र सोलहवाँ : सुधार का अहिंसक प्रयोग- संयम की उत्तम मर्यादाओं एवं किसी भी प्रकार के अनुशासन को भंग करने वाले लोगों को अहिंसक असहयोग के उपाय से सुधारना, किन्तु द्वेष की भावना न लाना।

समता साधक अहिंसा को ऐसे सशक्त अस्त्र के रूप में तैयार करे एवं प्रयोग में लाए कि द्वेष तथा प्रतिशोध रहित होकर सर्वत्र सुधार के कार्यक्रम चलाए जा सकें। गांधीजी कहा करते थे कि वे भारत में अंग्रेजी राज के विरुद्ध हैं, अंग्रेजों के विरुद्ध नहीं और इसे वे अहिंसा की भावना बताते थे। वह भावना सही थी। “घृणा पाप से हो-पापी से कभी नहीं” - यह अहिंसा की सीख होती है।

सूत्र सत्रहवाँ : गुण-कर्म से वर्गीकरण- मानव जाति में गुण एवं कर्म के अनुसार वर्गीकरण में विश्वास रखते हुए किसी भी व्यक्ति से घृणा या द्वेष नहीं रखना।

किसी जाति या घर में जन्म ले लेने मात्र से ही कोई उच्च वर्ण का कहलाए और कोई शूद्र, तो इसे मानवीय व्यवस्था नहीं कहा जा सकता। जाति प्रथा एक रूढ़ प्रथा है। मानव समाज में जब समता के आदर्श को लेकर चलना है, तो समाज का वर्गीकरण रूढ़ प्रथाओं को आधार बनाकर नहीं किया जा सकता। व्यक्ति के अर्जित गुणों एवं कार्यों की उच्चता-नीचता की नींव पर जो वर्गीकरण खड़ा किया जाएगा, इसी कारण समता-साधक की मानव-जाति में गुण एवं कर्म से वर्गीकरण किये जाने में न सिर्फ दृढ़ आस्था ही होनी चाहिए, बल्कि ऐसे वर्गीकरण के लिए उसके समस्त प्रयास नियोजित होने चाहिए। ऐसे वर्गीकरण में व्यक्ति-व्यक्ति के साथ घृणा करे या द्वेष रखे इसकी संभावना ही कम हो जाएगी।

सूत्र अठारहवाँ : भावात्मक एकता- संपूर्ण मानव जाति की एकता के आदर्श को समक्ष रखते हुए समाज एवं राष्ट्र की भावात्मक एकता को बल देना तथा ऐसी एकता के लिए उत्कृष्ट चरित्र का निर्माण करना।

एकता का अर्थ शक्ति होता है। मन, वचन एवं कर्म

श्रमणोपासक

की एकता हो तो मनुष्य की मनुष्यता सशक्त बन जाती है। उसी तरह समाज और राष्ट्र में व्यक्तियों की परस्पर एकता की अनुभूति सजग बन जाए तो वह सम्पन्न एवं चारित्रशील समाज व राष्ट्र का निर्माण करती है।

समता-साधक को अपने अन्तर में हो या समाज-राष्ट्र के अन्तर में- भावात्मक एकता स्थापित करने के प्रयास करने चाहिए, क्योंकि भावात्मक एकता चिरस्थायी एवं शांति-प्रदायक होती है तथा समता को पुष्ट बनाती है।

सूत्र उन्नीसवाँ : जनतंत्र वास्तविक बने- राज्य की जनतंत्रीय प्रणाली का दुरुपयोग नहीं करना तथा जनशक्ति के उत्थान के साथ इसे वास्तविक एवं सार्थक बनाना।

जनतंत्र केवल एक राज्य प्रणाली नहीं है, अपितु एक जीवन-प्रणाली है। जीवन की मूल आवश्यकताओं की उपलब्धि के साथ प्रत्येक नागरिक विभिन्न स्वतंत्रताओं का संयमित रूप से उपभोग कर सके तथा अपने जीवन-विकास की स्वस्थ दिशाओं को खोज सके-यह जनतंत्रीय प्रणाली की विशेषता है। किन्तु सम्पन्न वर्ग अपने स्वार्थों के कारण ऐसी सर्वहितकारी प्रणाली का भी दुरुपयोग करने लग जाता है एवं उसे भ्रष्ट तथा विकृत बना देता है। अतः **समता-साधक** का कर्तव्य माना जाना चाहिए कि वह समाज में ऐसी प्रवृत्तियों का विरोध करे तथा उन्हें दूर करे, जो जनतंत्र का दुरुपयोग करने की कुचेष्टाएँ करती हैं।

सूत्र बीसवाँ : ग्राम से विश्वधर्म- प्रत्येक समता साधक ग्रामधर्म, नगरधर्म, समाजधर्म, राष्ट्रधर्म एवं

15-16 जून, 2022

विश्वधर्म की सुव्यवस्था के प्रति सतर्क रहे, तदन्तर्गत अपने कर्तव्यों का निर्वाह करे तथा तत्संबंधी नैतिक नियमों का पालन करे। इन धर्मों के सुचारु संचालन में कोई दुर्व्यवस्था पैदा नहीं करे तथा दुर्व्यवस्था पैदा करने या फैलाने वालों का किसी भी रूप में कोई सहयोग नहीं करे।

वह इन सभी विभिन्न समूहों के हितों के साथ अपने हितों का सुन्दर तालमेल बिठाए तथा जब भी आवश्यकता पड़े, वह स्वहित की यथास्थान बलि देकर भी सामूहिक हितों की रक्षा करे। इन सभी कर्तव्यों का आधारगत सार यही होगा।

सूत्र इक्कीसवाँ : समता पर आधारित समाज- समता के दार्शनिक एवं व्यावहारिक पहलुओं के आधार पर नए समाज की रचना एवं व्यवस्था में विश्वास रखना।

जहाँ कहीं साध्य या उद्देश्य की बात हो, वहाँ पूर्ण सतर्कता आवश्यक है। साध्य यह है कि जिस नए समाज की कल्पना है, वह पूर्णतया समता पर आधारित होना चाहिए। एक समता-साधक का इस दृष्टि में पूरा विश्वास भी होना चाहिए तथा पूरा पुरुषार्थ भी कि वह विषमताओं को हटाने के काम को अपना पहला काम समझे तथा प्रत्येक व्यक्ति, संगठन या समूह को स्वस्थ समता का आधार प्रदान करे।

इस प्रकार के 21 सूत्र समता-साधक को समूचे रूप में एक दिशा-निर्देश देते हैं कि वह अपने जीवन को व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन की समता हेतु समर्पित कर दे।

साभार- समता दर्शन और व्यवहार



सत्य (जवाहर वाणी)

- जिस विचार, बात और कार्य को निष्पक्ष भाव से अपनाएँ, जिसके पूर्ण रूप से हृदय में स्थित हो जाने पर भय, ग्लानि, अहंकार, मोह, दम्भ, ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ आदि कुत्सित भाव निःशेष हो जाएँ, जिसके होने पर आत्मा को वास्तविक शान्ति प्राप्त हो, उसी का नाम सत्य है।
- जिस विचार में संसार के किसी प्राणी को कष्ट देने की कल्पना न की गई हो, जिसके प्रकट कर देने पर किसी प्रकार की कुत्सित भावना का परिचय न मिले, वह मानसिक सत्य है।
- जिस वाणी में किसी को अनुचित कष्ट पहुँचाने योग्य बात न कही गई हो, जो बात जैसी देखी, सुनी, समझी है, उसको वैसे का वैसे समझाने को कही हो, वह वाचिक सत्य है।
- जिस कार्य के करने से संसार के किसी प्राणी का अहित न हो, हित ही हो, जो स्वार्थ, छल, दम्भ, ईर्ष्यादि से रहित हो, वह कायिक सत्य है।



समभाव

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

समभाव की परिभाषा क्या है? समभाव का मतलब यह नहीं है कि गुड़ और गोबर को एक ही समझा जाए। किसी ने

हमको गाली दी, हमारे साथ बुरा बर्ताव किया तो उस समय हमारे मन में उसका कोई प्रभाव नहीं होना चाहिए, चेहरे की रंगत नहीं बदलनी चाहिए। चेहरे की रंगत कब बदलती है? जब कोई बात भीतर में जाकर अपना प्रभाव दिखाती है तब चेहरे पर भी उसका प्रभाव आने लगता है। कोई कुछ भी कह दे चेहरे की रंगत नहीं बदलनी चाहिए। कोई भी बात अंदर में नहीं लगनी चाहिए। इसने मुझे ऐसा कह दिया, वैसा कह दिया, ऐसा कुछ भी नहीं होना चाहिए। कोई कितना भी बुरा बर्ताव कर रहा है तो भी हमारी ऐसी अनुभूति नहीं हो। हमें ऐसा कोई अनुभव नहीं होना चाहिए। कोई कितनी भी प्रशंसा कर रहा है तो भी ऐसा अनुभव नहीं करें कि अरे देखो, यह मेरी कितनी प्रशंसा कर रहा है। ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए। दोनों स्थितियों में अपने आपको एक समान रखना समभाव है।

कहते हैं कि एक व्यक्ति गुरु के पास गया। वहाँ जाकर उसने कहा कि गुरुदेव!

मुझे साधना का रहस्य जानना है।

क्या जानना है?

साधना का रहस्य जानना है।

गुरुजी ने कहा कि अभी मैं जल्दी में हूँ। थोड़ा काम करके आ जाऊँ फिर बात करते हैं। वह आदमी थोड़ी देर वहीं बैठा रहा। फिर गुरुजी ने कहा कि कुछ दूरी पर एक कब्रगाह है। उसमें से अमुक कब्र मेरे गुरु की है। वहाँ जाकर

तुम कुछ गालियाँ बक कर आओ। वह आदमी वहाँ गया और जाकर गालियाँ बक कर आया। उसके बाद गुरुजी ने कहा कि अभी थोड़ा-सा काम और बाकी है। तुम ऐसा करो एक बार और जाओ और इस बार उन्होंने एक गीत देते हुए कहा कि यह स्तुति वहाँ जाकर गाओ। उसने वहाँ जाकर उस गीत से स्तुति की। वापस आया और कहा कि मैंने वहाँ जाकर स्तुति कर ली है। अब उसने कहा कि गुरुदेव! मैं यहाँ साधना का रहस्य जानने आया था और आप मेरे से यह क्या करवा रहे हैं? उसके यह कहने पर गुरुजी ने कहा कि “मैंने बता दिया साधना का रहस्य।” उसने पूछा- कैसे बताया? गुरुजी ने कहा- मैंने तुमको पहले कब्रगाह पर भेजा था, जहाँ जाकर तुमने कब्र को गालियाँ दीं। दूसरी बाहर उसी कब्र पर जाकर तुमने स्तुति भी की। वहाँ से क्या तुम्हें कोई प्रत्युत्तर मिला? उसने कहा कि नहीं, कुछ भी नहीं मिला। पहली बार भी कुछ प्रत्युत्तर नहीं मिला और दूसरी बार भी कुछ नहीं मिला। गुरु ने कहा- यही साधना का रहस्य है। कोई कितनी भी गालियाँ बके, कोई कितना भी प्रतिकार करे, हमारे भीतर में उसको कोई जगह नहीं देनी चाहिए। कोई कितनी भी प्रशंसा करे तो भी भीतर में उसके लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। किसी के द्वारा प्रशंसा करने से तुम प्रशंसनीय नहीं हो जाओगे और किसी के द्वारा निन्दा करने से, किसी के द्वारा बुरे शब्दों का उच्चारण करने से तुम बुरे नहीं हो जाओगे। तुम जैसे हो वैसे ही रहोगे।

“अपने हाल में ही रहना, किसी के कहने से अपने भीतर में परिणमन नहीं होने देना समभाव है। समभाव की ऐसी स्थिति में जो अपने आपको ले आए उसका मोक्ष निश्चित है।” भले ही वह तपस्या कर पाए या नहीं कर पाए। समभाव की तपस्या मोक्ष में जाने के लिए बहुत है। अन्न

श्रुमणिपासक

को छोड़ना आसान है। असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, मावा, बादाम, मिठाइयाँ छोड़ने में ज्यादा कठिनाई की बात नहीं है किन्तु अपनी निन्दा में, अपनी प्रशंसा में एक समान बने रहना कठिन है। तराजू के एक पलड़े में पाँच किलो का बाट रखा हुआ है और दूसरे पलड़े में पाँच किलो सामान रखा हुआ है, तो बताओ कांटा बीच में रहेगा या इधर-उधर रहेगा? (सभा से प्रतिध्वनि- बीच में रहेगा।) देखो? आप भी बता रहे हो कि पलड़ा बीच में रहेगा। एक तरफ के पलड़े पर लोहे का बाट रखा हुआ है और दूसरी तरफ के पलड़े पर फल, मावा, मिष्ठानादि हैं तो कांटा किधर झुकेगा? दूसरी ओर। छोटे कांटे में सौ ग्राम का पत्थर एक तरफ रखा है तथा दूसरे पलड़े पर सौ ग्राम सोने की शिला है तो कांटा किस तरफ झुकेगा? (सभा से प्रतिध्वनि- बीच में रहेगा।) सोने की तरफ झुकेगा क्या? नहीं झुकेगा।

यह काम हमने बहुत बार किया होगा। हमने हजारों बार तौला होगा। बहुत से लोग होंगे, जिन्होंने हजारों बार

15-16 जून, 2022

कांटे को बराबर देखा होगा किन्तु हमने हमारे जीवन के कांटे को आज तक नहीं देखा। बोलो, बराबर देखा या नहीं देखा? किधर झुक रहा है, सोने की तरफ झुक रहा है या फिर सौ ग्राम पत्थर की तरफ झुक रहा है? जैसे कांटा सौ ग्राम सोने की तरफ नहीं झुकता वैसे ही हमें भी नहीं झुकना है। प्रशंसा की तरफ झुक रहा है या गालियों की तरफ झुक रहा है? किधर झुक रहा है? दोनों तरफ ही झुक रहा है। एक तरफ उलटा झुक रहा है और दूसरी तरफ? जब तक भीतर में समभाव नहीं आ पाएगा यह झुकाव चलता रहेगा। खाना खाना है तो किसलिए खाना है? समभाव की आराधना के लिए ही खाना है। तपस्या करनी है तो किसलिए करनी है? समभाव के लिए ही करनी है। चाहे एक नवकारसी करें, एक पौरसी करें, चाहे एक आयम्बिल भी करें तो भी हमारा लक्ष्य क्या होना चाहिए? समभाव का ही लक्ष्य होना चाहिए। अठाई-मासखमण आदि सबका लक्ष्य समभाव का होना चाहिए।

साभार- श्री राम उवाच-13

गुरु की महिमा

भक्ति रस

अमिता संचेती, नोखा

शब्द इतने हैं नहीं मेरी जुबान में
मैं क्या कहूँ उस कोहीनूर के सम्मान में।।टेर।।

जो गँवरा के हैं लाल, पिता नेमचन्द हैं
भूरा कुल में जन्मे छोड़ा मोहफन्द है,
चमके हैं भव्य भाल देशाणे की शान में।
मैं क्या कहूँ...।।1।।

चिन्तन तो बेमिशाल चले आगम की चाल हैं
सिंह-सी है गर्जना और साधना कमाल है,
ना इनके सम है कोई आज वर्तमान में।
मैं क्या कहूँ...।।4।।

आगमों में व्यस्त, ध्यान में जो मस्त हैं
संयम सुवास से सजा जीवन प्रशस्त है
सूर्य सम है चमके हुक्म आसमान में।
मैं क्या कहूँ...।।2।।

माता तो अहिंसा है, सत्य इनके तात हैं
अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और अचौर्य भ्रातृ है,
व्यसनों से मुक्त जग बने ये आह्वान है।
मैं क्या कहूँ...।।5।।

श्रुतज्ञान है अपार, मौन तप से प्यार है
पहनावा सादगी का लोच ही शृंगार है,
कथनी और करनी एक है इनके व्यवहार में।
मैं क्या कहूँ...।।3।।

वात्सल्य की है मूर्ति, कृपा के सिन्धु हैं
ये ज्ञान के हैं दरिया, हम दरिया के बिन्दु हैं,
बेजुबान भी कहे अपनी जुबान में।
मैं क्या कहूँ...।।6।।

ऐसी वाणी बोलिये...

गतांक 15-16 मई 2022 से आगे...

“ऐसी वाणी बोलिये” का धारावाहिक आपके समक्ष प्रतिमाह आ रहा है। प्रायः दैनिक व्यवहार के भाषाचार में हम कभी-कभी पीड़ाकारी वचनों का उपयोग कर लेते हैं। तीर्थंकर भगवन्तों ने इसका निषेध किया है। अतः हमें पीड़ाकारी सत्य के स्थान पर हित वचनों का उपयोग करना चाहिए। हित वचन पर कुछ ध्यातव्य बिन्दु इस प्रकार हैं-

- ★ ‘तमाओ ते तमं जंति, मंदा आरम्भनिस्सिया’ (श्री सूत्रकृतांग सूत्र 1/1/14)
पर पीड़ा में प्रमोद मनाने वाले अज्ञानी जीव अन्धकार की ओर ही जाते हैं।
- ★ ‘ण य अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खो’ (श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र 1/1)
हिंसा के कटु फल को भोगे बिना छुटकारा नहीं है।
- ★ सत्य वचन भी वही कहा जाता है जो हिंसा का पोषक, हिंसा का जनक अथवा किसी भी प्राणी को कष्टदायक न हो। जो वचन तथ्य (यथार्थ) तो हो किंतु हिंसात्मक हो वह सत्य की परिभाषा में परिगणित नहीं होता। अतः सत्यभाषी को अतथ्य के साथ-साथ तथ्य असत्य वचनों का भी त्याग करना आवश्यक है।
- ★ जाने-अनजाने में व्यक्ति कितने ही हिंसाकारी वचनों का प्रयोग करता रहता है। यथा :-
(A) नौकर-चाकर आदि के लिए कहना - ‘अरे उन्हें बैठा मत रखो, किसी न किसी काम में लगाए रखो, उन्हें धमकाया करो। रोज-रोज अच्छा खाना मत दिया करो, बासी-पुराना ही दिया करो, वरना वे बिगड़ जाएंगे।
(B) ‘मारो एक चांटा, तभी इसे अकल आएगी’ इस प्रकार बोल-बोलकर मार खिलवाना।
(C) किसी आतंकवादी (Terrorist) के विषय में सुनकर कहना ‘इसे फाँसी पर चढ़ा देना चाहिए।’

Note - फैसला करने वाली कोर्ट है, फिर हमें ऐसा बोलकर व्यर्थ में हिंसा का भागी क्यों बनना?

- (D) जानवरों के लिए कहना ‘इन्हें टाइट बांधो, लकड़ी से मारो, पत्थर से मारो।’ ‘अरे तुम सुअर को क्यों खिलाते हो, खिलाना है तो गाय को खिलाओ।’ जंगल में शेर बढ़ने की खबर सुनकर कहना- ‘अरे इन्हें गोली से उड़ा देना चाहिए।’

Note - सुअर को लोग मारकर अथवा गरम पानी डालकर भगा देते हैं, पर खाने का सामान होते हुए भी नहीं देते। किसी जीव की योनि कैसी भी हो, वह समान रूप से दया का पात्र है।

- (E) साँप-नेवले की, मुर्गी-मुर्गी की, बिल्ली-बिल्ली की लड़ाई देखते हुए अथवा टी.वी. सीरियल में लड़ाई देखते हुए बार-बार कहना ‘मार-मार और जोर से, पीछे आ पीछे, शाबास क्या मुक्का मारा?’

Note - तंदुल मच्छ का जीव केवल मन से हिंसा का विचार करके सातवीं नरक का बंध कर लेता है फिर मन और वचन दोनों से हिंसा करने पर कैसा बंध होता होगा?

- (F) ‘इतने पैसे वाले होकर पुराने घर में रहते हो, इस घर को तुड़वाकर नया बंगला बनवाओ, उसमें बगीचा लगवाओ, घास को नई आकृति में कटवाओ आदि’ कह-कहकर उकसाना।’
- (G) ‘मच्छर बहुत हो रहे हैं काँइल जलाओ, चूहे मारने की, काँकरोच मारने की दवाई छिड़को।’
- (H) किसी को कष्ट पहुँचाने के लिए ‘तंत्र-मंत्र’ करवाने की सलाह देना।
- (I) आप इतने सम्पन्न होकर उत्क्रांति से शादी कर रहे हो, अरे आप जैसों को तो शानदार शादी करनी चाहिए। ऐसा बोलकर

सेठों की मति भ्रष्ट करना।

सही तरीका - 'ये बहुत अच्छी बात है कि आप इतने सम्पन्न होते हुए भी उत्क्रांति के नियमों का पालन कर रहे हैं, आपके निमित्त से कितनों को प्रेरणा मिलेगी।

- (J) 'हवन कराओ, रात्रि जागरण कराओ, भक्ति संध्या रचाओ तभी माहौल बनेगा। आने वाले मेहमानों को भी आनंद आएगा' इस प्रकार प्रेरणा देकर आरंभ बढ़ाना।
- (K) किसी युवा को यों कहकर उकसाना- 'क्या 60 की स्पीड में कार चलाता है 120 की स्पीड में चला, मजा आएगा।
- (L) गर्भपात (Abortion) की सलाह देना।

(सुबुद्धि प्रधान ने तो हिंसा का अनुमोदन भी नहीं किया था)

जितशत्रु राजा और सुबुद्धि प्रधान

कम्पा नगरी के राजा जितशत्रु और उनका मंत्री सुबुद्धि प्रधान (एक श्रमणोपासक) एक दिन भोजन के लिए साथ बैठे। भोजन के बाद राजा ने भोजन की खूब प्रशंसा की। पास में बैठे सभी ने उनकी बात का समर्थन करते हुए कहा-स्वामिन्! आप ठीक कहते हैं। बात वैसी ही है। सुबुद्धि ने भी भोजन किया था, परंतु वह मौन रहा। राजा ने उन्हें मौन देखकर बार-बार पूछा, तब उसे बोलना ही पड़ा। परंतु वह सम्यक् दृष्टि श्रावक था। अतएव उसकी विचारणा अन्य जनों से भिन्न थी। वह तत्त्व का जानकार था। अतः उसने राजा के कथन का अनुमोदन नहीं किया, बल्कि साहसपूर्वक सच्चाई का कथन किया कि 'स्वामिन्! इस स्वादिष्ट भोजन के विषय में मेरे मन में किंचित् भी विस्मय (आश्चर्य) नहीं है। पुद्गलों के परिणमन अनेक प्रकार के होते रहते हैं। शुभ प्रतीत होने वाले पुद्गल निमित्त पाकर अशुभ प्रतीत होने लगते हैं और अशुभ पुद्गल शुभ रूप में परिणत हो जाते हैं। पुद्गल तो पुद्गल ही है, उसमें शुभत्व अशुभत्व का आरोप हमारी राग-द्वेषमयी बुद्धि करती है। अतएव मुझे इस प्रकार के परिणमन आश्चर्यजनक प्रतीत नहीं होते। (राजा ने सुबुद्धि के कथन का आदर नहीं किया और वो चुप रहा)।

कुछ दिन बाद राजा और सुबुद्धि एक खाई के पास से गुजरे, जिसका पानी सड़े-गले मृत कलेवरों की दुर्गंध से भी अधिक दुर्गंध वाला था। राजा ने अपना नाक, मुँह ढक लिया और नाले की दुर्गंध का वर्णन करने लगा। साथियों ने भी उनका समर्थन किया, परंतु सुबुद्धि ने पूर्व के समान मौन धारण कर लिया। जब उसे राजा ने पुनः-पुनः पूछा, तब भी उसने पूर्व की तरह ही सत्य कथन किया। परंतु राजा के कथन का समर्थन नहीं किया। इस पर राजा बोला- "देवानुप्रिय! तुम दुराग्रह करके अपने को और दूसरे को भ्रम में मत डालो।" ऐसा सुनकर सुबुद्धि ने राजा को कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि उसके मन में राजा के प्रति दया आई। उसने विचार किया अहो! राजा सत्य को, तत्त्व के स्वरूप को, भगवान के द्वारा प्ररूपित भावों को नहीं जानता, नहीं मानता है। अतएव मेरे लिए यही श्रेयस्कर होगा कि मैं राजा को सत्य तत्त्व समझाऊँ और इस बात को अंगीकार करवाऊँ। फिर सुबुद्धि ने उसी खाई के पानी को मंगवाकर उसे अनेकानेक विधियों के द्वारा एकदम स्वच्छ सुगन्धित किया और उसे राजा को पिलाया। पीने के बाद सुबुद्धि ने स्पष्ट किया कि स्वामिन्! यह उसी खाई का पानी है, जो आपको अत्यंत अमनोज्ञ प्रतीत हुआ था। राजा ने पुनः Practical करके देखा और जब उन्हें विश्वास हुआ तब राजा बोला- "तुम्हारी बात बिल्कुल सही है, पर यह तुमने कहाँ से जाना?" सुबुद्धि ने कहा- 'भगवान की वाणी से' और फिर जितशत्रु राजा ने धर्म को सुना, सुनकर वह भी श्रावक बन गया। कुछ सालों बाद उन दोनों ने संयम अंगीकार किया और उसी भव में सिद्ध हो गए। एक श्रावक के वचनों से, आचरण से प्रभावित होकर राजा का जीवन धन्य हो गया। सुबुद्धि ने राजा को खुश करने के लिए पुद्गल प्रशंसा, निंदा के विषय में हाँ में हाँ नहीं मिलाया, न उसे स्वीकार किया अपितु उनका तरीका सभ्य और शालीन था। वह उग्र नहीं हुआ, उसने बहस नहीं की। वह शांत रहा और Practical करके समझा भी दिया। यह कला श्रावक में होनी चाहिए।

Note - अधिक विस्तार के लिए देखें- श्री ज्ञाता धर्मकथांग सूत्र 12वां अध्ययन।

- ★ अनेकानेक लोग, बिना प्रयोजन अथवा बिना किसी के पूछे, स्वतः अपने मन से पाप (हिंसा) का परामर्श करते हैं, वे ये नहीं सोचते कि मेरी प्रेरणा कितने जीवों के लिए दुःखदायी होगी।
 - ★ श्रावक को जीव/अजीव/हिंसा/अहिंसा आदि का जानकार होना चाहिए। तभी तो वो हिंसा से बचने व बचाने का प्रयास करेगा।
- (M) सामायिक, संवर, पौषध आदि में रहते हुए हिंसा का उपदेश देना- 'लाइट बुझा दो, पंखा चला दो, गेट बंद कर दो... आदि कहना।

प्रेरक प्रसंग

राजनांदगाँव के श्रावक इंद्रचंद्रजी बैद के घर Income Tax का छापा पड़ गया। उस समय वे 5 सामायिक लेकर बैठे थे। आने वाले आदमियों ने उनके घर का सामान निकाल-निकाल कर इधर-उधर फेंक दिया, परन्तु उन्होंने आँख उठाकर भी नहीं देखा। जब वे ऑफिसर उनसे फाइलें मांगने आए, तब उन्होंने कह दिया- 'मेरे अभी सामायिक है, मैं अभी इस विषय में कुछ भी नहीं बता सकता।' जब एक श्रावक ऐसी परिस्थिति में भी अपनी वाणी पर संयम रख सकता है, तो सामान्य अवस्था में व्रत ग्रहण करने वाले श्रावक-श्राविक अपनी वाणी पर संयम क्यों नहीं रख सकते।

-क्रमशः



भक्ति रस

ऐसे हमारे गुरु राम...

-श्रेया गांधी, जावद

जिसने किया एक नवयुग का निर्माण,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

समता शाखा से धर्म-ध्यान को किया और गतिमान,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

“आध्यात्मिक ज्योति” से हो जिनकी पहचान,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

उत्क्रान्ति से परिवारों को दिया एक नया पैगाम,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

चालीसा बोले हमेशा जिनकी हम सांस,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

चारों तीर्थों का जो है अभिमान,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

व्यसनमुक्ति का दिया जिसने पैगाम,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

एक पिता की तरह ख्याल रखे सबका एक समान,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

जिनका सन्देश अनुशासन से हो सर्वप्रथम हर काम,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

जिनके वचनों से मंत्रमुग्ध हो जाए हर इंसान,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

जिनके उपदेशों से जाग उठा जग तमाम,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

जिनकी वाणी से ही वैराग्य आ जाए और हो दीक्षा लेने का भान,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

जिनके आह्वान से युवा भी संभालने लगे अब संघ की कमान,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

संघ को रोशन कर रहे भानु समान,
ऐसे हमारे गुरु राम॥

श्रीमद् भगवतीसूत्र

गतांक 15-16 मई 2022 अंक से आगे...

संकलनकर्ता- कंचन काँकरिया, कोलकाता

आशीविष श. 8 उ. 2

पूर्वापर संबंध- प्रकारांतर से पुद्गल परिणाम को ही प्ररूपित करने के लिए आशीविष का वर्णन किया जा रहा है। इस प्रकार दोनों उद्देशकों का परस्पर संबंध है।

प्र. 2294 ग्रंथों में कर्म-आशीविष लब्धि के संबंध में क्या कहा गया है ?

उत्तर 1. तिलोयपण्णत्ति नामक दिगम्बर ग्रंथ के अनुसार इस लब्धि वाला 'मर जाओ' इस प्रकार का वचन प्रयोग करता है तो व्यक्ति मर जाता है।
2. अकलंकाचार्य के अनुसार कर्म-आशीविष लब्धि वाला मरण का श्राप देता है तो अभिशप्त व्यक्ति के पूरे शरीर में विष व्याप्त हो जाता है।

प्र. 2295 कर्म-आशीविष की प्राप्ति कैसे होती है ?

उत्तर 5 पर्याप्त संज्ञी तिर्यच और 15 कर्मभूमि के पर्याप्त मनुष्य को तपस्या आदि से अथवा अन्य कोई गुणों से आशीविष लब्धि उत्पन्न हो जाती है।

प्र. 2296 क्या देवों में कर्म-आशीविष होता है ?

उत्तर भवनपति से आठवें देवलोक तक के अपर्याप्त देवों में आशीविष लब्धि होती है।

प्र. 2297 अपर्याप्त देवों में आशीविष लब्धि क्यों मानी जाती है ?

उत्तर जिन देवों ने पूर्वभव में आशीविष लब्धि का प्रयोग किया था, वे देव अपर्याप्त अवस्था तक इस लब्धि से युक्त होते हैं।

प्र. 2298 क्या अपर्याप्त देवता आशीविष लब्धि का प्रयोग करने में समर्थ होते हैं ?

उत्तर नहीं, उनमें इस लब्धि की मात्र शक्ति होती है।

छद्मस्थ द्वारा अज्ञेय श. 8 उ. 2

पूर्वापर संबंध- आशीविष के विषय को छद्मस्थ सर्वभाव से नहीं जानते देखते हैं। इसी संदर्भ में निम्नोक्त प्रश्न है कि छद्मस्थ सर्वभाव से क्या नहीं जानता-देखता है।

प्र. 2299 छद्मस्थ शब्द का अर्थ यहाँ क्या लिया गया है ?

उत्तर सामान्यतया केवलज्ञान से रहित जीव छद्मस्थ कहलाता है किन्तु प्रस्तुत प्रकरण में अवधि और मनःपर्यवज्ञान रहित जीवों को छद्मस्थ कहा गया है।

प्र. 2300 प्रस्तुत वर्णन में अवधि और मनःपर्यवज्ञानी को छद्मस्थ क्यों नहीं कहा गया है ?

उत्तर 1. श्री. ठाणांग सू. ठा. 3 उ. 4 में तीन प्रकार के केवली बताए गए हैं। यथा- अवधिज्ञान केवली, मनःपर्यवज्ञान केवली, केवलज्ञान केवली। अतः इन्हें यहाँ छद्मस्थ नहीं कहा गया है।
2. अवधि और मनःपर्यवज्ञानी अपने-अपने विषय को प्रत्यक्ष जानते-देखते हैं।
इस अतिशय ज्ञान के कारण प्रस्तुत वर्णन में इन्हें छद्मस्थ नहीं कहा गया है, निरतिशय ज्ञानी को ही छद्मस्थ कहा गया है।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः

श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र नमिपत्वज्जा

गतांक 15-16 मई 2022 अंक से आगे...

संकलनकर्ता- सरिता बैंगानी, कोलकाता

विवेचन- श्रीमद् उत्तराध्ययन के नवें अध्ययन 'नमिपत्वज्जा' में आपने पढ़ा कि किस तरह नमिराजर्षि को अपनी रानियों की चूड़ियों की आवाज से वैराग्य आया और जब नमिराजर्षि ने देवलोक के समान सुखों को त्यागकर अभिनिष्क्रमण किया (दीक्षा ग्रहण की) तब पहले देवलोक के इन्द्र देवराज शक्रेन्द्र स्वयं राजर्षि की परीक्षा लेने ब्राह्मण वेश में आए कि यह त्याग क्षणिक आवेग है या वास्तविक वैराग्यपूर्ण है। देवेन्द्र ने नमिराजर्षि को लोक जीवन संबंधित (संसार के पक्ष में) प्रश्न उपस्थित किए- पहला प्रश्न था मिथिला नगरी में सर्वत्र कोलाहल हो रहा है? इसका उत्तर नमिराजर्षि ने वृक्ष और पक्षियों के रूपक से दिया। देवेन्द्र ने उनके उत्तर को ग्रहण किया और इसके आगे...

नमिराजर्षि को अपने कुटुम्ब एवं राजभवन में राग है या नहीं? इस बात की परीक्षा लेने के लिए इन्द्र जो कहते हैं, सो सुधर्मा स्वामी ने इस प्रकार कहा-

2. जलते हुए अन्तःपुर सम्बन्धी

एस अग्गी य वाऊ य, एयं डज्झइ मंदिरं।
भयवं! अंतेउरं तेणं, कीस णं नाव-पेक्खह॥12॥

भावार्थ- भंते! यह अग्नि है और यह वायु है। इन दोनों से आपका यह मन्दिर (राजमहल) जल रहा है। अतः आप अपने अन्तःपुर (रानीवास) की ओर क्यों नहीं देखते ?

इन्द्र के प्रश्न का हेतु और उदाहरण- उपरोक्त 12वीं गाथा में इन्द्र यह कहने का प्रयास कर रहे हैं कि जो अपने होते हैं उनकी रक्षा करना आपका कर्तव्य है। यह भवन और अन्तःपुर आपके हैं। इस कारण आपको इसका रक्षण करना चाहिए। देवेन्द्र की बात सुनकर नमिराजर्षि ने क्या कहा सो सुधर्मास्वामी कहते हैं-

सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो नत्थि किंचणं।
मिहिलाए डज्झ-माणीए, न मे डज्झइ किंचणं॥14॥

भावार्थ- हम सुखपूर्वक रहते हैं, आनन्द से जीते हैं, जिनके पास इस संसार में कुछ भी अपना नहीं है। अतः मिथिला नगरी के जल जाने पर मेरा कुछ भी नहीं जलता है।

नमिराजर्षि के उत्तर का आशय यह है कि- 'यह मेरा है और यह पर का नहीं' यह सब मोह के अधीन अज्ञानी जीव की कल्पना है। जैसे- पौद्गलिक वस्तु/अशाश्वत के मोहवश जीव दुःखी होता है, विलाप आदि करता है अर्थात् जो अपनी नहीं होती है, मिथ्या ज्ञान के वश व्यक्ति उसी की रक्षा करता है। ज्ञान-दर्शन शाश्वत है वह मेरे पास है। इसके अलावा संसार में मेरा कुछ नहीं है। अतः जो चीज अपनी होती है, उसकी रक्षा की जाती है। जीव अकेला उत्पन्न होता है और अकेला ही मरता है। अंतःपुर आदि कुछ भी मेरा नहीं है, न ही मेरा उसमें ममत्व है। इसलिए मिथिला नगरी के जलने से मेरा कुछ नहीं जलता है। इस प्रकार जब नमिराज ऋषि ने देवेन्द्र के अन्तःपुर आदि हेतु को असिद्ध किया तब ब्राह्मण वेष में इन्द्र पुनः इस प्रकार कहने लगे-

बहुं खु मुणिणो भदं, अणगारस्स भिक्खुणो।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगंत-मणुपरस्सओ॥16॥

भावार्थ- बाह्य और आभ्यन्तर सब प्रकार के परिग्रह एवं संयोग से विमुक्त होकर 'मैं सर्वथा अकेला ही हूँ' इस प्रकार एकान्त/एकत्व भावना की अनुप्रेक्षा वाले अनगर, भिक्षाशील मुनि को निश्चय ही प्रचुर सुख होता है।

भिक्षु- भिक्षा से जीवन निर्वाह करने वाले अन्य अर्थ भी बतलाए गए हैं-

निर्ग्रन्थ- सभी ग्रन्थी/सम्बन्धों से मुक्त

संयमी- राग-द्वेष को त्यागने वाला

अनगर- गृह त्यागने वाला अर्थात् संयोग एवं परिग्रह को त्यागने वाला

नोट- (i) गृहस्थी को त्यागने वाले साधु के लिए संयोग परिग्रह के समान होता है। (ii) संयोग राग-द्वेष का हेतु होने से उससे पापकर्म का बंध होता है। (iii) परिग्रह नरक आदि अनर्थ का हेतु होने के कारण अभिनिष्क्रमण द्वारा त्याग करने योग्य है।

3. नगर को सुरक्षित बनाने के सम्बन्ध में-

पागारं कारइत्ताणं, गोपुर-ट्टालगाणि य।

उरुसूलग सयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया!।18।।

भावार्थ- हे क्षत्रिय! तुम पहले (अपने नगर) प्राकार (परकोटा), गोपुर (मुख्य दरवाजा), अट्टालिकाएँ चारों तरफ की खाई, शतघ्नियाँ किले के द्वार पर चढ़ाई हुई तोपें बनाकर फिर प्रव्रजित होना।

शतघ्नी- एक बार में सौ व्यक्तियों का संहार करने वाला यंत्र, तोप जैसा अस्त्र।

इन्द्र के प्रश्न का हेतु और उदाहरण- इन्द्र ने राजर्षि के दीक्षा लेने का निषेध कर उनको क्षत्रिय धर्म का पालन करने हेतु कहा, क्योंकि एक क्षत्रिय को अपनी प्रजा को सभी प्रकार से सुरक्षित किए बिना दीक्षा ग्रहण करना अनुचित है। इस अर्थ को सुनकर नमिराजर्षि ने देवेन्द्र को निम्नोक्त तीन गाथाओं से उत्तर देते हुए कहा-

सद्धं नगरं किच्चा, तव-संवर-मग्गलं।

खंतिं निउण-पागारं, तिगुत्तं दुप्पधंसयं।।20।।

भावार्थ- हे विप्र! मैंने श्रद्धा को नगर बनाया है। सम, संवेग, निर्वेग, अनुकम्पा, आस्था ये पाँच उस नगर के द्वार हैं। अनशन आदि बारह प्रकार के तप तथा आस्रव रोकने के लिए संवर रूपी अर्गला सहित किवाड़ बनाए हैं। मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति रूपी दुर्ग, खाई और तोपें तैयार की हैं। इस प्रकार मेरा नगर दुर्जेय है। कर्म रूपी शत्रु मेरे नगर में प्रवेश नहीं कर सकते।

खंतिं निउण-पागारं- शान्ति को समर्थ सुदृढ़ अर्थात् श्रद्धा रूपी नगर को ध्वस्त करने वाली अनंतानुबंधी कषाय के उदय से अवरोधन करने वाला मजबूत परकोटा बनाना।

धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया।

धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेण पलिमंथए।।21।।

भावार्थ- नगर की रक्षा के लिए साधु को सदा पराक्रम रूपी धनुष और ईर्यासमिति को धनुष की डोर बनाकर और धीरज को केतन अर्थात् धनुष्य के मध्य में पकड़ने का काष्ठ की मूठ करके सत्य द्वारा उसे बाँधना चाहिए।

तव-नारायजुत्तेणं, भेत्तूणं कम्म-कंचुयं।

मुणी विगय-संगामो, भवाओ परिमुच्चए।।22।।

भावार्थ- पराक्रम रूपी धनुष में तप रूप बाण चढ़ाकर और कर्म रूप कवच का भेद करके मुनि संग्राम से निवृत्त होकर संसार से मुक्त हो जाता है।

भेतूणं कम्म-कंचुयं अर्थात् आत्मा ही स्वयं अपने कर्मों को अन्तर्युद्ध से भेद देती है।

नोट- श्री उत्तराध्ययन सूत्र के 24वें अध्ययन में पाँच समिति और तीन गुप्तियों को 'अष्ट प्रवचन माता' कहा गया है।

नमिराजत्रहषि के उत्तर का आशय यह है- मुनि एक क्षत्रिय की भाँति कर्मरूपी शत्रुओं को पराजित करने के लिए तप, संवर, क्षमा, पाँच समिति, तीन गुप्ति, पुरुषार्थ आदि साधनों के द्वारा कर्मों का भेदन कर देता है। अतः अन्तर्युद्ध समाप्त करने वाले विजेता मुनि के आंतरिक क्षत्रियत्व को घटित किया है, क्योंकि सच्चा क्षत्रिय सभी जीवों की एवं स्वयं की आत्मा का रक्षक होता है।

-क्रमशः

प्रेरक प्रसंग

पुरुषार्थ की महिमा

रायबरेली की बात है, सकलेचा जी आचार्य पूज्य गुरुदेव श्री जवाहर लाल जी म.सा. की सेवाओं का लाभ लेते थे। उनके पुत्र कुबेर सिंह जी सकलेचा भोपाल में एक दुकान लगाना चाहते थे। वे पिता जी से यह बोलकर गए कि मैं भोपाल में दुकान लगाने जा रहा हूँ। वहाँ गए तो किसी ने कहा कि आप दुकान लगा ही रहे हो तो कम-से-कम किसी पंडित जी से मुहूर्त तो निकलवा लो। वे ज्योतिषी के पास चले गए। ज्योतिषी ने उन्हें अपनी गणित करके बताया कि तुम्हारे ऊपर ढाया शनि है। ढाई साल का शनि लगा हुआ है। अगर दुकान खोलनी है तो ढाई साल के बाद खोलना। अभी खोल दी तो ढाई साल तक मुनाफा होगा नहीं। हो सकता है जो पैसा लगाओ वह भी डूब जाए, वापस नहीं आए। वे बड़ी उमंग से गए थे किंतु ज्योतिषी ने यह बात कही तो वापस आ गये कि जान-बूझकर अग्नि में कौन कूदे या जान-बूझकर कुएं में धन कौन डाले? जब वे वापस लौटकर आये तो पिता जी ने पूछा कि क्या हुआ? तुम तो भोपाल में दुकान लगाने गए थे, वापस क्यों आ गए? उन्होंने बताया-मेरे मित्र ने कहा कि दुकान लगा रहे हो तो ज्योतिषी से पूछ लो। पूछा तो ज्योतिषी ने बताया कि तुम्हारे ऊपर ढाया शनि लगा हुआ है। ढाई साल शनि की छाया रहेगी। यदि अभी दुकान लगा दी तो नुकसान हो जाएगा। पिताजी ने पूछा, तुम्हारा उत्साह कैसा है? तुम्हारे मन में उमंग कितनी है? उन्होंने कहा कि मेरे मन में उमंग तो बहुत है। अभी भी मन है दुकान लगाने का किन्तु मित्र लोग नहीं लगाने के लिए कह रहे हैं। पिता ने कहा, तुमने जवाहराचार्य के व्याख्यान नहीं सुने। जवाहराचार्य ने कहा है और जैन सिद्धांत भी कहता है कि सबसे बड़ी पुरुषार्थ की महिमा होती है। तुम्हारे भीतर यदि उमंग है तो सभी मुहूर्त अनुकूल हैं।

मांगलिक सुनकर वे चले गए और वहाँ जाकर दुकान लगाई। वे जब आचार्य पूज्य गुरुदेव श्री नानालाल जी म.सा. के दर्शन करने उपस्थित हुए तो उन्होंने बताया कि महाराज! मुझे लोगों ने और पंडित जी ने भी कहा कि ढाई साल का शनि लगा हुआ है किंतु पहले ही वर्ष में इतनी आमदनी हुई जितनी की मुझे उम्मीद नहीं थी। यह हुआ उमंग से। कार्य उमंग, प्रबल भावना के साथ हो तो अद्भुत चमत्कार होता है। उमंग सारे ग्रहों, दोषों को किनारे लगा देती है। यदि हम उत्साह और उमंग के साथ कार्य को करते हैं तो कार्य में कोई ग्रह आड़े नहीं आ पाता। यदि इसका उत्तर चाहिए तो, उदाहरण जानिये-आप देखें जन्माष्टमी के समय कंस ने किसको जेल में डाल रखा था? कंस ने वसुदेव जी और देवकी को जेल में रखा है और संगीन, घना पहरा लगा दिया था। पहले 6 पुत्र जन्म ले चुके हैं। 7वीं संतान का जन्म होने वाला है। 7 वीं संतान से कंस को ज्यादा भय है। इसलिए कंस ने ज्यादा संगीन पहरा लगा दिया। कोई पक्षी भी भीतर प्रवेश नहीं कर सके। ऐसी परिस्थिति में कृष्ण वसुदेव ने जन्म लिया। देवकी महारानी अपने पति से कहती हैं कि हे नाथ! इसकी रक्षा कीजिए! वासुदेव जी ने कहा-कहाँ से करूँ, कैसे करूँ? देवकी ने कहा, भावना प्रबल रखिए। उन्होंने कृष्ण को उठाया और चल पड़े। बाहर निकले तो देखा बाहर जितने भी चौकीदार थे, सो गए। नींद आ गई। जब वहाँ से और आगे चले तो देखा नगर का द्वार बन्द है। अब कैसे जाएँ आगे? थोड़ा-सा आगे जाने पर जब 'हरि का अगूंठा अड़ा' श्रीकृष्ण का पैर ताले को लगा तो ताला खुल गया। आगे चले तो यमुना का पानी पूर पर था। सोचा इसको कैसे पार करें? उन्होंने उसको भी पार कर लिया। भावना यदि प्रबल है तो सारी चीजें हमारे अनुकूल होती चली जाती हैं। पुण्य प्रबल हो तो सारे योग हमारे अनुकूल होते हुए चले जाते हैं। हमारा पुण्य प्रबल हो और भावना भी प्रबल हो तो सब ठीक हो जाता है। पुराने लोग कहा करते थे कि 'रोता-रोता जावे तो मरयोड़ा रा समाचार लावे।' मेरा कहने का आशय है कि यदि पुण्यवाणी प्रबल है तो ज्योतिष और ग्रह हमारे अनुकूल रहेंगे। कोई भी हमारे प्रतिकूल नहीं होने वाला है।

प्रत्याख्यान मार्गदर्शिका

शास्त्रों में तपस्या को कर्मनिर्जरा का एक महत्वपूर्ण स्रोत बताया गया है। अतः मानव को सभी धार्मिक क्रियाएँ मात्र कर्मनिर्जरा के लिए ही करनी चाहिए ना कि भौतिक सुखों हेतु। यहाँ पर तपस्या के विभिन्न प्रकार नवकारसी, पोरसी, एकासन, उपवास आदि की मार्गदर्शिका आप लोगों के आत्मकल्याण हेतु दी गई है, जिसे समझकर तदनुसार तपस्या कर अनंतानंत कर्मों की निर्जरा की जा सकती है। इस हेतु सर्वप्रथम प्रतिज्ञा लें कि—**अत्तहियट्टयाए**

मैं सभी धार्मिक क्रियाएँ, तपस्या, स्वाध्याय, जाप आदि धार्मिक अनुष्ठान मात्र कर्मनिर्जरा के लिए व अपनी आत्मा के कल्याण के लिए करने का संकल्प लेता हूँ।

विविध प्रत्याख्यान का सही स्वरूप :

नवकारसी- पिछले दिन के सूर्यास्त से चौविहार आरंभ करते हुए सूर्योदय के बाद 48 मिनट तक चौविहार त्याग रखना 'नवकारसी' कहलाता है।

पोरसी- पिछले दिन के सूर्यास्त से चौविहार आरंभ करते हुए सूर्योदय के बाद एक प्रहर पूर्ण होने तक चौविहार त्याग रखना 'पोरसी' कहलाता है।

डेढ़ पोरसी- पिछले दिन के सूर्यास्त से चौविहार आरंभ करते हुए सूर्योदय के बाद डेढ़ प्रहर पूर्ण होने तक चौविहार त्याग रखना 'डेढ़ पोरसी' कहलाता है।

दो पोरसी- पिछले दिन के सूर्यास्त से चौविहार आरंभ करते हुए सूर्योदय के बाद दो प्रहर पूर्ण होने तक चौविहार त्याग रखना 'दो पोरसी' कहलाता है।

नोट- यदि कोई पूर्व धारणा के अनुसार पिछले दिन के सूर्यास्त के बाद चौविहार त्याग नहीं करते हुए नवकारसी/पोरसी आदि करता है तो उसे (वर्तमान धारणानुसार) कच्ची नवकारसी/कच्ची पोरसी आदि की

संज्ञा दी गई है, लेकिन इसमें भी मध्यरात्रि के बाद तो चौविहार त्याग रखना अनिवार्य है।

एकासन-

1. जिस दिन एकासन करना हो, उसके ठीक पिछले दिन के सूर्यास्त से लेकर एकासन वाले दिन के सूर्योदय तक भी चौविहार त्याग होना चाहिए।
2. एकासन के दिन नवकारसी, पोरसी, डेढ़ पोरसी, दो पोरसी करना चाहें तो सहज लाभ ले सकते हैं।
3. एकासन के दिन सूर्यास्त के बाद चौविहार त्याग रखना अनिवार्य है।
4. एकासन करने वाला उस दिन पौषध नहीं कर सकता, रात्रि संवर करते हुए कर्मनिर्जरा का लाभ अवश्य ले सकता है।
5. एकासन के दिन भोजन में सभी तरह के सचित्त या मिश्र पदार्थों का सेवन पूर्णतया वर्जित है।
6. दिन में एक बार एक ही आसन में पुट्टों/कमर (Hips) को उठाए बिना भोजन करना होता है। शेष दिवस में धोवन या गर्म जल के अलावा कुछ भी ग्रहण नहीं कर सकते हैं।
7. एकासन में भोजन में अचित्त असन, पान, खादिम, स्वादिम ही ग्रहण किए जा सकते हैं।



श्रमणोपासक

चाय-दूध, फल (फ्रूट), ज्यूस, ड्राईफ्रूट, मिठाई, दवाई आदि भी एक बार के भोजन के समय में बैठे-बैठे ही ग्रहण किए जा सकते हैं। उठने के बाद कुछ भी ग्रहण नहीं कर सकते। एकासन में लिलोती का त्याग रखना अनिवार्य नहीं है।

8. यदि कोई पूर्व धारणा के अनुसार पिछले दिन के सूर्यास्त बाद चौविहार त्याग नहीं करते हुए एकासन करता है तो उसे (वर्तमान धारणानुसार) कच्चा एकासन की संज्ञा दी गई है। इसमें भी मध्यरात्रि के बाद तो चौविहार त्याग रखना अनिवार्य है।
9. एकासन के दिन आहार के समय बैठे-बैठे के अतिरिक्त शेष समय कोई भी मंजन नहीं कर सकते हैं।
10. आकुंचन प्रसारण तथा गुरु अब्हुट्टाणेणं का आगार है।

नोट- जैन एकासन में एक बार एक ही आसन में अचित्त भोजन, चाय-दूध, फल (फ्रूट) आदि के अलावा अन्य समय के चाय-दूध, ज्यूस, ड्राईफ्रूट, मिठाई, फल (फ्रूट) आदि रूप सेगार की कोई छूट नहीं होती। अन्य मत के एकासन करने के बजाय तो बेआसन करना सकाम निर्जरा का हेतु है।

बेआसन- इसमें सभी नियम एकासन वाले लागू होते हैं। एकासन के 6 व 7 नं. बिन्दु में अन्दर सिर्फ इतना है कि इसमें पूर्वोक्त रीति से दो बार भोजन ग्रहण कर सकते हैं।

आयम्बिल- एकासन वाले नियम 1 से 6 तक भी पालन करना।

1. आयम्बिल में गेहूँ, चावल, मक्का, बाजरा, ज्वार, मूंग, उड़द, तुअर, मसूर, चना आदि धान्य से निर्मित रोटी, बाटी, थूली, दलिया, खिचड़ी, खाखरा आदि अचित्त पदार्थ ही ग्रहण किए जा सकते हैं।
2. आयम्बिल में लिलोती रूप कच्चे हरे चने (छोले), कच्चे मूंग, कच्चे चवले आदि व मक्का (भुट्टा) आदि सिके हुए या उबले हुए हों तो भी ग्रहण नहीं कर सकते हैं।
3. आयम्बिल में सभी तरह के विगय, सभी तरह के

15-16 जून, 2022

नमक, मिर्च-मसालों, अथाना मिर्च, काली मिर्च, नींबू, हरी सब्जी, फल (फ्रूट), ड्राईफ्रूट, मुखवास, पापड़-चिप्स, केर, मैथी आदि व दवाई का सेवन वर्जित है।

4. गुरु अब्हुट्टाणेणं व आकुंचन प्रसारण का आगार नहीं है।
नीवी- एकासन वाले नियम 1 से 6 तक भी पालन करना।

1. नीवी में आयम्बिल योग्य आहार के अलावा छाछ (मक्खन निकली हुई), छाछ से बनी जीरा आदि से रहित राब आदि व सभी तरह का अचित्त नमक ग्रहण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ भी ग्रहण नहीं कर सकते हैं।
2. नीवी में सभी तरह के विगय, मिर्च-मसालों, अथाना मिर्च, काली मिर्च, नींबू, हरी सब्जी, फल (फ्रूट), ड्राईफ्रूट, मुखवास, पापड़-चिप्स, केर, मैथी आदि व दवाई का सेवन वर्जित है।
3. गुरु अब्हुट्टाणेणं व आकुंचन-प्रसारण का आगार नहीं है।

एकलठाणा-

1. जिस दिन एकलठाणा करना हो, उसके ठीक पिछले दिन के सूर्यास्त से लेकर एकलठाणा वाले दिन के सूर्योदय तक भी चौविहार त्याग होना चाहिए।
2. एकलठाणा के दिन नवकारसी, पोरसी, डेढ़ पोरसी, दो पोरसी करना चाहें तो सहज लाभ ले सकते हैं।
3. एकलठाणा के दिन भोजन में सभी तरह के सचित्त या मिश्र पदार्थों का सेवन पूर्णतया वर्जित है।
4. दिन में एक बार एक ही आसन में पुट्टों/कमर (Hips) को उठाए बिना और पैर, घुटनों को हिलाए/कैलाए बिना भोजन करना होता है। इसमें धोवन या गर्म जल भी भोजन के समय बैठे-बैठे ही ग्रहण कर सकते हैं। भोजन से उठने के बाद तो अगले दिन के सूर्योदय उपरान्त तक चौविहार त्याग ही रहता है।
5. एकलठाणा में भोजन करते समय पालखी/पालथी

श्रमणोपासक

आसन को खोलना, पाव फैलाना, शरीर को मोड़कर आलस्य/सुस्ती निकालना पूर्णतया वर्जित है।

6. एकलठाणा में भोजन में अचित्त अशन, पान, खादिम, स्वादिम ही ग्रहण किए जा सकते हैं। चाय-दूध, फल (फ्रूट), ज्यूस, ड्राईफ्रूट, मिठाई, दवाई आदि भी एक बार के भोजन के समय बैठे-बैठे ही ग्रहण किए जा सकते हैं। उठने के बाद कुछ भी ग्रहण नहीं कर सकते।
7. एकलठाणा करने वाला उस दिन पौषध नहीं कर सकता, रात्रि संवर करते हुए कर्मनिर्जरा का लाभ अवश्य ले सकता है।
8. एकलठाणा में आकुंचन-प्रसारण का आगार नहीं है।

दिवसचरिम/चरम पच्चक्खाण- इस पच्चक्खाण में सूर्यास्त से न्यूनतम 48 मिनट पूर्व से अगले सूर्योदय उपरान्त तक चौविहार रखना होता है।

उपवास-

1. जिस दिन उपवास करना हो, उसके ठीक पिछले दिन के सूर्यास्त से लेकर उपवास वाले दिन के सूर्योदय तक भी चौविहार त्याग होना अनिवार्य है।
2. उपवास के दिन पोरसी, डेढ़ पोरसी, दो पोरसी करना चाहें तो सहज लाभ ले सकते हैं।
3. तिविहार उपवास के दिन सूर्यास्त पूर्व तक धोवन या गर्म जल के अलावा कुछ भी ग्रहण नहीं कर सकते हैं। सूर्यास्त के बाद चौविहार त्याग रखना अनिवार्य है।
4. उपवास चौविहार हो तो यथासमय आठ प्रहर का पौषध या 11वाँ पौषध करके महान कर्मनिर्जरा का लाभ ले सकते हैं और उपवास तिविहार हो तो सूर्यास्त पूर्व 10वाँ पौषध का लाभ ले सकते हैं।

वर्षीतप सम्बन्धी ध्यातव्य बिन्दु- चैत्र कृष्णा 8 (अष्टमी) से बेला करते हुए प्रारम्भ कर दूसरी अक्षय तृतीया तक लगभग 760 दिन में, 360 दिन पारणे के, 400 दिन उपवास के, तीनों चोमासी, प्रत्येक पक्खी को व बीच में आखातीज को पारणा आवे तो उस दिन पारणा

15-16 जून, 2022

नहीं करके 'बेला' करना। आखिरी दूज को बेला करके अक्षय तृतीया को पारणा इक्षुरस (गन्ने के रस) से करना। उपवास के दिन उपवास वाले सभी नियम लागू होंगे।

- साधना-**
1. श्री ऋषभदेवनाथाय नमः की 20 माला प्रतिदिन।
 2. 12 लोगस्स का ध्यान।
 3. उभयकाल प्रतिक्रमण।
 4. ब्रह्मचर्य पालन।
 5. सचित्त का त्याग रखना।
 6. यथासमय स्वाध्याय, प्रवचन श्रवण करना।
 7. यथाशक्ति नया ज्ञान सीखना व पुराना फेरना।
 8. गद्दा, बिस्तर पर शयन नहीं करना। संस्तारक (दरी आदि) पर शयन करना।

नोट- वर्षीतप में पारणे वाले दिन भी कोई भी सचित्त पदार्थ नहीं खा सकते हैं तथा पारणे वाले दिन भी सूर्यास्त के बाद चौविहार त्याग रखना अनिवार्य है।

दया/दयाव्रत (खाते-पीते पौषध)

1. न्यूनतम 7 प्रहर (लगभग 21 घण्टे) के लिए यानी प्रातः लगभग 9 बजे से अगले दिन सूर्योदय तक कम से कम 'एक करण एक योग' से संवरपूर्वक रहना।
2. दयाव्रत में न्यूनतम (कम से कम) 11 सामायिक करना।
3. दयाव्रत में भोजन में सचित्त या मिश्र आहार पानी नहीं ले सकते। भोजन करते समय भी खुले मुँह नहीं बोलना, कुछ चीज माँगनी हो तो इशारे से या मुँह के आगे मुँहपत्ती या रूमाल लगाकर बोलना।
4. दयाव्रत के दिन सूर्यास्त बाद चौविहार त्याग रखना आवश्यक है।
5. दयाव्रत के साथ नवकारसी/पोरसी/डेढ़ पोरसी/दो पोरसी व एकासन/बेआसन/आयम्बिल/नीवी/एकलठाणा करना चाहें तो विशेष कर्मनिर्जरा का

- लाभ भी ले सकते हैं।
6. दयाव्रत में जूते-चप्पल, मौजे आदि नहीं पहनना।
 7. दयाव्रत में खुले मुँह नहीं बोलना, दयाकाल में सांसारिक चर्चा, निन्दा, विकथा आदि नहीं करना।
 8. दयाव्रत में लाईट, पंखा, माईक, कूलर, ए.सी. आदि सभी तरह के विद्युत चलित साधनों का उपयोग वर्जित है।
 9. दयाव्रत में मोबाइल, सेल की घड़ी, कच्चा पानी, हरी वनस्पति या किसी भी तरह की सचित्त वस्तु का स्पर्श भी नहीं करना।
 10. महिला वर्ग पुरुष को एवं पुरुष वर्ग महिला को स्पर्श भी नहीं कर सकते हैं।
 11. घुटने के ऊपर से कोई चीज गिराना नहीं, फैंकना नहीं, थूकना नहीं।
 12. दयाकाल में हाथ, पैर, मुँह, सिर आदि नहीं धोना। साज-शृंगार नहीं करना।
 13. दिन में अकारण नींद नहीं लेना। यथासमय ज्ञान-ध्यान, स्वाध्याय आदि करना।
 14. दिन में मार्ग देखते हुए चलना। अंधकार वाले स्थान में चलते समय व रात के समय डांडिये (ओघे) से स्थान पूंजते हुए चलना। बिना पूंजे एक कदम भी नहीं चलना।
 15. शरीर पर कहीं खुजली चल रही हो या मच्छर आदि की दिक्कत हो रही हो तो पहले पूंजनी से शरीर को पूंजना, फिर खुजलाना।
 16. दयाव्रत में रहते हुए लघुशंका/दीर्घशंका (Urine/Toilet) आदि के लिए लेट्रिन, बाथरूम, वॉशबेसिन, नाली आदि का उपयोग नहीं करना। परठने योग्य खुली भूमि का नियमतः उपयोग किया जा सकता है। परठने की विधि का पालन करना। परठने आदि के लिए छत रहित खुले स्थान में सूर्यास्त बाद जाते समय सिर व शरीर को वस्त्र से पूरा ढँकना अनिवार्य है।
 17. उठते, बैठते, चलते समय किसी जीव की विराधना ना हो जाए ऐसी यतना रखना। हरी घास, वर्षा के पानी का स्पर्श भी नहीं करना।
 18. सूर्यास्त बाद से लेकर सूर्योदय तक खुले आसमान के नीचे (बिना छत वाली जगह पर) बैठना या सोना नहीं।
 19. सूर्यास्त पश्चात् (प्रतिक्रमण के बाद) प्रथम प्रहर रात्रि तक ज्ञान-ध्यान फेरना, स्वाध्याय या थोकड़े आदि चितारना। लाईट के प्रकाश में नहीं पढ़ना, ना ही देखना।
 20. बिस्तर, गद्दे, रजाई, तकिया आदि का उपयोग नहीं करना। अपने प्रतिलेखन किए हुए दरी, चदर, कम्बल, शॉल का उपयोग किया जा सकता है। दरी बिछाने से पहले जगह को डांडिये (ओघे) से अच्छी तरह पूंजना।
 21. उभयकाल प्रतिक्रमण करना व यथासमय प्रतिलेखन करना।
 22. दयाव्रत में सूर्यास्त से पहले परठने योग्य भूमि का अच्छे से निरीक्षण करना चाहिए ताकि वहाँ कोई त्रस-स्थावर जीवों की विराधना जैसी स्थिति ना हो।

दयाभाव/भावदया-

1. दयाभाव पचखने से लेकर सायंकालिन प्रतिक्रमण उपरान्त तक संवर में रहे हुए सामायिक, स्वाध्याय, ज्ञानार्जन आदि करना।
 2. दयाभाव काल में न्यूनतम 7 सामायिक करना आवश्यक है।
 3. दयाभाव में सायंकालिन प्रतिक्रमण करना आवश्यक है।
 4. दयाभाव पचखने के बाद व्रत में रहते हुए दयाव्रत वाले 3 से 22 तक नियम पालन करने अनिवार्य हैं।
- परठने की विधि-** 1. परठने जाते समय “आवस्सिया-आवस्सिया” कहें। 2. परठने जाते हुए दिन में मार्ग देखते हुए व रात्रि में या अंधकार वाले स्थान

श्रमणोपासक

पर चलते समय स्थान को डांडिए से पूंजते हुए चलें। 3. परठने योग्य भूमि को देखें/पूंजें और “अणुजाणह जस्स उग्गहो” (यानी जिनका अधिकार क्षेत्र है, उनकी अनुज्ञा है) कहें। 4. लगभग चार अंगुल ऊँचाई से यतनापूर्वक परठें व “वोसिरामि-वोसिरामि” कहें। 5. लौटते समय “निसीहि-निसीहि” कहें। 6. अपने स्थान पर आकर एक बार ‘इच्छाकारेणं’ पाठ का कायोत्सर्ग/ध्यान करें।

नोट : परठने की युक्त विधि का पालन सामायिक, संवर, दया, पौषध में परठने जाते हुए करना अनिवार्य है। रात्रि में बिना छत वाले खुले स्थान पर जाते समय सिर व शरीर को बस्त्र आदि से ढकना भी अनिवार्य है

सभी तपस्या के लिए विशेष जानकारी -

1. तेले तक की तपस्या में विधिवत् रीति से तैयार धोवन व उबाल आया हुआ गर्म पानी ठारकर ठण्डा किया हुआ या गुनगुना पानी पी सकते हैं।
2. तेले से ऊपर की तपस्या में उबाल आया हुआ गर्म पानी ठारकर ठण्डा किया हुआ या थोड़ा गुनगुना ही लिए जाने की धारणा है।

* ऐसे गर्म पानी की काल मर्यादा -

1. वर्षा ऋतु में (श्रावण से कार्तिक माह तक) - 3 प्रहर
 2. सर्दी की ऋतु में (मिगसर से फाल्गुन माह तक)- 4 प्रहर
 3. गर्मी की ऋतु में (चैत्र से आषाढ माह तक)- 5 प्रहर
- रहती है, उसके बाद पुनः सचित्त होने की संभावना रहती है। जबकि विधिवत् रीति से तैयार धोवन पानी की काल मर्यादा हर ऋतु/मौसम में (धोवन बनने के बाद से) 5 प्रहर तक मानी गई है।

संवर- हमारी आत्मा में हर समय कर्मों का बंध चालू रहता है। संवर के माध्यम से उन आते हुए अशुभ कर्मों को हमारी आत्मा में बंधने से रोका जा सकता है। हमारी आत्मा में मुख्यतः 5 प्रमुख कारणों से कर्मों का बंध होता है- मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय, अशुभ योग।

15-16 जून, 2022

संवर में इन्हीं 5 प्रमुख कारणों का प्रत्याख्यान करने से हमारी आत्मा में कर्मों का आना रुक जाता है।

संवर सबसे आसान व महान कर्मनिर्जरा का साधन है। घर में रहते हुए हमारी एक रात्रि भी बिना संवर के ना बीते, ऐसा लक्ष्य रहना चाहिए।

संवर के प्रकार- 1. जब भी हमें कोई धार्मिक क्रिया (माला फेरना, आगम का स्वाध्याय, धार्मिक पुस्तक पढ़ना, ज्ञानचर्चा, म.सा. के दर्शन आदि) करनी हो और सामायिक करने जितना पर्याप्त समय ना हो तब पहले (मोबाइल, सेल, घड़ी आदि) सभी तरह के सचित्त पदार्थों से अलग होकर मुँह पर मुँहपत्ती/रूमाल लगाकर संवर पचक्ख सकते हैं। इसके लिए समय सीमा की कोई बाध्यता नहीं है यानी जब भी चाहें ‘नवकार मंत्र’ गिनकर संवर पार सकते हैं।

2. रात्रि शयन करते समय सभी तरह की सचित्त वस्तुओं से अलग होकर दरी, चद्दर, कंबल, डांडिया व पूंजनी लेकर मुँहपत्ती लगाकर स्थानक/घर पर नियत स्थान पर संवर पचक्ख कर शयन कर सकते हैं। इसे भी जब भी चाहें नवकार मंत्र गिनकर पार सकते हैं।

नोट- 1. संवर पचखने के बाद दयाव्रत वाले 6 से 20 तक नियम पालन करने होते हैं।

2. पूरी रात्रि पर्यंत संवर करना जिन्हें किन्हीं कारणों से मुश्किल लगता है, वे व्यक्ति एक घण्टे का संवर पूर्व शयन से शुरुआत करते हुए फिर उसमें यथाशक्ति समय बढ़ाते हुए कुछ दिनों के अभ्यास से पूरी रात्रि संवर करने तक के अभियान में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

संवर के पचक्खाण का पाठ- द्रव्य से हिंसादि पाँच आश्रव का त्याग, क्षेत्र से सम्पूर्ण लोक प्रमाण, काल से नवकार गिनकर न पारूँ तब तक भाव से उपयोग सहित एगविहं एगविहेणं व करेमि कायसा तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

संवर जब भी पारना हो ‘नवकार मंत्र’ गिनकर पार सकते हैं।

श्रमणोपासक

सामायिक- सामायिक में दयाव्रत वाले 6 से 20 तक नियम भी पालन करना।

सामायिक के 32 दोषों को टालते हुए विधि सहित सामायिक लेना, विधि सहित सामायिक पारना चाहिए। पुरुष वर्ग के लिए सामायिक व पौषध करने हेतु दुपट्टा व चौलपट्टा पहनना अनिवार्य है। सामायिक में रात्रि के समय वंदना, नमोत्थुणं आदि के लिए आसन से नीचे उतरना हो या चलने का प्रसंग हो तो पहले डांडिये/पूजनी से स्थान को भली-भाँति पूजना अनिवार्य है।

दसवाँ पौषध-

1. जिस दिन त्रिविहार उपवास किया हो उस दिन यह पौषध किया जा सकता है।
2. पौषध पचखने के बाद चौविहार त्याग रखना अनिवार्य है।
3. यह पौषध न्यूनतम 'रात्रि के 4 प्रहर' के लिए किया जाता है।
4. यह पौषध पचखने का लाभ लेने के इच्छुक जन को सूर्यास्त से न्यूनतम 15-20 मिनट पूर्व अपने सामायिक के साधनों व दरी, चदर आदि के साथ पौषध स्थल पर उपस्थित हो जाना चाहिए ताकि यथासमय परठने योग्य भूमि का (त्रस-स्थावर जीवों के रक्षार्थ) निरीक्षण करके अपने वस्त्र, दरी, चदर आदि का प्रतिलेखन करके विधिपूर्वक पौषध पचख सकें।
5. यह पौषध पचखने के बाद दयाव्रत वाले 6 से 22 तक नियम पालन करना अनिवार्य है।
6. यह पौषध पचखने की विधि 'सामायिक पचखने की विधि' के समान ही है। अन्तर सिर्फ इतना है कि 'करेमि भन्ते' के पाठ के स्थान पर 'दसवाँ पौषध' पचखने का पाठ बोला जाता है। पौषध पारने की विधि भी सामायिक पारने की विधि के समान ही है।

15-16 जून, 2022

अन्तर सिर्फ इतना है कि 'एयस्स नवमस्स' के पाठ के स्थान पर 'पौषध पारने का पाठ' बोला जाता है।

ग्यारहवाँ पौषध/प्रतिपूर्ण पौषध-

1. जिस दिन चौविहार उपवास किया हो उस दिन ही यह पौषध किया जा सकता है।
2. 11वाँ पौषध न्यूनतम 5 प्रहर से लेकर 8 प्रहर लगभग के लिए किया जाता है। जिसमें भी 4 प्रहर रात्रि के शामिल होना अनिवार्य है।
3. अष्टप्रहरी पौषध जिसे प्रायः प्रतिपूर्ण पौषध भी कहते हैं, यह न्यूनतम आठ प्रहर (24 घण्टे) का होता है।
4. यह पौषध पचखने के बाद दयाव्रत वाले 6 से 22 तक नियम पालन करना अनिवार्य है।
5. यह पौषध पचखने की विधि सामायिक पचखने की विधि के समान ही है। अन्तर सिर्फ इतना है कि 'करेमि भन्ते' के पाठ के स्थान पर 11वाँ पौषध पचखने का पाठ बोला जाता है। पौषध पारने की विधि भी सामायिक पारने की विधि के समान ही है। अन्तर सिर्फ इतना है कि 'एयस्स नवमस्स' के पाठ के स्थान पर 'पौषध पारने का पाठ' बोला जाता है।
6. 11वाँ पौषध यदि 5/6/7 प्रहर का कर रहे हो तो इसे पचखते समय पाठ में 'पडिपुण्ण' शब्द नहीं बोलते हैं। मात्र आठ प्रहर का पौषध पचखते समय ही पाठ में 'पडिपुण्ण' शब्द बोलते हैं।

नोट- उपवास, बेला आदि तपस्या की हो उस दिन ही पौषध कर सकते हैं। एकासन, आयम्बिल, नीवी आदि तप करने वाला या जिसने दिन में कुछ भी आहार ग्रहण किया है वह उस दिन पौषध नहीं कर सकता है। मगर हाँ अगले दिन के 8 प्रहर मिलाकर बारह प्रहर का पौषध कर सकता है।

-संकलित

क्रमशः



विनय-10

समकित के 67 बोल

गतांक 15-16 मई 2022 अंक से आगे...

-शकुन्तला लोढा, व्यावर

पिछले अंक में आपने दूसरा बोल लिंग तीन के बारे में पढ़ा कि एक सम्यग्दृष्टि जीव की जिनवाणी के प्रति अभिलाषा, धार्मिक क्रियाओं में प्रीति व वैयावृत्य किस प्रकार की होती है। आगे तीसरा बोल विनय 10 आपके समक्ष उपस्थित है।

तीसरा बोल- विनय दस

“धम्मस्स विणओ मूलं”

धर्म का मूल विनय है। विनय का सामान्य अर्थ होता है आदर करना, सम्मान करना, विनम्र होकर रहना। विनय का विशेष अर्थ है- जिनके प्रति हमारा विनय है हम उनके प्रति समर्पित होकर रहें अर्थात् समर्पण भाव ही विनय का प्रमुख आधार है। जहाँ समर्पण भाव होता है वहाँ पर आज्ञा का पालन, आज्ञा के प्रति श्रद्धा और अन्तरहृदय से आदर की भावना आदि बातें विनयशील व्यक्ति के अन्दर समाहित होती है।

सम्यक्त्वी पुरुष में विनय- विनम्रता गुण सहज रूप में होता है। विनयशील व्यक्ति ही साधना के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है, अभिमानी नहीं। जिसमें अक्कड़पन, अभिमान होता है वह किसी भी प्रकार की विशिष्ट शिक्षा या योग्यता प्राप्त करने में असमर्थ रहता है। इसके विपरीत विनयशील व्यक्ति गुरुजनों को प्रसन्न करता हुआ उत्तरोत्तर ज्ञानादि रत्नों से परिपूर्ण बन जाता है। जैसे फलों से लदा हुआ वृक्ष नम्र हो जाता है, पानी से भरे बादल पृथ्वी की ओर झुक जाते हैं, उसी प्रकार सम्यक्त्वी व्यक्ति भी सम्यग्ज्ञान को पाकर नम्र हो जाता है। विनय निःस्वार्थ भाव से करना चाहिए। स्वार्थ की भावना से किया गया विनय, विनय नहीं चापलूसी है।

जैन आगमों में विनय का प्रयोग आचार आदि के अर्थ में किया गया है। जिनशासन में विनय का अर्थ केवल

नम्रता ही नहीं है अपितु साधु-श्रावक का जितना भी आचार है वह सभी विनय में समाविष्ट है। जीवन में जितना अहंकार कम होता है उतना ही अधिक विनय होता है।

समकित के 67 बोल में विनय का मूल आधार श्रद्धा और समर्पण भाव है। अतः विनय किन के प्रति किया जाए, विनय करने योग्य महान् गुणवान पात्र कौन-कौन हैं, इस अपेक्षा से पात्र को ध्यान में रखते हुए विनय के 10 भेद बताए गए हैं।

1. अरिहंत विनय- जो राग-द्वेष शत्रुओं के विजेता हैं, जो अठारह दोषों से रहित हो चुके हैं, उन अरिहंत देवों का विनय करना। जब अरिहंत के प्रति श्रद्धा की भावना होती है, विनय (झुकना व नमन करना) की भावना होती है तभी उनके द्वारा बताए गए मार्ग के प्रति हमारे अन्दर विनय व श्रद्धा के भाव जग सकते हैं। लेकिन हमें किसके प्रति नमना चाहिए यह मालूम नहीं होगा तो विनय फल देने वाला नहीं होगा। किसी ने कहा कि मित्रता सबसे होनी चाहिए। हुआ यह कि उसने दुर्व्यसनी से भी मित्रता कर ली। हमारा उद्देश्य वीतराग बनना है तो जो वीतराग बन चुके हैं या वीतराग बनने हेतु दृढ़तापूर्वक चल रहे हैं उनको नमस्कार करना, उनके गुणों का स्मरण करना, उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलना, जिससे हमारा सम्यक्त्व पुष्ट हो। यही अरिहंत विनय है।

2. अरिहंत प्ररूपित धर्म का विनय- अरिहंत भगवान किसी काल में प्रत्यक्ष होते हैं और किसी काल में परोक्ष। वर्तमान में भरत क्षेत्र में पाँचवें आरे में अरिहंत प्रत्यक्ष नहीं हैं, लेकिन अरिहंतों द्वारा बताया गया मार्ग- ‘जिनशासन’ वर्तमान में प्रत्यक्ष है। अतः एक सम्यक्त्वी आत्मा में जैसे अरिहंत के प्रति विनय-भक्ति होती है ठीक वैसे ही अरिहंत प्ररूपित धर्म के प्रति विनय-भक्ति होनी चाहिए। इसका अर्थ यह है कि अरिहंत भगवान ने जो धर्मदेशना दी है और मोक्ष के लिए जो मार्ग हमें बताया है

श्रमणोपासक

उसके प्रति हमारे श्रद्धा के भाव होना, उस दिशा में कदम बढ़ाना और जो व्यक्ति अरिहंत प्ररूपित धर्म के विपरीत आचरण करता है, उसे धर्म के मार्ग पर स्थिर करना चाहिए। सदैव हमारा यह प्रयास रहना चाहिए कि अधिक से अधिक लोगों को अरिहंत प्ररूपित धर्म से जोड़ें, जिससे वे धर्म की दिशा में आगे बढ़ें और सम्यक्त्वी बनकर जन्म-मरण के चक्र को तोड़कर शाश्वत सुखों को प्राप्त करें।

3. आचार्य विनय- जो विशिष्ट आत्मा स्वयं पाँच प्रकार के आचार का पालन करते हैं और दूसरों से पालन करवाते हैं, वे आचार्य हैं। **अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये पाँच आचार जैन साधना के प्रमुख अंग हैं।** वर्तमान में पाँचवां आरा चल रहा है। पाँचवें आरे में भरत क्षेत्र में तीर्थंकर प्रत्यक्ष नहीं हैं। ऐसी अवस्था में आचार्य ही तीर्थंकर के प्रतिनिधि होते हैं और जो विनय व श्रद्धा की भावना तीर्थंकर के प्रति होती है, वही विनय व श्रद्धा की भावना आचार्य के प्रति होनी चाहिए। आचार्य भगवन् की आज्ञानुसार चलना, उनके बताए गए हर आयाम को पूरा करने का प्रयास करना, ज्ञान व क्रिया के क्षेत्र में आगे बढ़ना, शासन को आगे बढ़ाने के लिए नए-नए प्रयत्न करना, आचार्य के सान्निध्य में रहकर मन व तन से शुश्रूषा करना, क्रोध का त्याग कर क्षमा को धारण करना, गलतियों को छिपाना नहीं और जैसे हों वैसे ही आचार्य के समक्ष प्रकट करना आदि आचार्य विनय है।

तीर्थंकरों की आज्ञा का उल्लंघन और गुरुजनों के प्रतिकूल आचरण करने वाला 'अविनीत' कहा जाता है। साँप का काटा हुआ प्राणी एक ही बार मरता है किन्तु आचार्य महाराज की आशातना करने वाला, निन्दा करने वाला, अविनय करने वाला बार-बार जन्म-मरण करता है।

4. उपाध्याय विनय- जिनके पास रहकर शास्त्रीय अध्ययन किया जाता है, वे उपाध्याय होते हैं। उपाध्याय स्वयं अंग-उपांगादि शास्त्रों के मर्मज्ञ विद्वान् होते हैं और दूसरों को श्रुत का अध्ययन कराते हैं। अज्ञान के अंधकार में भटकते हुए प्राणियों को ज्ञान का आलोक देने वाले उपाध्याय कहलाते हैं। जिन नहीं पर जिन के समान साक्षात्

15-16 जून, 2022

ज्ञान का प्रकाश करने वाले उपाध्याय भगवन् के समीप अध्ययन करते समय विनीत शिष्य क्रोध न करे, बिना विचारे न बोले, क्षमा, सहनशीलता को धारण करे, गुरु के विपरीत आचरण नहीं करे, गुरु के आसन से ऊँचा आसन नहीं रखे, अनुशासन में रहे, सावद्य वचन न बोले। ऐसे विनीत शिष्य के विशुद्ध आचरण का प्रभाव गुरुजनों के अतिरिक्त उसके निकटवर्ती अन्य व्यक्तियों पर भी पड़ता है। इसलिए विनयशील बनना ही सम्यग्दृष्टि के जीवन का प्रधान लक्ष्य होना चाहिए।

5. स्थविर विनय- जो साधु भगवंत अपने गुणों में, अपने चरित्र में, अपने ज्ञान में, अपनी वय में स्थिरता प्राप्त कर चुके हैं, जो दृढ़-स्थिर हो चुके हैं, उनको स्थविर कहा जाता है। हमारे आगमों में तीन अपेक्षाओं से निर्ग्रथ मुनिराजों के स्थविर की व्यवस्था है-

वय स्थविर (वृद्ध)- जो मुनिराज 60 वर्ष या अधिक आयु वाले हैं; दीक्षा पर्याय कम हो सकती है, वे **वय स्थविर** कहलाते हैं।

प्रव्रज्या स्थविर- जिन मुनिराजों की दीक्षा पर्याय 20 वर्ष या अधिक है, वे **प्रव्रज्या स्थविर** कहलाते हैं।

श्रुत स्थविर- जिनका ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम बहुत निर्मल है, जिन्होंने स्थानांग, समवायांग सूत्रों का अच्छी तरह से, गहराई से अध्ययन किया है वे **श्रुत स्थविर** कहलाते हैं। इनके लिए आयु व दीक्षा पर्याय का नियम नहीं है।

अलग-अलग गुणों की अपेक्षा प्रत्येक व्यक्ति को जिनशासन में विशेष सम्मान व स्थान प्रदान किया गया है। स्थविरों के पास ज्ञान-ध्यान सीखना, उनकी शारीरिक सेवा करना, उनका आदर-सम्मान करना, विनय है। इस तरह से तीनों प्रकार के स्थविरों की विनय-भक्ति करने से हमारे सम्यक्त्व में निखार आता है, क्योंकि इन स्थविरों के प्रति विनय जागृत होता है तो हमारे मन में भी संयम के प्रति, ज्ञान के प्रति, वयोवृद्धों के प्रति आदर व श्रद्धा के भाव जागते हैं और हमारा सम्यक्त्व निर्मल बनता है।

श्रमणोपासक

6. कुल विनय- एक गुरु द्वारा दीक्षित श्रमणों के वर्ग को कुल कहते हैं।

7. गण विनय- एक आचार्य परम्परा में स्थित साधक वर्ग को गण कहते हैं।

ऐसे कुल व गण की मर्यादाओं का पालन करना, उनकी उन्नति करना, रत्नत्रय की आराधना में आगे बढ़े इसके लिए प्रयत्नशील होना, विकास व मान-सम्मान बढ़े ऐसे कार्य करना, विनय भावना है। हम जिस समुदाय में रहते हैं उसमें शान्ति बनी रहे यह हर साधु व श्रावक का प्रथम कर्तव्य है। उसमें कलह न होकर समाधिपूर्वक आराधना हो और यह तभी संभव है जब सम्प्रदाय के प्रत्येक सदस्य के भीतर सहनशीलता हो। स्वयं नियमों का पालन करने वाले हों और दूसरों को पालन कराने वाले हों तथा प्रत्येक सदस्य के प्रति आत्मीयता के भाव हों।

चश्मा बनाने वाली कम्पनी काँच को बराबर काटती है ताकि वो फ्रेम में फिट हो सके, वैसे ही हम भी अपने आपको ऐसे बदलें कि दूसरों के साथ फिट हो सकें, एडजस्ट हो सकें। क्योंकि जब तक हमारा व्यावहारिक जीवन शान्तिपूर्ण नहीं होगा, तब तक हम आध्यात्मिक क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकेंगे। सम्यक्दृष्टि जीव के भीतर सदैव यह भावना रहती है कि मेरे निमित्त से जिनशासन को कोई हानि न हो। उसकी दृष्टि सदैव पारदर्शी होती है। यही कुल व गण का विनय है, भक्ति है।

8. संघ विनय- साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका के समुदाय रूप, चतुर्विध संघ की यशोगाथा विनय, भक्ति अर्थात् धर्म संघ की मर्यादाओं का पालन करना संघ विनय है।

1 से 7 बोल में सर्वविरति रूप चारित्र आत्माओं की विनय-भक्ति की बात कही गई हो, लेकिन आठवें बोल में साधु-साध्वी के साथ श्रावक-श्राविकाओं को भी सम्मिलित किया गया है।

साधु-साध्वी की तो विनय-भक्ति करनी ही चाहिए, लेकिन श्रावक-श्राविकाओं के प्रति भी हमारा विनय भाव होना चाहिए, क्योंकि श्रावकों में भी कई महान् श्रावक

15-16 जून, 2022

विशिष्ट तप के आराधक होते हैं, ज्ञानवान होते हैं, विशेष नियमों एवं व्रत-प्रत्याख्यानों का पालन करने वाले होते हैं। इसलिए चारों के प्रति विनय व आदर के भाव होने चाहिए। ऐसा करने से हम चतुर्विध संघ की महिमा को बढ़ाते हैं और हमारे मन में ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की आराधना करने का भाव विकसित होता है। हमारा वैराग्य व श्रद्धा दृढ़ होती है। चतुर्विध संघ की विनय-भक्ति से हमारा सम्यक्त्व निखरता है एवं सम्यक्त्व का विकास होता है।

9. स्वधर्म विनय- जिनका श्रुत-चारित्र रूप धर्म समान हो, समान धर्म का आचरण करने वाले हो अर्थात् जिनशासन के अनुयायी हमारे लिए स्वधर्मी हैं। स्वधर्मी की सेवाभक्ति करनी चाहिए। उनके प्रति वात्सल्य भाव होना चाहिए। वात्सल्य का अर्थ है अन्दर से अपनत्व निभाना। जैसे एक माँ अपने पुत्र के प्रति वात्सल्य रखती है तो उसके भीतर से दूध बनकर प्रवाहित होता है। जैसे गाय को अपने बछड़े के प्रति वात्सल्य होता है। जब गाय को दुहना होता है तो उसके बछड़े को उसके पास लाया जाता है। गाय का जब वात्सल्य झरता है तभी गाय दूध देती है। ठीक वैसे ही वात्सल्य भाव जिनशासन में संघ के प्रत्येक स्वधर्मी के प्रति होना चाहिए। तभी संघ में समन्वय बढ़ता है, एकाकार का भाव बढ़ता है, आदर की भावना बढ़ती है, जिससे सम्यक्त्व दृढ़ होता है।

10. क्रियावान का विनय- जो वीतराग प्रभु द्वारा प्ररूपित आत्मा परमात्मा, नरक, स्वर्ग आदि पर आस्था रखता है, ऐसे सम्यक्दृष्टि चारित्रशील व्यक्ति का विनय करना क्रियावान विनय है अर्थात् जो भी साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाएँ हैं, वे ज्ञान-दर्शन-चारित्र के सन्दर्भ में मन, वचन, काया से जो भी क्रिया आराधना करते हैं, निर्मल रूप से जो संयम का पालन करते हैं, महाव्रतों का, अणुव्रतों का पालन करते हैं और क्रियाओं के आराधक हैं, उन सबके प्रति विनय-भक्ति करना क्रियावान विनय है।

इन 10 के प्रति अन्तरहृदय से भक्ति और विनय की

श्रुमणोपासक

भावना रखें, आदर के भाव रखें। इसका अर्थ केवल हाथ जोड़ना व चरणस्पर्श करना नहीं है। आदर भाव का अर्थ होता है आज्ञा का पालन करना। इसलिए अरिहंत से लेकर स्थविर भगवन्तों आदि की जो भी आज्ञा है, जिनाज्ञा है, उनका पालन करना, उसके प्रति समर्पित होना। जब जिन आज्ञा के प्रति समर्पण भाव बढ़ता है तो सम्यक्त्व दृढ़ होता है।

श्री भुवनतिलक साधु की कथा

इस भरत क्षेत्र में कुसुम नामक नगर में धनद नाम का राजा था। उसके पद्मावती नाम की पत्नी और भुवनतिलक नाम का पुत्र था। पुत्र सभी कलाओं में प्रवीण था। इधर रत्नस्थलपुर नगर का राजा अमरचन्द्र, जिसके यशोमति नाम की पुत्री थी, वह भी सभी कलाओं में प्रवीण थी।

एक दिन राजा अमरचन्द्र ने अपने प्रधान के हाथ भुवनतिलक और यशोमति के विवाह का प्रस्ताव राजा धनद के पास भेजा। यह सुनकर राजा धनद को खुशी हुई और उसने चतुरंगिनी सेना, सामंत के साथ कुमार भुवनतिलक को अमरचन्द्र राजा के प्रधान के साथ भेज दिया। मार्ग में जाते समय रत्नस्थलपुर नगर में कुमार रथ से गिर गया और बेहोश हो गया। अनेक वैद्य आए और खूब उपाय किए, लेकिन सभी उपाय निष्फल हुए।

पुण्ययोग से उसी समय उद्यान में केवलज्ञानी पधारे। राजा अमरचन्द्र, सर्वमान्यगण एवं सामंत आदि कुमार को लेकर केवली भगवान के पास आए। भगवान ने धर्मदेशना सुनाई। देशना में भगवान ने कर्मों की स्थिति के बारे में बताया। सामंतों ने भगवान से पूछा कि कुमार ने ऐसे कौन से कर्म किए जिनके कारण कुमार को महारोग उत्पन्न हुआ। केवली भगवान कुमार का पूर्वभव सुनाने लगे-

धातकी खण्ड के भरत क्षेत्र में भुवननागर नाम का नगर था। एक समय आचार्य अपने बहुत से साधुओं के साथ उस नगर में पधारे। उस गच्छ में 'वास' नाम का अविनीत शिष्य था, जो हंस में बगुले के समान महाकषायी, अस्वाध्यायी था। गुरु ने उसे साधुओं का विनय करने को कहा। यह सुनकर वह क्रोध से बोला- आप मुझे अकेले को क्यों कह रहे हो, दूसरे साधुओं को

15-16 जून, 2022

क्यों नहीं कहते? मेरे पीछे ही क्यों पड़े हो? और क्रोधावेश में साधुओं को मारने के लिए दौड़ा। दूसरे साधुओं ने उसे पीछे से पकड़ा। कुछ समय बाद में उसने क्रोध में आकर पानी में तालपुट विष डाल दिया और चला गया। जैसे ही साधु पानी पीने लगे तो शासनदेव ने कहा- यह पानी मत पीना। 'वास' ने इस पानी में विष डाल दिया है। साधुओं ने उस पानी को परठ दिया।

'वास' दूर जंगल में भाग गया। जंगल में भूख-प्यास सहन करता हुआ क्रोध में बालमरण को प्राप्त हुआ। सातवीं नरक में तैंतीस सागरोपम वाला नैरयिक बना और अनेक बार जन्म-मरण व अकाम निर्जरा करता हुआ धनद राजा के पुत्र भुवनतिलक के रूप में उत्पन्न हुआ है।

ऋषिघात के जो कर्म बाकी रहे वे कर्म उदय में आए हैं, जिनसे यह रोग उत्पन्न हुआ है। कुमार ने केवली भगवान से पूछा कि मेरा रोग कब शान्त होगा? भगवान ने फरमाया कि ज्यादा कर्म भोग लिए हैं, बाकी शेष जल्दी ही खत्म हो जाएंगे। पूर्वभव सुनकर कुमार को जातिस्मरणज्ञान हो गया एवं वैराग्य उत्पन्न होने से दीक्षा ग्रहण कर ली।

पूर्वभव में अरिहंत भगवान की आशातना की थी, अब आलोचना करके विनय को स्वीकार किया। इधर यशोमति ने भी माता-पिता से आज्ञा लेकर दीक्षा ली और घोर तपस्या करके विचरने लगी। कुमार दीक्षा लेकर समस्त साधुओं की सेवा अकेले ही करने लगे। जैसे भरत, बाहुबली ने साधुओं का विनय व्यवहार किया, उसी प्रकार कुमार ने भी विनय व्यवहार किया और कितने ही भव्य जीवों को कर्मनिर्जरा के लिए स्वयं के पूर्वभव में किए हुए कर्मों का उपदेश देकर प्रतिबोध देते।

भुवनतिलक साधु निरपेक्ष रूप से 10 प्रकार का विनय तप करके धर्मदेशना देकर पादपोषण संथारा करके सभी कर्मों का क्षय करके मोक्ष पधारे। यह 10 प्रकार के विनय का स्वरूप समझकर और भुवनतिलक साधु का दृष्टान्त सुनकर भव्य जीवों को भी 10 प्रकार का विनय करना चाहिए।

-क्रमशः



प्रतिपल स्मरणीय महासती सीता

गतांक 15-16 मई 2022 अंक से आगे...

जो कष्ट आने पर भी अपने धर्म को नहीं छोड़ती है, अपने पतिदेव के सिवाय अन्य पुरुषों को पिता अथवा भाई के समान समझती है, उसे सती कहते हैं। इन सोलह सतियों में ब्राह्मीजी, सुन्दरीजी, चन्दनबालाजी और राजीमतिजी बालब्रह्मचारिणी थी और बाकी सब विवाहिता थी। इन सब सतियों का जीवन चरित्र पढ़ने से मालूम होगा कि इन्होंने घोर कष्ट सहकर भी अपने धर्म की रक्षा की। इसलिए ये जग में पूजनीय बन गईं। सुबह उठकर जो इनका नाम लेते हैं, उनका मन पवित्र होता है और उनका चरित्र बल बढ़ता है।

भारतीय नारियों की विशेषता है कि वे अर्धांगिनी पद पर गौरवान्वित अनुभव करते हुए अपने आदर्श से जगत् में प्रख्यात हुईं। सती शिरोमणि सीता भी उन आदर्श नारियों में शामिल है, जिनके नाम मात्र से कलमल धुल जाते हैं।

इस कथानक में सती की निश्छलता व सतीत्व शक्ति की विद्यमानता है। सीता के सतीत्व से यह बात पुष्ट होती है कि नियति भी उसके लिए सहकारी हो जाती है।

भरत क्षेत्र की मिथिला नगरी के राजा थे जनक, जो वेदान्त के पारंगत व योगदर्शन के ज्ञाता थे। वे विदेह नाम से विख्यात थे। उनकी पत्नी विदेहा थी। इस राजदम्पति की राजकन्या सीता थी। वह जानकी व वैदेही के रूप में जानी जाती है। उस मिथिलेश नन्दिनी सीता का एक भाई और था, जिसका बाल्यकाल में ही अपहरण हो गया। अतः अतिशय प्रेम व ममता सीता पर उड़ेल दी गई। वह अनेक कलाओं और विद्या से पूर्ण थी। मिलनसारिता के साथ वह अनिद्य सौन्दर्य की देवी थी। विवाह योग्य हो जाने पर योग्य वर की खोज प्रारम्भ हुई। स्वयंवर प्रथा ने इस कार्य को अत्यन्त सुगम बना दिया।

वैताद्वय पर्वत के दक्षिण क्षेत्र में अर्धबर्बर नाम का देश था। वहाँ के राजा अन्तरंग जो एक मलेच्छ जाति का था, उसने मिथिला पर आक्रमण कर दिया। मिथिलेश की सेना सीमित होने से वह परास्त हो रही थी। तब मिथिलेश ने अपने मित्र दशरथ, जो अयोध्या के राजा थे, से सहायता माँगी। दशरथ स्वयं अपनी सेना लेकर मिथिला आना चाहते थे, तब राम और लक्ष्मण ने कहा कि हम जाते हैं,

आपकी वृद्धावस्था है। दशरथ नृप ने अनुमति दे दी। दोनों भ्राता मिथिला आए।

युद्धस्थल पर दोनों भ्राताओं ने अपना अपूर्व पराक्रम प्रकटीकरण किया। उनके धनुष-बाणों की वर्षा से एक भी मलेच्छ नहीं टिक पाया और सारी सेना भाग खड़ी हुई। राजा जनक उनके पराक्रम व शौर्य से अत्यधिक प्रसन्न हुए। उनका यशोगान करते हुए सहर्ष अवध की ओर प्रस्थित किया। सीता में उनकी विनम्रता, शौर्य व पराक्रम को देख पूर्वानुराग अंकुरित हो गया।

मिथिला में स्वयंवर की रचना की गई। भरी सभा में अनेकानेक देशों के राजकुमार उपस्थित थे। इधर अयोध्या में राम भी आए। सभा मध्य वज्रावर्त नामक धनुष रखा गया, जो विशाल व प्राचीन था। शर्त रखी गई कि इस धनुष की कोई भी प्रत्यंचा सहित शर-संधान करेगा, उससे जानकी का विवाह होगा। अनेक राजकुमार अपनी-अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने लगे, परन्तु सफलता नहीं मिली। अन्त में राम ने उसे उठा लिया और प्रत्यंचा चढ़ा शर-संधान भी किया।

जानकी की वरमाला 'राम' के गले का हार बनी। सर्वत्र हर्ष ध्वनि संव्याप्त हो गई। श्री राम अर्धांगिनी सीता को लेकर लौटे और कुछ ही समय में सीता ने अपने सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार से सभी का दिल जीत लिया।

श्री राम के सक्षम होने पर राजा दशरथ ने अपना राज्यभार राम के कन्धों पर सौंपकर विरक्त होने की अभिलाषा रखी। राजा ने राजतिलक की घोषणा कर दी।

शूर्पणखापासक

राम के राज्याभिषेक की सूचना से मन्थरा द्वारा कैकेयी ने मायाजाल रचा और अपने पूर्व प्राप्त वचनों की स्मृति दिलाते हुए राजा दशरथ से कैकेयी ने भरत के लिए राज्य मांगा। राजा दशरथ अपने कृतसंकल्प से वचनबद्ध थे। वे हतप्रभ से हो मूर्च्छित अवस्था को प्राप्त हुए। भरत द्वारा राम के होते हुए राज्य अधिकार ग्रहण करने से ना कहने पर राम ने वनवास जाने का निश्चय किया और अपने पिता का वचन पूरा करने में सहयोगी बने। वनवास की तैयारियाँ होने लगी। राम माँ कैकेयी के पास गए और वन्दन करके वनवास के लिए अनुमति माँगी। बाद में कौशल्या व अन्य माताओं के पास गए और सभी को प्रणाम के पश्चात् वनवास की अनुज्ञा चाही। कौशल्या का मानस इनके वनवास जाने से अत्यधिक खिन्न था। सीता भी वनवास जाने लिए हो माता कौशल्या से कहने लगी कि मैं राम की अर्धांगिनी हूँ। मैं भी वन में रहते हुए पति के साथ कष्टसहिष्णु हो सुख-दुःख में पूर्ण साथ निभाऊँगी। पत्नी ही पति की मंत्री, मित्र, दासी, माता का दायित्व पूर्णतया निभा सकती है। जीवन के बसन्त इन्हीं के साथ बिताऊँगी। कौशल्या के पास इसके प्रत्युत्तर में कोई वैकल्पिक नहीं था। अतः सहर्ष अनुमति दे दी। लक्ष्मण ने भी राम का अनुसरण किया और महामंत्र नवकार के उच्चारण के साथ राम-सीता के अनुगमन में प्रस्थित हुआ। शतसहस्रजन उनकी वनयात्रा में सम्मिलित हो गए और राम-सीता व लक्ष्मण को दूर तक छोड़कर अनमने मन से लौट आए।

दण्डकवन में गोदावरी के तट पर एक पर्णकुटी निर्मित कर तीनों वहाँ रहने लगे। वनप्रदेश के कष्टों के प्रति उन्हें जरा भी खिन्नता नहीं थी। यह वन राक्षसों के उत्पात से भरा रहता था। एक समय लक्ष्मण को वन विचरण करते हुए गगन से एक चमकता दिव्यास्त्र उतरता हुआ दिखाई दिया। लक्ष्मण ने उठाया तो ज्ञात हुआ कि वह सूर्यास्त्र था। उन्होंने परीक्षण के तौर पर वहाँ रखे हुए बाँसों के झुरमुट पर प्रहार किया। उस झुरमुट में शम्बुक नामक राक्षस तन्त्र साधना कर रहा था, जिसके टुकड़े-टुकड़े हो गए।

शूर्पणखा शम्बुक की माता थी। प्रतिशोधात्मक भाव

15-16 जून, 2022

से संपृक्त शूर्पणखा जब राम के निवास स्थल के पास आई तो राम-लक्ष्मण की शारीरिक सम्पदा पर मुग्ध हो प्रणय याचना करने लगी, परन्तु शूर्पणखा की चाल का सामान्य प्रभाव भी न पड़ा। राम के संकेत से लक्ष्मण ने शूर्पणखा की नाक काट दी। इससे क्षुब्ध हो शूर्पणखा प्रतिशोधकारक भावों के साथ अपने भाई रावण के पास पहुँची और सारा हाल कह सुनाया।

शूर्पणखा ने रावण से कहा कि दण्डकवन में गोदावरी नदी के तट पर पर्णकुटी बनाकर रह रहे दो वनवासियों ने मेरे बेटे शम्बुक को मार डाला, लेकिन रावण पर इस बात का कोई असर नहीं हुआ। इस पर शूर्पणखा ने राम-लक्ष्मण से प्रतिशोध के लिए रावण का ध्यान सीता के रूप-सौन्दर्य की ओर आकृष्ट किया, जिसे रावण ने सीता के स्वयंवर के अवसर पर देखा था।

शूर्पणखा को इतने से सन्तोष नहीं हुआ। वह अपने पतिदेव के पास पहुँची और पति को शम्बुक की मृत्यु की सूचना देकर उसका कारण राम-लक्ष्मण को बताया। इस पर शूर्पणखा का पति क्रोध ज्वाला से जलता हुआ अन्य अनेक राक्षसों के साथ राम के पास आया। दोनों में परस्पर युद्ध हुआ और राम-लक्ष्मण ने सभी राक्षसों का संहार कर दिया।

रावण कपटपूर्ण साधु का वेश धारण कर पर्णकुटी के पास आकर भिक्षा के लिए याचना करने लगा। उस समय कुटी में सीता के अलावा कोई नहीं था। इसका लाभ उठाकर “अतिथि देवो भवः” की उक्ति को चरितार्थ करने आई सीता का रावण ने अपहरण कर पुष्पक विमान में लेकर लंका की ओर चल पड़ा। सीता राम-राम पुकारते हुए छटापटा रही थी, पर बलिष्ठ रावण के चंगुल से छूटना सामान्य बात नहीं थी। रावण ने सीता को लंका ले जाकर अशोक वाटिका में रखा और प्रणय हेतु निवेदन करने लगा, परन्तु सीता पर दुष्ट रावण का किंचित् भी प्रभाव न पड़ा। सीता ने रावण की इस कार्य के भर्त्सना करते हुए कहा कि तूने सतीत्व का प्रभाव नहीं देखा। यदि मुझे पुनः राम के पास नहीं पहुँचाया तो तेरा सारा वंश नष्ट हो

जाएगा। रावण सीता को विचलित करने के लिए अनेक यातनाएँ देने लगा।

राम पर्णकुटी में लौटे तो सीता के न मिलने से भावविह्वल हो गए। यत्र-तत्र-सर्वत्र खोजा, पर सीता का कहीं पता न लगा। घूमते हुए सुग्रीव के वहाँ पहुँचे। सुग्रीव के दूत चारों तरफ सीता की खोज करने लगे। बाद में हनुमान ने सीता का पता लगाकर बताया कि सीता लंका में अशोक वाटिका में है।

राम-लक्ष्मण ने सुग्रीव, जामवन्त, हनुमान एवं वानर सेना के साथ युद्ध सामग्री लेकर लंका पर चढ़ाई कर दी। परस्पर घमासान युद्ध हुआ। लक्ष्मण युद्ध स्थल पर मूर्च्छित हो गया तो उन्हें औषधि द्वारा पुनः होश में लाया गया। युद्ध करते हुए लंका का सर्वथा विनाश कर रावण का वध कर दिया। राम-सीता का पुनर्मिलन होने से चारों ओर हर्षमय वातावरण हो गया।

दीपमालिका के शुभ दिन राम-सीता एवं लक्ष्मण के अयोध्या पदार्पण पर सर्वत्र प्रसन्नता छा गई। भरत सिर्फ राम की पादुका को राज्य सिंहासन पर रखकर राज्य संचालन कर रहे थे। उन्होंने राम का राज्यतिलक किया।

किन्तु किसी को यह हर्षध्वनि आँखों में तिनके के समान चुभ रही थी। अयोध्या नगरी में एक काणा धोबी रहता था। उसकी पत्नी किसी कारण से घर विलम्ब से पहुँची तो धोबी ने धोबिन को घर से बाहर निकाल दिया और कहा कि मैं राजा राम की तरह नहीं हूँ कि सीता इतने दिन लंका में रही और बिना सोचे-समझे उसे स्वीकार कर लिया। उक्त भर्त्सना से राम का मानस उद्वेलित हो गया।

राम ने लक्ष्मण को इंगित करते हुए कहा कि सीता सर्वथा निर्दोष है किन्तु लोकापवाद के कारण सीता को एकान्त वन में छोड़ दिया जाए। सेनापति के साथ वनभ्रमण का कहकर सीता को रथारूढ़ कर राम की आज्ञा का पालन किया गया।

सीता के मन में थोड़ा भी दुर्भाव पैदा नहीं हुआ। उसने विचार किया कि मेरे पतिदेव खिन्न न होते हुए सम्यक्तया

राज्य व प्रजा का पालन करें और मेरे विषय में जरा भी ध्यान न दें। वास्तव में सतीत्व के ऐसे लक्षण उन्हें गौरव पद से विभूषित करते हैं। ज्ञातव्य रहे कि जब सीता वन में गई तब गर्भस्थ थी। वह निर्भीक हो एकान्त आगे बढ़े जा रही थी। कुछ दूरी पर सीता को कलरव सुनाई दिया। सीता ने देखा तो राजा वज्रजंघ अपनी प्रजा के साथ वनभ्रमण को निकले थे। जब राजा ने सीता को वनप्रदेश में अकेला देखा तो राजा आश्चर्यचकित हुआ। सीता ने अपना आद्योपान्त वृत्तान्त भ्रातृवर नृप को कह सुनाया। वज्रजंघ उन्हें अतिथि के रूप में अपने राजभवन में ले गया। सीता को वहाँ सर्वसाधन उपलब्ध थे किन्तु वह सादगीपूर्ण तरीके से अपना जीवन बिताने लगी। यथा समय सीता ने युगलिक पुत्रों को जन्म दिया। दोनों का क्रमशः अनवद्य लव एवं मदनाकुश नामकरण किया गया। दोनों पुत्र बड़े होकर अस्त्र-शस्त्र व शास्त्रों में निष्णात हुए। उनके पराक्रम जैसा इर्द-गिर्द कोई नहीं था। विवाह योग्य होने पर वज्रजंघ ने लव के साथ अपनी पुत्री व दूसरी बत्तीस कन्याओं का पाणिग्रहण कर दिया तथा कुश के लिए राजा वज्रजंघ ने राजा पृथुराज से कन्या की याचना की। पृथ्वीपुर के राजा ने शील-वंश की जानकारी के बिना अपनी कन्या देने से मना कर दिया। लव-कुश ने वज्रजंघ के साथ पृथ्वीपुर पर आक्रमण कर दिया। युद्ध में पृथ्वीपुर का राजा परास्त हुआ। अन्त में उसने अपनी राजकन्या का विवाह कुश के साथ कर दिया। अत्यन्त आग्रह पर सीता ने लव-कुश को अपने आख्यान का रहस्योद्घाटन किया। दोनों ने विचार किया कि बिना कारण हमारी माँ को इस प्रकार वनप्रदेश में छोड़ना कौनसी समझदारी थी? राम को इसका दण्ड अवश्य मिलना चाहिए। दोनों बालकों ने वज्रजंघ को साथ लेकर अयोध्या पर अकस्मात् आक्रमण कर दिया। राम-लक्ष्मण इस अचानक युद्ध से विचार सागर में निमज्जित हो गए। लव-कुश द्वारा शरवर्षा के सामने सिद्धहस्त योद्धा परास्त हो गए। राम और लक्ष्मण भी उनके सामने बौने नजर आने लगे।

नारद ऋषि आए और राम-लक्ष्मण को उदास देख

श्रमणोपासक

हर्षित होते हुए बोले कि अपने पुत्र व शिष्य से परास्त होने से अच्छी और क्या बात हो सकती है? तब लक्ष्मण ने कहा- आपश्री के रहस्यात्मक तथ्य से हम अपरिचित हैं। नारदजी ने बताया कि बाल योद्धा लव-कुश सीता के पुत्र हैं। चक्र ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि स्वकीय वंशधर पर चक्र का प्रभाव नहीं पड़ता। राम ने दोनों पुत्रों का आलिङ्गन किया। राम ने सीता को लाने के लिए पुण्डरीकपुर भेजा। सीता ने कहा कि स्वामी के प्रति मेरे दिल में कोई दुर्भाव न था, न अन्य प्रकार से उनकी अवहेलना की। वे मेरे प्राणनाथ हैं। उनका आदेश शिरोधार्य है। सर्वत्र हर्ष की लहर व्याप्त हो गई। सीता ने कहा कि अयोध्या में तब ही प्रवेश करूँगी जब अग्नि में प्रवेश कर लूँ।

उबलते हुए जलकुण्ड में सीता ने जनमेदिनी के समक्ष

नोट :- जैन रामायण के अनुसार राम-बलदेव, लक्ष्मण-वासुदेव एवं रावण-प्रतिवासुदेव थे। प्रतिवासुदेव का वध वासुदेव के द्वारा होता है।

15-16 जून, 2022

प्रवेश किया। सीता की निर्दोषता के कारण पानी शीतल हो गया। सर्व दिशाओं में जयरव की ध्वनि गुंजायमान होने लगी। चतुर्ज्ञान के धनी आचार्य अपने शिष्य परिकर से अयोध्या पदार्पण हुआ, धर्मदेशना हुई।

सीता को अपना पूर्वभव जानने पर ज्ञात हुआ कि किसी दीर्घ तपोरत साधक पर मिथ्या आरोप लगाने से उसे इस प्रकार विघ्न उपस्थित हुआ। सभी विघ्नों को धैर्य से सहती हुई सीता जीवन व्यतीत कर रही थी। मनोभूमि में संयम के बीज उर्वर हो रहे थे। परिजनों के समझाने पर भी सीता के संयम भावों पर कोई असर नहीं पड़ा। वह दीक्षित हुई और अपनी आत्मा को ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य से भावित करती हुई समय आने पर अनशन-संलेखना सहित बारहवें देवलोक में इन्द्र से शोभित हुई।

-क्रमशः

रचनाएँ आमंत्रित

भगवान महावीर के अहिंसा सन्देश को जन-जन के हृदय पटल पर जागृत करने एवं समाजोत्थान के साथ-साथ समाज कल्याण को समर्पित आपकी अपनी श्रमणोपासक पत्रिका का अंक आपके करकमलों में है। आप संघ के मुखपृष्ठ के नियमित पाठक है यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। हम आतुर हैं आपके सुझावों को जानने के लिए। कृपया श्रमणोपासक के सम्बन्ध में आप अपने सुझाव हमें निःसंकोच भिजवाएँ ताकि इसे और अधिक जनोपयोगी व रुचिकर बनाया जा सके। आपके सुझाव हमारा मार्गदर्शन करेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी प्रकार आगामी **15-16 जुलाई 2022** का धार्मिक अंक “**चातुर्मासि : विभिन्न यश्चिप्रेक्ष्य (धार्मिक, सामाजिक, प्राकृतिक, वैज्ञानिक एवं शैद्धांतिक) में**” विषय पर प्रकाशित किया जाएगा। रचनाओं की शब्द सीमा अधिकतम 500 शब्द रहेगी। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि मो. **9314055390** एवं ईमेल : **news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाओं के लिए श्रमणोपासक टीम सदैव आतुर हैं।

-श्रमणोपासक टीम

आज की जीवनशैली खराब या अच्छी

-डॉ. आभाकिरण गांधी, धागड़मऊ



जीव न एक लम्बी तीर्थ यात्रा है, जो जन्म के साथ प्रारम्भ होकर मृत्यु तक पहुँचकर पूर्ण होती है। इस यात्रा में

जीवन के सपाट रास्ते भी हैं और उबड़-खाबड़ खाइयों भी, कठिनाइयों की पथरीली चोटियाँ भी हैं तो सफलता के स्वर्ण शिखर भी। मनुष्य अनगिनत शक्तियों और संभावनाओं का संवाहक है। वह मिट्टी से बना है और उसे एक दिन मिट्टी में ही समा जाना है। अगर वह कोई भव्य पराक्रम करे तो वह मात्र मिट्टी नहीं, मिट्टी का दीया बन जाएगा, जिसमें दिव्यता की रोशनी जगमगाती है। वह अपने आपको अमृत बना सकता है। जीवन में दिव्यता आ जाए तो मनुष्य के लिए मनुष्य होना बड़े गौरव की बात है। देवत्व, मनुष्य जीवन का ही परम विकास है।

पशु और प्रभु दोनों मनुष्य रूपी जीवन के ही दो पहलू हैं। अगर कोई मनुष्यत्व से गिरता है तो वह पशु है और यदि मनुष्यत्व से ऊपर उठता है तो वह मनुष्य के रूप में भी प्रभु है। हर मनुष्य परम सत्ता से सम्पन्न है। वह शान्ति, प्रेम और ज्ञान का सागर है। आनन्द उसका मूल स्वभाव है और मुक्ति उसका अधिकार। अपने आपको भुला दिए जाने के कारण ही उसकी सारी विशेषताएँ विकृत हो गई हैं। इस विस्मृति ने ही मनुष्य को दुःखी, स्वार्थी और विकृत बनाया है। जीवन के प्रति सकारात्मक रुख अपनाकर हम जीवन को प्रभु का प्रसाद और वरदान बना सकते हैं।

जीवन में अनेक तरह की छोटी-मोटी समस्याएँ हैं, हम उनका समाधान तलाश सकते हैं। जो व्यक्ति अपनी समस्या का समाधान निकालने की कोशिश ही नहीं करता, सही मायने में तो वह खुद ही एक समस्या है।

आज मनुष्य खुद ही एक समस्या बनकर जी रहा है। उसकी जीवनचर्या में कहीं पर भी नियमितता नहीं है। समय पर सोना, उठना, बैठना, खाना-पीना, धर्माराधना करना एवं किस समय क्या करना इस ओर उसका ध्यान ही नहीं है।

पाश्चात्य संस्कृति की दौड़ में स्वयं को भुला दिया नररत्न बहुमूल्य मिला उसको यूँ ही गंवा दिया

आज की जीवनशैली बहुत ही खराब होती जा रही है। इसमें जीवन मूल्यों का महत्त्व नहीं। पैसों की अंधी दौड़ में परिवार, समाज, राष्ट्रधर्म से प्रेम नहीं, कर्तव्य पथ का निर्वहन नहीं। धर्म के प्रति उपेक्षा का भाव कर्तव्य के प्रति लापरवाही व्यक्ति को आनन्द नहीं देती है। उसका जीवन स्वयं के लिए बोझिल बन जाता है। वर्तमान में यह स्थिति हर जगह देखने को मिल रही है।

व्यक्ति की दिनचर्या बिल्कुल बिगड़ गई है। पहले के समय में प्रातः 4-5 बजे उठकर धर्माराधना की जाती थी, लेकिन आज तो सोने का समय ही 12-1 बजे और उठने का समय 8-9 बजे हो गया है। इस स्थिति में कैसे कोई धर्माराधना कर पाएगा? भाग-दौड़, कम्पीटिशन भरी जिन्दगी में पैसा प्रमुख हो गया है। पैसे के पीछे दौड़ते-दौड़ते जीवन की अमूल्य श्वासें यूँ ही खत्म होती जा रही है। जीवन एक प्रवाह है। इस प्रवाह को जिस तरफ मोड़ा जाए उसी तरफ मुड़ सकता है। जैसे नदी का प्रवाह निरन्तर गतिशील है, उसकी गतिशीलता सबको रमणिक लगती है, वैसे ही हमारे जीवन की भी गतिशीलता बनी रहे, ऊर्जा

का प्रवाह सम्यक् दिशा में प्रवाहित होता रहे।

**जीवन एक सुमन हैं
संस्कार उसकी सुगन्ध है
पवित्र विचारों की सौरभ ही
जीवन का सच्चा धन है**

मानव मन में अनन्त संभावनाएँ छिपी हुई हैं। जैसे बीज में विशाल वृक्ष बनने की शक्ति छिपी होती है, वैसे ही हमारे भीतर भी अनन्त शक्ति भरी हुई है। उस शक्ति का जागरण (उपयोग) हम कैसे करते हैं, यह हमारे पर निर्भर करता है।

जीवन को सही तरीके से जीना जीवन की सफलता है। इसी सफलता के आधार पर अनेक लोगों ने अपने जीवन को ऊपर उठाया है। वर्तमान जीवनशैली मानव मूल्यों से विहीन होती जा रही है। जिस जीवनशैली से हम स्वस्थ, मस्त, प्रसन्नचित्त रहते हुए जीवन में प्रसन्नता बिखेर सकते हैं। उसके विपरीत जीवनशैली से आज जहाँ देखो वहाँ सभी के मुखकमल मुरझाए हुए हैं। इस कुम्लाहट का कारण कहीं स्वजागृति का अभाव एवं संस्कृति के आचार-विचार-व्यवहार का अभाव तो नहीं? बीज की उत्पत्ति अदृश्य अंधकार में होती है। धीरे-धीरे वह बाहर की ओर प्रस्फुटित होता है तभी हमें दिखाई देता है। ऐसे ही अच्छाई या बुराई हमारे भीतर अदृश्य रूप में छुपी हुई है। उसका प्रस्फुटन कैसे होता है, यह हमें देखना है।

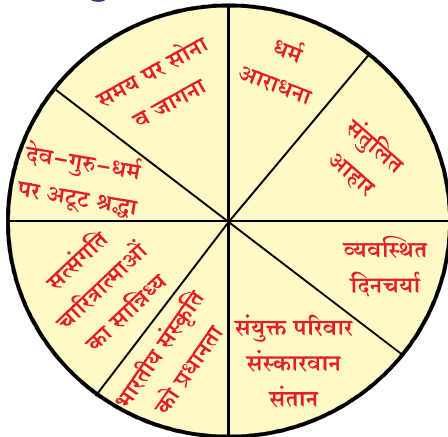
15-16 जून, 2022

पॉवर सबके पास है। उस पॉवर का उपयोग कैसे करना है, इसका बोध होना चाहिए। बोध के अभाव में जीवन का प्रस्फुटन नहीं होता। प्रबोधित जीवनशैली के लिए सच्चे मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है। वही मार्गदर्शक हमें हमारी मंजिल तक ले जाता है। आज की जीवनशैली कागज के फूलों जैसी हो गई है। बाहर से सुन्दर लगती है, पर भीतर कोई सुगंध नहीं। सुगंध के अभाव में जीवन का कोई महत्त्व नहीं। जिस भूमि पर हरियाली नहीं वहाँ रेगिस्तान जैसा अहसास होता है। जिस जीवनशैली में नम्रता, समर्पण, त्याग, प्रेम, सौहार्द्र, क्षमा, सहनशीलता, तितिक्षा आदि सद्गुण आदि हृदय में होते हैं वहाँ हरियाली होती है। यह हरियाली जीवन को तरोंताजा बनाए रखती है। गीलापन बाँधे रखता है, सूखापन तोड़ता है। वर्तमान जीवनशैली रूखी है, टूटी हुई है। जहाँ देखो वहाँ तनाव, टेंशन, मनमुटाव, खिन्नता आदि का वातावरण है। छोटे-से बड़े तक हर किसी के पास अपनत्व का अभाव है।

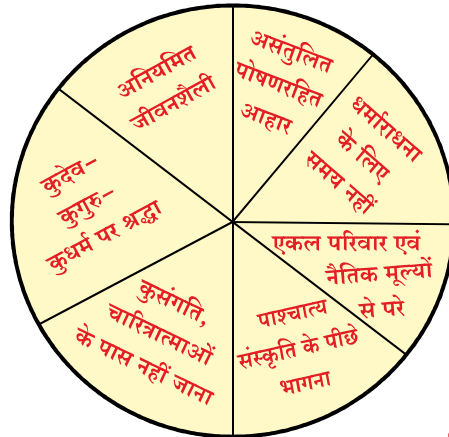
हम जिस संस्कृति में जन्मे, पले, बड़े हुए वह संस्कृति इतनी महान् है कि उसकी तुलना हम किसी ओर से नहीं कर सकते हैं। उस संस्कृति में रहकर भी हम भिखारी हैं तो यह हमारी भूल है। इस भूल को हमें मिटाना होगा, तभी हर पल आनन्द की अनुभूति होगी।

**आनन्द हमारा धाम है, आनन्द सुखों की खान है।
आनन्द में ही जीवन है, अविचल सुख आनन्द है।।**

पुरानी जीवनशैली



वर्तमान जीवन शैली



आर्तध्यान क्यों होता है?

-रत्ना ओस्तवाल, राजनांदगाँव

सहज भाव और स्वाभाविक जीवन जीने का व्यवहार ही एक उत्तम ध्यान है। संसार के राग-द्वेष और भोग-विलास की वासना से हटते हुए मन की प्रवृत्तियों को रोककर मन को आत्मसाधना में लगाना ध्यान है। ध्यान-साधन और सिद्धि भी है।

एक लक्ष्य पर चित्त को एकाग्र करना ध्यान है। तत्त्वार्थ सूत्र के अध्याय 9 सूत्र 26 में कहा गया है-

उत्तम संहनन स्यैकाग्र चिन्ता निरोधौ ध्यानम्।

अर्थात् उत्तम संहनन वाले व्यक्ति द्वारा किसी एक विषय में अंतःकरण की विचारधारा को स्थापित करना ध्यान का लक्षण है। मन की विचारधारा क्षण-क्षण में बदलती है। इसे प्रयत्नपूर्वक एक विषय में स्थिर करना ध्यान है। जिनेश्वर भगवंतों ने योग-निरोध को भी ध्यान कहा है। शुभ उपयोग भी ध्यान है। अपने लक्ष्य में लीन रहना ध्यान है।

यह ध्यान का विषय छद्मस्थ में ही संभव है। अतः आगम में कहा है कि ध्यान बारहवें (12वें) गुणस्थान तक होता है। छद्मस्थ के ध्यान का काल-परिमाण अधिक से अधिक अंतर्मुहूर्त्त तक है।

योगशास्त्र में भी निर्विकल्प भाव को ध्यान कहा है। ध्यान आभ्यंतर तप होने से ध्यान के बिना सम्पूर्ण कर्मों का क्षय नहीं हो सकता। सभी मोक्षगामी जीवों में ध्यान रूपी तप अवश्य होता है। कर्मों का अधिक क्षय ध्यान द्वारा होता है। सभी केवली भगवंत ध्यान द्वारा अघाति कर्मों का क्षय होने पर सिद्ध होते हैं, लेकिन ध्यान से एकांत कर्म क्षय होते हैं, ऐसा नहीं है। ध्यान रूपी बल से संसार के विविध कार्य भी होते हैं। ध्यान में 'भाव' शुभ और अशुभ में से

जिस भाव के साथ ध्यान जुड़ता है, उसके अनुसार कर्मक्षय और कर्मबंध होता है।

महामनिषियों के संयम और तप का आधार स्तंभ ध्यान है। भगवान महावीर ने तप और संयम रूपी ध्यान का अलग महत्त्व बताया है। जैसे- विज्ञान शोध साहित्य रचना, व्यापार, धंधा, तंत्र-मंत्र, योग, भक्ति आदि ध्यान की ही विशेषताएँ हैं।

अब हम चिंतन करते हैं यह सार्वभौम ध्यान शुभ-अशुभ मार्ग पर चलकर अपने क्या-क्या रूप दिखाते हैं। वैसे तो शास्त्रों में 4 प्रकार के ध्यान बताए हैं- 1. आर्तध्यान 2. रौद्रध्यान 3. धर्मध्यान 4. शुक्लध्यान। अशुभ भावों में यह ध्यान क्यों लगता है? कैसे लगता है? और इसका क्या परिणाम है- यह जानना अनिवार्य है। अभी केवल आर्तध्यान के विषय पर ही चिंतन करना है।

आर्तध्यान- आर्त अर्थात् दुःख से निर्मित या दुःख के निमित्त होने वाला ध्यान आर्तध्यान है। दुःखी प्राणी का ध्यान आर्तध्यान है। ठाणांग सूत्र स्थान 4-3-1 में आर्तध्यान को दुःख से निर्मित या दुःख के निमित्त ध्यान कहा है।

समवायांग सूत्र 4 के अनुसार मनोज्ञ वस्तु के वियोग और अमनोज्ञ वस्तु संयोग आदि कारणों से चित्त की घबराहट होना, आकुलता, व्याकुलता होना आर्तध्यान है।

दशवैकालिक सूत्र की टीका के अनुसार जीव मोहवश राज्य का उपभोग, शयन, आसन, वाहन, स्त्री, गंध, माला, रत्नाभूषण आदि में जो अतिशय इच्छा करता है, वह आर्तध्यान है।

1. अनिष्ट संयोग आर्त्तध्यान
2. ईष्ट वियोग आर्त्तध्यान
3. रोग, चिंता आर्त्तध्यान
4. निदान आर्त्तध्यान

1. अनिष्ट संयोग आर्त्तध्यान- अमनोज्ञ वस्तु का संयोग होने पर दुःख से व्याकुल हो उसे दूर करने के लिए लगातार चिंता में डूबे रहना। अमनोज्ञ का अर्थ शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श, विषय के वियोग की चिंता करना। ऐसे समय में जीव अधैर्य, सुखशीलता, सहनशीलता के अभाव में आर्त्तध्यान करता है। इस भेद का पहला कारण द्वेष है। उदाहरण- अपमान के शब्दों को सुनकर इच्छा के विरुद्ध कार्य होने पर मन विचलित हो जाना, किसी पर घृणा करना आर्त्तध्यान है।

2. ईष्ट वियोग आर्त्तध्यान- पाँचों इंद्रियों के मनोज्ञ विषयों के प्रति जैसे माता-पिता, भाई-बहिन आदि का वियोग होना इष्ट वियोग आर्त्तध्यान है।

3. रोग चिंता आर्त्तध्यान- शारीरिक, मानसिक पीड़ा होने पर उसके निवारण की व्याकुलतापूर्वक चिंता करना। असातावेदनीय कर्म के उदय से सिरदर्द, बुखार, अभी हाल में दो वर्ष तक लगातार कोरोना से पीड़ित आदि रोग का आतंक होने पर उसकी चिकित्सा के लिए व्याकुल होना। इन वर्षों में कोरोना रूपी भयानक रोग से पीड़ित व्यक्तियों को रोग की चिंता में आर्त्तध्यान करते देखा गया। कोरोना का नाम सुनते ही दुःखी होना, रोग-चिंता आर्त्तध्यान है। रोग से घबराकर जोर-जोर से रोना, आत्महत्या का विचार करना, ये सब रोग-चिंता आर्त्तध्यान है। कभी-कभी मन में चिंतन करना कि मैंने अमुक वस्तु खाई इसीलिए यह रोग आया। डॉक्टर ने मुझे सही दवा नहीं दी। इसकी दवाई में दम नहीं, ऐसा चिंतन करना आर्त्तध्यान है।

कभी-कभी ऐसा चिंतन करना कि मुझे लकवा, रक्तचाप, कैंसर तो नहीं होगा। मैंने मास्क नहीं पहना है

आदि चिंता करना आदि रोग-चिंता आर्त्तध्यान है। इस तरह से रोग-चिंता आर्त्तध्यान के कई उदाहरण हैं।

4. निदान आर्त्तध्यान- निदान आर्त्तध्यान में भोगों की लालसा से उत्पन्न आसक्तिपूर्ण मन असंकल्प, तीव्र इच्छा निदान आदि आर्त्तध्यान हैं। उपदेश आदि सुनते समय चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव के रूप और ऋद्धि को देखकर या सुनकर आसक्ति लाना और मन में सोचना कि मैंने जो तप, संयम आदि धर्म कार्य किए हैं उनके फलस्वरूप मुझे भी रूप, ऋद्धि प्राप्त हों। कभी-कभी पूर्व में भोगे हुए कर्मों को याद करना, विकथा करना, यह आर्त्तध्यान नरक या तिर्यच गति में ले जाने वाला होता है।

आर्त्तध्यान के 4 लक्षण-

1. **आक्रंदन-** जोर जोर से चिल्लाना, ऊँचे स्वर में रोना, विलाप करना आदि।
2. **शोचन-** आँखों में आँसू लाकर हीन भाव लाना अर्थात् शोक करना, खेद करना और दीनता जताना।
3. **परिवेदन-** विलाप करना, बार-बार क्लिष्ट भाषण करना, विलाप कर आँखों से आँसू टपकाना।
4. **तपनता-** अश्रुपात करना, रोती हुई आँखों में आँसू लाना, यह आर्त्तध्यान कई दुःखों का कारण है। अपने ही बनाए हुए अशुभ भावों से आर्त्तध्यान निर्मित होता है। अतः आर्त्तध्यान द्वेष का, चिंता का नरक और तिर्यच गति का कारण बनता है। इसलिए जिनवाणी का ज्ञान, सहन करने की शक्ति, भौतिक इच्छाओं को घटाने की शक्ति, रोग, बीमारी आने पर सहनशीलता, आत्मविश्वास की प्रबलता, सहज और सरल बनने की प्रवृत्ति आदि गुणों को धारण करने वाला साधक आर्त्तध्यान से बच सकता है। अनुकूलता और प्रतिकूलता में मन को सरल बनाएँ और मन में ये संकल्प करें कि हे प्रभो! मेरा जीवन निंदा और प्रशंसा, मान और अपमान में धैर्य रखकर समता भाव धारण करें और मैं आर्त्तध्यान का त्याग करूँ।

TRADITIONAL v/s MODERN LIFESTYLE: MAKING A CHOICE

–Urja Mehta, Indore

Which is better?

The debate between traditional and modern lifestyle is unending. Some people like the old traditional lifestyle while others like the new modern lifestyle. But be it traditional or modern, both have pros and cons.

As we are in the year 2022, it's hard not to look back on the past years and reflect on how different everything is now. Just about twenty-five years ago, the world was a completely different place than it is today.

As people of the 21st century, we have had it better than any other generation ever. In comparison with what other generations went through in terms of war, famines, droughts, etc., our lives have been a cakewalk with the level of comfort, convenience and technology we have been blessed with.

Let us look at the list of positive lifestyle changes from the two different centuries:-

BETTER THEN (OLD)	BETTER NOW (NEW)
Easy-going life	Equality
The freedom to go out and play in the open	Easier and faster access to the world
More traditional values	Better sanitation
More time for self reflection	Technologically advanced
Fresh food and less adulteration	Advanced educational resources
Life without social network	Comfortable and luxurious living
More peaceful	Fast-paced life
Sustainable	Liberty and Freedom
Family-oriented	Abundant business opportunities

Look at the below list and distinguish between good and bad lifestyle choices based on your life experience:-

Lifestyle Choices	GOOD	BAD	Lifestyle Choices	GOOD	BAD
Eating fast food and unbalanced diet		✗	Money-minded		
Healthy Diet	✓		Healthy Competition		
Lack of sleep			Alcoholism		
Time Management and Punctuality			Spirituality		
Being a Philanthropist			Stress and Anxiety		
nactivity and Laziness			Personal Satisfaction		
			Addiction to social media		
			Connectivity and friendliness		

Making lifestyle changes that stays with us forever

A lifestyle choice is a personal and conscious decision which is based on personal life experiences. For example-

- * If you exercise every morning by riding your bicycle, then you made a positive lifestyle choice to increase your physical wellness.
- * If you choose not to drink alcohol, then you choose to avoid serious potential consequences, such as a car crash while driving drunk or damage to your internal organs, such as your liver.

Those are all active lifestyle choices that benefit our health and life.

From the above activity, we now know what is good and what is bad for us. Although making a change in lifestyle is challenging, especially when there are a lot of things that need a change. It is a long process that needs dedication along with consistency. Even when you're ready to make a change, the difficult part is committing and following through. Start with careful planning and setting small goals.

'Life' is important; Lifestyle is a part of living a pleasant life. Let us adapt to all the positives of both old and modern lifestyles, and organize our lives in a way that everyone around us is happy, healthy and heart-warming.

भक्ति रस

अमृत की एक बूंद

-वंदना बाबेल, राजसमंद

<p>इंसान से ज्यादा कुदरत में समाया कुदरत की अदम्य शक्ति कण-कण में व्याप्त है तू धरती से अम्बर तक बारिश की बूंदों से पलकों पे ठहरे अश्रु तक हर रूप में समाया है तू जीवन का सर्जन स्तंभ है तू पानी रे पानी जन-जन की जान है तू अमृत से लेकर विष या सागर की मचलती हो लहरें सबमें ही पाया तुझको है</p>	<p>मन की आग हो या हो तन की मलिनता तड़पती धरती हो या धड़कती रुह सबका शुकून बन जाता है तू बिन खुशबू भी महकाता जीवन बेरंग होकर भी जीवन में रंगीनियाँ तुझसे ही शुष्क पर्वतों पर झरते झरने तुझी से बर्फ की चादर से पहाड़ों पर जन्नत</p>	<p>तू बन जाता है अपने शस्त्रे खुद बनाता हर पत्थर से टकराकर भी अयनी मंजिल तय कर जाता धीर, गम्भीर, क्षमाशील हर रूप में तू ढल जाता जीवन का आधार जल ही तो बन जाता है तुझ बिन जीवन शून्य बन जाता जीवन का शृंगार है तू सृष्टि का आधार है तू बेशकीमती बहुमूल्य तेरी हर एक बूंद... बूंद है</p>
---	--	--

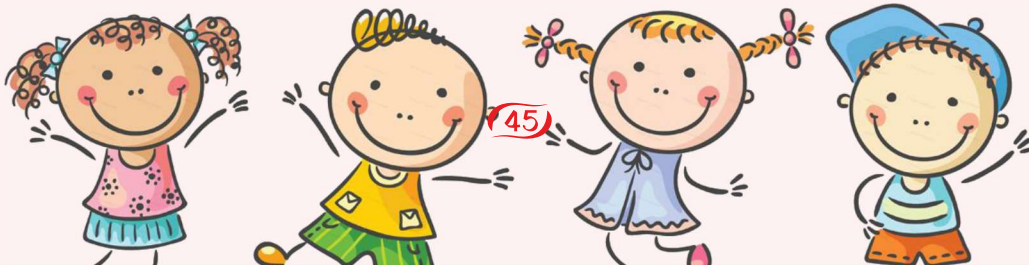
चारित्रशील जीवन जानें

जय जिनेन्द्र बच्चों!

हम लाए हैं श्रमणोपासक के **Good Box** में आपके लिए कुछ **Interesting!** हमारे साधु-साधवियों का जीवन कैसा होता है आप जानना चाहते हैं? उनका **Daily Routine**, उनकी **Activities** शायद कुछ बच्चों ने देखी होगी, **so lets go to the.....**

1. सूर्योदय से पूर्व उठ जाते हैं, फिर प्रतिक्रमण करते हैं, फिर छोटे साधुजी बड़े साधुजी को वन्दना करते हैं।
2. प्रातःकालिन मंगलमय ध्यान व प्रार्थना का क्रम चलता है।
3. श्रावक-श्राविकाओं के लिए प्रार्थना फिर आचार्य भगवन्/महापुरुषों द्वारा मांगलिक।
4. प्रतिलेखन अर्थात् उनके पास रहे हुए सारे सामान को अच्छी तरह से देखना, जिससे कि अहिंसा का पालन हो सके। उसके बाद कुछ संत गोचरी व पानी के लिए जाते हैं और बाकी अध्ययन करने लग जाते हैं।
5. जब संत गोचरी लेकर आते हैं तो 'निसीहि-निसीहि' शब्द बोलते हैं, फिर वे गोचरी आचार्य भगवन्/बड़े म.सा. को दिखाते हैं। उन्होंने गोचरी लेते समय क्या प्रश्न किए, वे आचार्य भगवन्/बड़े म.सा. को बताते हैं। गोचरी के समय पूछे गए प्रश्नों को 'गवेषणा' कहते हैं। यह प्रक्रिया साधु जितनी बार गोचरी जाएंगे उतनी बार दोहराएंगे।
6. सभी साधु शान्ति से एक साथ गोचरी करते हैं। भोजन के प्रति बिना किसी भी राग-द्वेष के भाव के साधारणतया वे प्रासुक और एषणीय (अचित्त और कल्पनीय) सभी वस्तुएँ खाते हैं। गोचरी हो जाने के बाद कम से कम पानी में पात्रों की सफाई की जाती है।
7. उसके बाद आचार्य भगवन्/बड़े म.सा. के निर्देशानुसार एक साधुजी प्रवचन देने जाते हैं, बाकी साधु अपने आप को किसी धार्मिक कार्य में व्यस्त कर लेते हैं।
8. प्रवचन के पश्चात् सुबह लगभग 11:30 बजे साधु गोचरी के लिए जाते हैं।
9. दोपहर में लगभग 2 बजे चारित्र आत्माओं, श्रावक-श्राविकाओं को अध्ययन करवाते हैं और शेष साधुजी आचार्य भगवन्/बड़े म.सा. के साथ प्रश्नोत्तर व जिज्ञासा-समाधान करते हैं।
10. सायं लगभग 4 बजे सभी साधुजी प्रतिलेखन करते हैं और उसके बाद गोचरी के लिए जाते हैं।
11. सूर्यास्त के पश्चात् प्रतिक्रमण करते हैं और रात हो जाने के कारण वे कितना नहीं पढ़ सकते इसलिए दिनभर में जो पढ़ा उसे दोहराते हैं व कुछ साधुजी ध्यान भी करते हैं।
12. रात्रि लगभग 10:00 बजे पूर्व पौढ़ (सो) जाते हैं, क्योंकि जल्दी सोना और जल्दी उठना शरीर, दिमाग व आत्मा के लिए लाभदायक है। साधुजी इस बात पर पूर्ण विश्वास करते हैं।

तो बच्चों! देखा आपने हमारे म.सा. कितने **Disciplined** और **Organized** होते हैं। एक मिनट का भी आलस्य नहीं करते हैं। तो ये पढ़कर सोचिए मत, तुरन्त एक नियम लीजिए। अगर आपके आस-पास में म.सा. विराजित हैं तो आप दर्शन करने जरूर जाएँ और यदि म.सा. विराजित नहीं है तो अपने माता-पिता के पास बैठकर चारित्रात्माओं के बारे में अधिकाधिक जानने का प्रयास करें।



श्रमणोपासक विशेषांक

शीघ्र ही होगा नव आगाज

सादर जय जिनेन्द्र!

समय की गति अति तीव्र है, जिसके साथ चलने का साहस विरले महापुरुष ही कर सकते हैं। समय की माँग एवं आवश्यकता को देखते हुए आचार्य भगवन् निरन्तर जन-जन को धर्म साधना हेतु पुरजोर प्रेरणा दे रहे हैं। जनमानस के आत्मकल्याण हेतु उनका चिन्तन निरन्तर गतिशील है और उनके चिन्तनरूपी आशीर्वचनों व प्रवचनांश को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य संघ का मुखपत्र “श्रमणोपासक” अनवरत कर रहा है।

अंधानुकरण में सामान्य जनमानस ने एक ऐसी जीवनशैली अपना ली है, जिसका कोई ओर-छोर नहीं है। उसमें ना धर्म के लिए स्थान है, ना साधना का समय। ना चिन्तन करने की चिन्ता है, ना जिनवाणी सुनने की इच्छा। ना कर्मों का भय है, ना ही सम्यक्त्व की समझ। लगभग सभी मिथ्यात्व में डूबते हुए श्रावकाचार को भूलते जा रहे हैं।

महापुरुषों द्वारा आत्मकल्याण हेतु प्रदत्त चिन्तनों को ध्यान में रखते हुए एक ‘विशेषांक’ प्रकाशित किया जाना संभावित है, जिसका विषय **“श्रावकाचार व सम्यक्त्व”** रहेगा।

विशेषांक हेतु आप प्रतिभावान एवं सुज्ञ लेखकों, मनीषियों एवं पाठकों के सुझाव, विचार, रचनाएँ, लेख, कविताएँ, भजन आदि सादर आमंत्रित हैं। आप सुधीगण विशेषांक के सन्दर्भ में अपने विचार अधिकाधिक भेजने की कृपा करें।

विशेषांक हेतु निम्न विषयों पर रचनाएँ आमंत्रित हैं-

1. सम्यक्त्व की महिमा
2. सम्यक्त्व का अर्थ
3. देव, गुरु, धर्म और सम्यक्त्व
4. सम्यक्त्व सम्बन्धी जिज्ञासा-समाधान
5. सम्यक्त्व का उदय व्रतों की चेतना
6. मिथ्यात्व के 10 भेद के प्रयोगात्मक उदाहरण
7. श्रावक का अर्थ
8. श्रावक जीवन व व्रतों की महिमा
9. श्रावक के गुण
10. श्रावकाचार
11. व्रतधारी श्रावक का वातावरण
12. गृहस्थ व श्रावक की विचारधाराओं में अन्तर
13. प्राचीन श्रावक V/s वर्तमान श्रावक
14. श्रावक के तीन मनोरथ
15. ब्रह्मचर्य एक सम्पत्ति है
16. शाकाहार : सर्वोत्तम आहार
17. रात्रिभोजन त्याग : वैज्ञानिक धारणा
18. कषायमुक्त जीवन : आरोग्य जीवन
19. अच्छे श्रोता की क्या पहचान
20. बारह व्रतों का संक्षिप्त स्वरूप
21. स्वधर्मी वात्सल्य की ओर कदम बढ़ाएँ
22. धर्म संस्कार बिन जीवन सूना
23. Jain life style is an ideal life style

विशेष निवेदन है कि आपकी रचनाएँ सुन्दर व स्पष्ट अक्षरों में 1000-1100 शब्दों में समाहित करते हुए अपने नाम, पते व मोबाइल नं. सहित शीघ्रातिशीघ्र व्हाट्सएप्प नं. **9314055390** अथवा ईमेल **news@sadhumargi.com** के माध्यम से भिजवावें।

-सह-सम्पादिका

धैर्य और सहनशीलता जीवन में जरूरी -**आचार्य श्री रामेश**
तीर्थकर देवों की वाणी अनमोल -**उपाध्याय प्रवर**

19 वर्षों बाद हुआ युगपुरुष परम श्रद्धेय आचार्य श्री रामेश एवं उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. का मेवाड़ की पुण्यधरा पर आगमन

गुरु के मिले चरण, कि मेरे रोम खिल गए।

पुलकित हुआ है मन, कि मेरे रोम खिल गए।।

जन-जन को सच्चाई, ईमानदारी, नैतिकता, सदाचार व सच्चे धर्म का बोध कराने वाले रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, आराध्यदेव आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा वीर भूमि मेवाड़ क्षेत्र में अध्यात्म की पावन गंगा निरन्तर प्रवाहित कर रहे हैं। उभय महापुरुषों की कठोर संयम साधना से पंचम आरे में भी चौथे आरे की छटा देखने को मिल रही है। अलौकिक महापुरुषों के दर्शन व आगमसम्मत प्रवचन श्रवण एवं जिज्ञासा-समाधान से धर्मपिपासु जनता जीवन की नई राह प्राप्त कर रही है।

16 मई 2022, देवरिया (भीलवाड़ा)। प्रातःकालीन शुभ बेला में मंगल प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करे हुए आचार्य श्री रामेश ने फरमाया कि “ किसी घ्राणी का हनन नहीं होना चाहिए। किसी भी घ्राणी की हिंसा नहीं होनी चाहिए। सभी घ्राणियों के साथ मित्रता का व्यवहार होना चाहिए। संगति का बहुत बड़ा प्रभाव होता है। अच्छे की संगति करोगे तो अच्छे बन जाओगे और बुरे की संगति करोगे तो बुरे बन जाओगे। सज्जन की संगति से सज्जनता आ जाएगी। जो परमार्थ का ज्ञाता है उसका संसर्ग करोगे तो तुम्हारा भी परमार्थ से संसर्ग हो जाएगा। ज्ञानी से ज्ञानी मिले करे ज्ञान की बात। धन, परिवार छोड़ना सरल है किन्तु मान, बड़ाई, ईर्ष्या छोड़ना बहुत कठिन है।”

श्री सौरभमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि प्रवचन मात्र श्रवण के लिए ही नहीं अपितु इसे जीवन में उतारने का लक्ष्य रखें। हम बातों के बादशाह नहीं अपितु आचरण के आचार्य बनें।

शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने “**तू साँचो रे थारो साँचो रे दरबार रे**” गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। पक्खी प्रतिक्रमण करने का कई भाई-बहिनों ने संकल्प लिया।

50 एकासन, टी.वी. का त्याग, बाजार की मिठाई का त्याग, 12 उपवास, 12 आयंबिल, माह में एक दिन मोबाइल का त्याग आदि प्रत्याख्यान हुए।

श्री साधुमार्गी जैन संघ, तेरापंथ धर्मसंघ एवं ग्रामवासियों की धर्मसेवा भावना अत्यन्त प्रशंसनीय रही। देश-विदेश के श्रद्धालुओं ने लाभ उठाया। आचार्यदेव एवं उपाध्याय प्रवर सहित संतवृन्द का देवरिया से 4 किमी. का विहार कर

उल्लाई में मंगलमय पदार्पण हुआ।

17 मई, उल्लाई (भीलवाड़ा)। प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परमप्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि “धर्म अनासक्ति, निर्लिप्ता, समानता, निर्मलता, संतोष में है। हिंसा में रत रहेंगे तो अहिंसा के दर्शन नहीं हो पाएँगे। साधु योशाक पहनने से कोई धर्मात्मा नहीं हो जाता। धर्म का सम्बन्ध योशाक से नहीं, भावों से, विचारों से, हमारी आत्मा से है। आत्मा की पवित्रता जितनी अधिक होगी धर्म के हम उतने ही निकट होंगे। साधु जीवन सबसे श्रेष्ठ जीवन है। यदि साधु नहीं बन सकते तो कम से कम 12 व्रत स्वीकार कर उच्चकोटि के श्रावक अवश्य बनें। प्रतिदिन 14 नियम चितारें तो समुद्र जितना पाप घड़े जितना हो जाता है।”

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि “तीर्थकर देवों की वाणी सुनने एवं महान धर्म गुरु मिलने से हमारी जीवनशैली में कितना बदलाव आया, चिन्तन करें। साधु हो या श्रावक, दोनों को सुबह-शाम भावपूर्ण प्रतिक्रमण कर दोषों का परिमार्जन करना चाहिए।”

कई भाई-बहिनों ने प्रतिदिन पन्द्रह मिनट प्रतिक्रमण सीखने का संकल्प लिया। कइयों ने चार महीने में प्रतिक्रमण याद करने का नियम लिया। अनेक गुरुभक्तों ने खाना खाते समय टी.वी., मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का नियम लिया। दोपहर में श्री आदर्शमुनिजी म.सा. ने धर्मतत्त्व का बोध कराया।

18 मई, डेलाना (भीलवाड़ा)। उल्लाई से 8 किमी. का विहार करते हुए आचार्यदेव का अपने शिष्यों सहित डेलाना में जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि साधु हो या श्रावक, दोनों को गुणवान होना चाहिए। महापुरुषों का मात्र गुणगान नहीं करें अपितु उनके गुणों को जीवन में धारण करें। प्राणी मात्र के प्रति सम्मान भाव रखें। किसी भी प्राणी के साथ भेदभाव नहीं रखें। समभाव की साधना को निरन्तर आगे बढ़ाएँ।

कई भाई-बहिनों ने आठम-चौदस को रात्रिभोजन नहीं करने का नियम लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम हुए। गाँव-गाँव में श्रद्धा का जनसैलाब उमड़ रहा है।

19 मई, गंगापुर (भीलवाड़ा)। धर्मनगरी गंगापुर में युगपुरुष आचार्य श्री रामेश एवं उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि का गगनभेदी जयघोषों व मंगल गीतों के साथ समता भवन, नानेश चौक में पदार्पण हुआ। जूनावास स्कूल में विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि “अहिंसा, संयम, तप में जी रहे हैं तो धर्म है। असंयम में जी रहे हैं तो अधर्म है। मन से बुरे विचार सोचना भी मानसिक हिंसा है, वह धर्म नहीं होगा। भले ही सफेद योशाक में बैठे हैं, लेकिन जब तक मन, वचन, काया, तीनों से धर्म में लगेंगे नहीं तब तक सच्चे धर्म की आश्रयना नहीं कर पाएँगे। महान आत्मा वह है, जिसकी मन, वचन, काया एक हो। उद्यम भाव में जीना धर्म है। जहाँ आत्मा का स्मरण होता है वहाँ हम धर्म में जी रहे हैं। बाहर कुछ, भीतर कुछ और होगा तो धर्म नहीं हो सकता। मेरे साथ किसी ने बुरा बर्ताव किया, पर मैं ऐसा बर्ताव किसी के साथ नहीं करूँगा। कोई मेरे लिए काँटा बोए तो उसके लिए भी मैं फूल बोऊँगा। घर, परिवार, समाज में सम्यक्ति आदि के विषय में विवाद की स्थिति उत्पन्न नहीं करूँगा।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि पाँचवें आरे में भी धर्म का प्रभाव है। नवकार महामंत्र का प्रभाव कल भी था, आज भी है और कल भी रहेगा। महान गुरु की शरण मिलने के बाद भी उनके आयामों को आत्मसात् नहीं किया तो

हमारी सच्ची भक्ति और समर्पणा नहीं है।

शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री रश्मिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुरचिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अनाकारश्रीजी म.सा. आदि ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किए। स्थानीय श्रावकों ने 19 वर्षों बाद आचार्य भगवन् के आगमन पर अधिकाधिक विराजने की विनती की। महिला मण्डल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। महेश नाहटा ने महापुरुषों के दिव्य गुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। इस अवसर पर श्री साधुमार्गी जैन संघ, तेरापंथ संघ, श्रमण संघ, माहेश्वरी एवं अग्रवाल समाज तथा अन्य अनेक समाज के धर्मप्रेमी भाई-बहिन बड़ी संख्या में उपस्थित थे। अनेक भाई-बहिनों ने सम्पत्ति एवं घर-परिवार को झगड़ों को कोर्ट में नहीं ले जाने का संकल्प लिया।

माह में एक दिन मोबाइल का त्याग कई भाई-बहिनों ने 12 उपवास, 12 एकासना करने का संकल्प लिया। दोपहर में आचार्य भगवन् के सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा आदि हुए। श्री अटलमुनिजी म.सा. ने भाई-बहिनों को धर्मतत्त्व बोध करवाया। बच्चों के शिविर में श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने धर्म संस्कार बोध प्रदान किया। चातुर्मास जैसा ठाठ देखने को मिला।

20 मई, गंगापुर (भीलवाड़ा)। प्रातः मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। तेरापंथ भवन में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववन्दनीय आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “**ग्राणीमात्र के साथ मैत्रीभाव होना चाहिए। हमारे द्वारा किसी जीव की हिंसा न हो, ऐसा हमारा प्रयास होना चाहिए। चाश्त्रात्माओं के लिए आहार बनाना नहीं। साधु-साध्वी सदैव निर्दोष आहार लेते हैं। सुयात्रदान की तीनों लोक में महिमा होती है।**” आचार्य भगवन् ने अर्थ एवं अनर्थ हिंसा की हृदयस्पर्शी व्याख्या की।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने गुरुभक्ति भजन “**नाना से तुम तुम से नाना, लगता चेहरा एक समाना**” प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि प्रभु गुरुभक्ति कीर्तन में लय के साथ लीन हो जाएँ, एकाकार हो जाएँ, तदनुरूप हो जाएँ। शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री रश्मिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुरचिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अनाकारश्रीजी म.सा., साध्वी श्री निखारश्रीजी म.सा. आदि ने भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की। स्थानीय गुरुभक्त ने आचार्य श्री रामेश की जीवन झांकी प्रस्तुत की।

दोपहर में ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम हुए। संत-महापुरुषों ने धर्मतत्त्व का बोध कराया। 3 अगस्त को उदयपुर में दीक्षित होने वाली मुमुक्षु बहिन सुश्री सिद्धीजी नाहर-धमतरी का श्री साधुमार्गी जैन संघ-गंगापुर, गिलुण्ड एवं सकल जैन संघ सहित अन्य कई संघों द्वारा एक अलग कार्यक्रम में आत्मीय स्वागत व अभिनन्दन किया गया। अध्यक्षजी सहित अनेक पदाधिकारियों व सदस्यों ने तिलक, माल्यार्पण, खोल भराई एवं शॉल ओढ़ाकर अभिनन्दन किया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 का गंगापुर से **सहाड़ा** में जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ।

21 मई, गंगापुर (भीलवाड़ा)। समता भवन में मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि भौतिक पदार्थों- धन, सम्पत्ति, परिवार में सच्चा सुख नहीं है। सच्चा सुख है अध्यात्म में, देव-गुरु-धर्म में। आज धर्म, सत्संग, स्वाध्याय, प्रवचन श्रवण के लिए हमारे पास समय नहीं है। मोबाइल, टी.वी. में घण्टों बर्बाद कर देते हैं। प्रातः उठते ही मोबाइल में गुड मॉर्निंग करते हैं। दूसरे लोगों से हँस-हँसकर बातें करते हैं और घरवालों से बात करने का वक्त नहीं है। बाल-युवा पीढ़ी ऑनलाईन पढ़ाई के नाम पर मोबाइल

में पता नहीं क्या-क्या देख रहे हैं? यह चिंता का विषय है। मोबाइल के कारण पास में बैठकर बात करने का समय आज किसी के पास नहीं है। मोबाइल में चैट करते-करते मरना या चार शरण प्राप्त कर मरना? आत्मचिन्तन करें।

श्री मयंकमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि बचपन, जवानी, बुढ़ापा आदि ठहरावों पर जीवन ढलता जा रहा है। सत्कर्मों, सद्विचारों को जीवन में निरन्तर आगे बढ़ाएँ। अपनी जीवनशैली को बदलें।

आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से सभा में उपस्थित अनेक भाई-बहिनों ने प्रातः काल उठते ही दस मिनट तक मोबाइल हाथ में नहीं लेने एवं तीन बार “हे प्रभो! मैं आपकी शरण स्वीकार करता हूँ” उच्चारित करने का संकल्प खड़े होकर लिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

बाहर के दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा। दोपहर में ज्ञानचर्चा, धर्मचर्चा एवं ज्ञान-ध्यान का सुन्दर वातावरण रहा। किशनलालजी जैन-दिल्ली ने आचार्य भगवन् के चरणों में दिल्ली एवं उत्तर भारत पधारने की भावभरी विनती की।

आध्यात्मिक आरोग्य को अमल में लाना होना

22 मई, गंगापुर (भीलवाड़ा)। समता भवन में रविवारीय समता शाखा श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने कराई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परमप्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “संबंध जोड़ना चाहते हैं आत्मा-घरमात्मा से, घर मन इधर-उधर चला जाता है। अच्छाई की ओर ध्यान कम जाता है, बुराई की ओर मन को लगाना कठिन नहीं। क्रोध करने के लिए कुछ सीखना नहीं पड़ता, ट्रेनिंग नहीं लेनी पड़ती। हमारे लिए कोई अगर बुरा करता है तो भी हम उसका बुरा न करें, शान्त रहें। शान्त जीवन जीना चाहते हैं और घरमात्मा-लगन लगाना चाहते हैं तो मन को दूषित करने वाली बातों से दूर रहें। हमारी दृष्टि हमारी अशान्ति का कारण है। गलतियों को बढ़ाने की बजाय सुधार करना चाहिए। जान-बूझकर गलती को पुनः नहीं दोहराना चाहिए। आध्यात्मिक आरोग्य की चर्चा सुन्दर लगती है, किन्तु उसे अमल में लाना होगा।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सद्गुणियों का कीर्तन, वंदन, महिमा गान होना चाहिए। आचार्य भगवन् की अनमोल देन आध्यात्मिक आरोग्य का पहला बिन्दु गुणमय दृष्टि का विकास पर हमें ध्यान देना होगा। हमें किसी की बुराई नहीं अच्छाई देखनी है। आज राजनीतिक क्षेत्र की तरह धर्म संघ में भी झगड़ा, विवाद, विषमता का वातावरण है। गुणदृष्टि से हमें वातावरण को अच्छा बनाना है। दुनिया को नहीं अपने आपको बदलना है।

श्री राजनमुनिजी म.सा. ने राग-द्वेष को छोड़ने और समता भाव को जीवन में आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी। शासन दीपिका साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. आदि ने अपनी भाव गीतिका में “जिसने मेरी समकित लौ जगाई है, मुक्ति की राह बताई है” गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। लोगों को देवानुप्रिय, भव्यात्मा, पुण्यात्मा, आयुष्मान एवं छोटे-बड़े सभी को आप से सम्बोधित करने का नियम कई लोगों ने लिया। कुछ लोगों ने पक्खी प्रतिक्रमण करने का संकल्प लिया।

आचार्य भगवन् के आह्वान पर धर्मस्थानक में प्रतिदिन 15 मिनट धर्माराधना करने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा, ज्ञान-ध्यान कक्षा, शिविर, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। श्री साधुमार्गी जैन संघ एवं सकल जैन समाज की सेवाएँ सराहनीय रही। श्रीमती शान्तादेवी पुरुषोत्तमदासजी वैष्णव के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शान्ति व सन्देश प्राप्त किया।

23 मई, सहाड़ा (भीलवाड़ा)। गंगापुर से 5 किमी. का विहार कर परमप्रतापी आचार्यदेव का जय-जयकारों की गूंज के साथ अम्बेश सौभाग्य साधना सदन में पदार्पण हुआ। काफी संख्या में स्थानीय एवं आगत गुरुभक्तों ने अगवानी की।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी मधुर वाणी में फरमाया कि “जहाँ राग-द्वेष हैं वहाँ अधर्म है। किसी के प्रति आकर्षण का भाव बनता है तो वह अधर्म है। इससे हमारी दृष्टि में विकार आ जाता है। देखना बुरा नहीं है, पर विकार पैदा नहीं होना चाहिए। जिसके मन में राग-द्वेष, आसक्ति पैदा होती है, वह अधर्म है। धर्म के प्रति हमारी गहरी श्रद्धा होनी चाहिए। मन-मन्दिर में दूसरा आता है तो समस्या पैदा होती है। यशमात्मा के प्रति लगन, वीतरागता, अनासक्त भाव, समभाव धर्म है।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मन निरोग रहेगा तो शरीर निरोग रहेगा। इसके लिए आध्यात्मिक आरोग्यम् को अपनाना होगा। गुणदृष्टि का विकास करना होगा। सभी जीवों पर समत्व भाव रखना होगा। मानव-मानव में भेद की भावना को मिटाना होगा।

श्री राजनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि तीर्थकर देवों की वाणी सत्य है, निःशंक है। इस पर हमारी अटूट श्रद्धा होनी चाहिए तभी कल्याण होगा। शासन दीपिका साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री निखारश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने “**धन्य है जिनवाणी गुरुवर धन्य है जिनवाणी**” भजन प्रस्तुत किया।

स्थानीय गुरुभक्तों ने आचार्यदेव के आगमन को परमसौभाग्य बताया।

कई लोगों ने प्रतिदिन 10 मिनट नवकार महामंत्र जाप करने, 12 एकासना, 12 आयम्बिल करने व भोजन करते समय टी.वी., मोबाइल आदि का प्रयोग नहीं करने का संकल्प लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-सहाड़ा की सेवा-भक्ति सराहनीय रही।

24 मई, पोटला (भीलवाड़ा)। परमप्रतापी आचार्य भगवन् का सहाड़ा से 7 किमी. का विहार करके जय-जयकारों के साथ ओसवाल भवन-पोटला में मंगल पदार्पण हुआ।

परमप्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतमय वाणी में भगवान महावीर की देशना का अमृतपान कराते हुए फरमाया कि “धर्म की चर्चा करना बहुत आसान है, पर धर्म में जीना बहुत कठिन है। आज धैर्य और सहनशीलता की कमी होने के कारण घर, परिवार, समाज में झंक्लेश बढ़ता जा रहा है। लड़ाई-झगड़े में धर्म नहीं है। स्नेह, प्रेम, उद्यम भाव, शान्त भाव में धर्म है। किसी ने गाली भी दे दी तो हमारे मन में उतार-चढ़ाव नहीं आना चाहिए। कब तक सहना, जब तक जीवन है तब तक सहना। धैर्य और सहनशीलता आ गई तो समझ लो धर्म जीवन में उतर गया। आचार्य श्री नानेश फरमाया करते थे कि मुनि को पृथ्वी के समान सहनशील होना चाहिए।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सूअर हमेशा गंदगी की ओर नजर रखता है। हमें बुराई नहीं, अच्छाई की ओर नजर रखनी है। महापुरुषों के श्रेष्ठ आचरण को जीवन में ढालना है। आज हम देखा-देखी और फैशन की गिरफ्त में कैद हो गए हैं। जिनका कोई करेक्टर और सिस्टम नहीं है, उनकी देखा-देखी करते हैं। आजकल फटे कपड़े पहनने का फैशन चल रहा है। आमीर खान ने कितनी शादियाँ की ये हमें मालूम है, किन्तु आगम में क्या है यह हमें मालूम नहीं है। फिल्मी गाने हमें याद हैं, पर धर्म के गीत हमें याद नहीं हैं। पुण्य का फल हम चाहते हैं, पर पुण्य करते नहीं हैं। पाप का फल नहीं चाहते, पर पाप नहीं छोड़ते।

श्री राजनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मित्र हो या शत्रु, सभी के साथ समभाव रखना चाहिए। साध्वी श्री

विरक्ताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री निखारश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने “गुरु राम हमारे” गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। महेश नाहटा ने विभिन्न आयामों से जुड़ने की अपील की। कई भाई-बहिनों ने धर्मस्थान में दिन में एक बार अवश्य आने, 15 मिनट स्वाध्याय करने, गाड़ी चलाते व भोजन करते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का संकल्प लिया। धर्म के 10 स्तवन याद करने का संकल्प कई लोगों ने लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा व प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

25 मई, सुरावास (भीलवाड़ा) प्रशान्तमना आचार्यदेव का पोटला से 7 किमी. विहार कर सुरावास गणेशलालजी तातेड़ के निवास पर पदार्पण हुआ। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “जो दूसरों के हित में जीवन जीता है, अहिंसा, सत्य आदि सिद्धान्तों का पालन करता है, निष्काम भाव से जीवन जीता है, वह श्रेष्ठ गति को प्राप्त करता है। जो शवण जैसे अहंकार में जीता है, जो कार्य अकरणीय है उन्हें करता है तो वह दुर्गति में जाता है। दुर्गति में जाने की इच्छा है क्या किसी की? दुर्गति न हो इसके लिए साधु जीवन है। श्रावक जीवन में भी अगर धर्म की आराधना होती है तो वह नरक गति या नीच गति में नहीं जाएगा। जहाँ ईमानदारी है वहाँ धर्म है। जहाँ सत्य-अहिंसा की पालना हो वहाँ धर्म है। साधु बनने से सारे पाप धुल जाएँ यह जरूरी नहीं है, पर साधुता से सारे पाप जरूर धुलेंगे। साधुता यानी समभाव में श्रमण करना। जो समभाव में श्रमण करता है उसका मोक्ष निश्चित है। कोई कुल्हाड़ी से काटे चाहे फूल बरसाए, चाहे कोई निन्दा-प्रशंसा करे, साधु को फर्क नहीं पड़ेगा। समभाव के लिए शरीर का ममत्व छोड़ना पड़ेगा। मैं जब तक जीऊँगा शान्ति से जीऊँगा। किसी के साथ बुरा बर्ताव नहीं करूँगा। कोई बुरा बर्ताव करे तो मैं उसके लिए बुरा नहीं सोचूँगा।”

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जो दिन-रात पाप में रचा-पचा रहता है, उसके लिए नरक का द्वार खुला है। 15 कर्मादान का सेवन करने वाला, मद्य-माँस का सेवन करने वाला नरक में जाता है। आज व्यक्ति पैसा, परिवार, पति-पत्नी, पुत्र और प्रतिष्ठा के चक्कर में पाप करता रहता है। बाद में पश्चात्ताप के अलावा कुछ नहीं रहता। परमात्मा से प्रेम करने से परम मंजिल की प्राप्ति निश्चित है। पाप से बचने के लिए परम भक्ति करें। स्थानीय गुरुभक्तों ने कहा कि आज ऐसा लग रहा है जैसे सबरी की कुटिया में भगवान राम पधारे हैं।

प्रतिदिन 15 मिनट स्वाध्याय, धर्माराधना करने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया। व्यसनमुक्ति के प्रत्याख्यान हुए। ग्रामीण जनता ने कठोर संयम साधक महापुरुषों के अपने बीच पाकर अत्यन्त हर्ष का अनुभव करते हुए वर्षों पूर्व नाना गुरु के प्रवास की स्मृति का चित्रण किया। क्षेत्र स्पर्शने हेतु अनेक क्षेत्रों की विनितियाँ गुरुचरणों में प्रस्तुत हुईं। उदयपुर संघ का शिष्ट मण्डल स्थानीय संघ अध्यक्षजी के नेतृत्व में श्रीचरणों में उपस्थित हुआ। आयड़ क्षेत्र में दीक्षा आयोजन हेतु विनती प्रस्तुत हुई। दोपहर में राजकीय स्कूल में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए एवं श्री अटलमुनिजी म.सा. ने प्रत्याख्यान से होने वाले लाभ की जानकारी दी। बदनावर से बोहरा परिवार गुरुचरणों में उपस्थित हुआ। तातेड़ परिवार-सुरावास की सेवा-भक्ति अत्यन्त प्रशंसनीय रही।

26 मई, गिलुण्ड (भीलवाड़ा)। परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. का सान्निध्यवर्ती शिष्य मण्डली सहित सुरावास से 7 किमी. विहार कर महावीर भवन, गिलुण्ड में जयजयकारों के साथ पदार्पण हुआ। श्वेताम्बर, दिगम्बर समाज के साथ जैनेत्तर भाई-बहिन भारी संख्या में उपस्थित थे। गगनभेदी जयघोषों एवं मंगल गीतों से पूरा माहौल गुंजायमान हो रहा था।

परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी मधुर वाणी में भगवान महावीर की देशना को प्रसृत करते हुए फरमाया कि “धर्म क्रिया का लक्ष्य धर्म को प्राप्त करना है। आत्मा ही परमात्मा है, यह भाव हमारे भीतर निरन्तर

होना चाहिए। फिर कौन अपना और कौन पराया? संसार की सभी आत्माओं को अपनी आत्मा के समान समझना चाहिए। मात्र द्रव्य सामायिक नहीं, भाव सामायिक करनी है, जिससे समभाव में वृद्धि होती है। धर्म क्रिया का मतलब है मन यवित्त, निर्मल, सन्तुष्ट होना चाहिए। साधु को निर्दोष भिक्षा बहशाएँ। साधु के लिए बनाया गया आहार जहर के समान होता है। साधु के निमित्त से आहार ज्यादा व जल्दी नहीं बनाया जाना चाहिए। शुद्ध आहार से मन शुद्ध रहेगा। “जैसा खाए अन्न वैसा होवे मन”।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने भवी-अभवी आत्मा की विवेचना प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हम सभी का लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करना है। जग का सुख शाश्वत सुख नहीं है। धर्म से समझ पैदा होती है, फिर वह छोटी-छोटी बातों में तेरी-मेरी में उलझेगा नहीं, भौतिक सुखों में लिप्त नहीं होगा।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि तीर्थकर देवों की वाणी में हर समस्या का स्थाई समाधान है। गुणों का पूजारी गुणों को देखेगा, उसकी दृष्टि अवगुणों की ओर नहीं होगी।

शासन दीपिका साध्वी श्री रश्मिजी म.सा., साध्वी श्री सुरचित्रीजी म.सा. आदि ने गुरुभक्ति गीत का संगान किया। स्थानीय संघ अध्यक्षजी ने कहा कि आज ऐसे महान आचार्य राम गुरु पधारे हैं, जिनकी साधना की गूँज सब तरफ है। आज हमारी खुशियों का कोई पार नहीं है। अधिक से अधिक विराजने की कृपा करें।

कई भाई-बहिनों ने 12 उपवास, 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 संवर आदि करने का संकल्प लिया। अन्य अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 ने सहाड़ा, पोटला, सुरावास को पावन करते हुए गिलुण्ड में धर्म की ज्योति जलाई। दोपहर में श्री नीरजमुनिजी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र का सुन्दर विवेचन किया। हर गाँव में सायंकालिन प्रतिक्रमण व ज्ञानचर्चा में उल्लेखनीय उपस्थिति रही। दांता ग्रामवासियों ने आचार्य श्री नानेश की जन्म-जयन्ती प्रसंग की भावभरी विनती प्रस्तुत की। राष्ट्रीय उपाध्यक्षजी ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

27 मई, गिलुण्ड। महावीर भवन में प्रातः मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “मेरेपन का भाव ममत्व को बढ़ाता है। शरीर, रिश्ते-नाते, धन, परिचार कुछ भी मेश नहीं है। मेरेपन को हटाने से ही परम मंजिल मिल सकती है। एक संकल्प शक्ति से जीवन में बदलाव व क्रान्तिकारी परिवर्तन आ सकता है। आचार्य भगवन् के श्रीमुख से “हे प्रभु मेशी एक चुकार, मैं भी बन जाऊँ अणगार। छोड़ के याप अटार, मैं भी बन जाऊँ अणगार।” भाव गीतिका प्रस्तुत होते ही जन-जन में वैराग्य की तरंगें दौड़ने लगी।”

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने राग-द्वेष के भाव से अलग हटकर अपने समभाव में आने की अद्भुत प्रेरणा दी। शासन दीपिका साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। शिक्षक कवि नन्दलालजी लड्डा (माहेश्वरी) ने अपने भावों में कहा कि आचार्य श्री रामेश वो पावन गंगा है, जिसमें डुबकी लगाकर जीवन नैया को पार लगाया जा सकता है। स्थानीय संघ अध्यक्षजी, मंत्रीजी व महेश नाहटा ने दिव्य महापुरुषों के दिव्य जीवन से प्रेरणा लेने का निवेदन किया।

धर्मस्थान में प्रतिदिन व साप्ताहिक आने, घर में रहते हुए एक गिलास धोवन पानी पीने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। दोपहर में उभय गुरु-भगवन्तों के सान्निध्य में ज्ञानचर्चा, आगम वाचनी आदि कार्यक्रम हुए। गिलुण्ड संघ की सेवा-भक्ति सराहनीय रही।

95 वर्षीय धर्मपरायणा सज्जनबाई आँचलिया पैदल चलकर महावीर भवन में आई और आचार्य भगवन् के दर्शन व प्रवचन का लाभ लिया।

28 मई, सेजगरिया। तरुणतपस्वी आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का सेजगरिया में मंगलमय पदार्पण हुआ। श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मोह के कारण मोक्ष दूर हो गया है। धार्मिकता के पहले नैतिकता होनी जरूरी है। मुनिश्री ने टी.वी., मोबाइल, व्हाट्सएप्प, सिनेमा आदि में समय व्यर्थ नहीं गंवाने एवं स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। स्थानीय गुरुभक्तों ने कहा कि आज सौभाग्य का सूरज उदय हुआ है। घर बैठे गंगा आई है। गुरु-भगवन्तों का अधिकाधिक लाभ लेवें।

समता प्रचार संघ के राष्ट्रीय संयोजकजी ने स्वाध्याय, संस्कार एवं सेवा से जुड़ने की अपील की। रात्रि में श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने प्रभु एवं गुरुभक्ति गीतों से सबको अध्यात्म से सराबोर कर दिया।

29 मई, जाशमा। सेजगरिया से 7 किमी. का विहार कर विश्व की विरल विभूति आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का जय-जयकारों के साथ धर्मनगरी जाशमा के जैन स्थानक में हुआ।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए नानेश पट्टधर आचार्य भगवन् ने फरमाया कि “मनुष्य जन्म निर्णायक जन्म है। इस मनुष्य जन्म में आत्मबोध जग गया तो यह जीवन सफल एवं सार्थक हो जाएगा। उठो, प्रमाद मत करो। शास्त्र पढ़ लिए, थोकड़े खूब सीख लिए, लेकिन उसका फल हमें क्या मिला? इससे आत्मबोध जागृत हुआ कि नहीं, आत्मचिन्तन करें। शरीर अलग और आत्मा अलग है। यह बोध हम में जगना चाहिए। जब ग्रभु से आत्मलीनता हो जाती है तब शरीर के साथ क्या हो रहा है इसका भान ही नहीं रहता।”

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि धर्म मात्र चर्चा का विषय नहीं अपितु जीवनचर्या में आना चाहिए। स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ की दिशा में आगे कदम बढ़ाना चाहिए।

साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा. ने आदि ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किए। स्थानीय गुरुभक्तों ने आचार्यश्री के उपकारों के प्रति अहोभाव व्यक्त किया। जाशमा पर सदैव कृपादृष्टि बनाए रखने का निवेदन किया।

वर्ष में 12 उपवास, 12 एकासन, प्रतिदिन 15 मिनट स्वाध्याय करने का संकल्प अनेक गुरुभक्तों ने लिया।

परम गुरुभक्त कान्तिलालजी मेहता-नीमच के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों उपस्थित होकर आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त की। दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। जाशमा संघ की धर्मनिष्ठा एवं सेवा-भक्ति अत्यन्त प्रशंसनीय रही।

एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षु बहिन कु. यशस्वी ढेलडिया सुपुत्री मांगीलालजी-अनितादेवी ढेलडिया, बालोद का जाशमा संघ की ओर से आत्मीय स्वागत किया गया। माल्यार्पण व शॉल ओढ़ाकर अध्यक्षजी एवं पदाधिकारियों ने अभिनन्दन किया।

मुमुक्षु बहिन ने अपने उद्गार में कहा कि “जय गुरु राम” में अपार शक्ति है। इसके स्मरण मात्र से संकट दूर हो जाते हैं, समस्याओं का समाधान हो जाता है। आचार्य भगवन्, उपाध्याय भगवन् की असीम कृपा एवं पारिवारिकजनों के सहकार के फलस्वरूप मैं वीतराग पाथ पर आगे बढ़ रही हूँ। गुरु आज्ञा का पालन ही मेरे जीवन का लक्ष्य होगा।

30 मई, मालीखेड़ा। जाशमा से विहार कर सभी चारित्रात्माओं का मालीखेड़ा के स्कूल में जय-जयकारों के साथ मंगल आगमन हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्षजी, शिखर सदस्य पंकजजी-मंजूजी शाह-पिपलियाकलां, वीर भ्राता रिशुजी

सेठिया-कोलकाता ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर दर्शन-वंदन-सेवा का लाभ लिया। क्षेत्र स्पर्शने की विभिन्न क्षेत्रों की विनतियाँ श्रीचरणों में हुई। माली समाज की धर्म व सेवा भावना सराहनीय रही।

शासन दीपक श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 का जाशमा से जय-जयकारों के साथ सीधे कपासन पधारना हुआ।

31 मई, कपासन। युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि त्यागी महापुरुषों का आचार्य श्री नानेश की दीक्षा स्थली कपासन में जय-जयकारों व मंगल गीतों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। सकल जैन समाज, श्री साधुमार्गी जैन संघ सहित देश के अनेक स्थानों से पधारे श्रद्धालुओं ने अगवानी की। राष्ट्रीय अध्यक्षजी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षजी, नगरपालिका चेयरमैन मंजूदेवी स्वर्णकार आदि गणमान्यजन उपस्थित थे।

समता भवन में मंगल प्रवेश के अवसर पर आशीर्वाद स्वरूप आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ फरमाया। अयोध्या में जैसे राम का पदार्पण हुआ, कुछ वैसा ही दृश्य कपासन में देखने को मिला।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि प्रभु कीर्तन करने से मन शान्त होता है। प्रभु एवं गुरुभक्ति में जो आनन्द है वो किसी और चीज में नहीं है। भक्ति में दिखावा-प्रदर्शन नहीं होना चाहिए। आज घर, परिवार, समाज में विवाद का मुख्य कारण दिखावा है। हमें दुनिया को नहीं अपने आपको बदलना है। हम गुरु को मानते हैं, पर गुरु की नहीं मानते। अभी तक उत्क्रान्ति का आयाम भी शत-प्रतिशत पूर्ण नहीं हो पाया।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि विश्वशान्ति का अमोघ उपाय समता दर्शन है। आचार्य श्री नानेश ने समतामय जीवन जीया और समता का सन्देश दिया। हर परिस्थिति में हमें समभाव रखना है।

शासन दीपिका साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय संघ अध्यक्षजी, मंत्री एवं महेश नाहटा ने आचार्य श्री नानेश-रामेश के दिव्य गुणों का उल्लेख करते हुए पावन सान्निध्य का अधिकाधिक लाभ उठाने की अपील की।

कई गुरुभक्तों ने 12 उपवास, 12 एकासन करने का नियम लिया। दोपहर में उभय गुरु-भगवन्तों के पावन सान्निध्य में ज्ञानचर्चा हुई। बाहर से आने वाले दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा।

सालों बाद आराध्यदेव के पदार्पण पर पूरा नगर राममय हो गया। अभी तक 11 संत व 28 महासतियाँजी म.सा. कपासन में पधार चुके हैं। यह सिलसिला जारी है। मेवाड़ क्षेत्र में निरन्तर धर्म प्रभावना होने से जन-जन हर्षित व पुलकित है। उदयपुर चातुर्मास 2022 हेतु पावन चरणसरोज गतिमान हैं।

मेवाड़ की धरा में भीलवाड़ा, नीमच, गंगापुर, देवरिया, दुर्ग, कपासन, गिलुण्ड, मैसूर, बैंगलोर, मुम्बई, गंगापुर, चित्तौड़गढ़, अक्कलकुआं, नवसारी, सूरत, अहमदाबाद, बैंगलोर, चैन्नई, उल्लई, उदयपुर, रतलाम, सहाड़ा, ब्यावर, दिल्ली, रायपुर, गंगाशहर, गिलुण्ड, डेलाना, देवगढ़, निकुम्भ, जोधपुर, श्यामगढ़, जावद, देणोक, गुड़गाँव, बदनावर, दुर्ग, बीकानेर, रेलमगरा, प्रतापगढ़, कांकरोली, कुंवारिया, जलगाँव, कानोड़, भोपालसागर, मदुरान्तकम्, कानोड़, चिकारड़ा, डबोक, मन्दसौर, फतहनगर, इन्दौर, शोलापुर, जावद, दांता, उमंड, रुण्डेडा, पिपलियाकलां आदि स्थानों के गुरुभक्तों ने दर्शन-सेवा कर जीवन धन्य किया।

क्र.स.	प्रत्याख्यान के नाम	प्रत्याख्यान लेने वाले श्रावक-श्राविकाओं के नाम	
1	तेला तप	कंचनबाई मांगीलालजी सूर्या, बसंताबाई रमणलालजी सूर्या	
2	आजीवन शीलव्रत	रामदत्तजी लोहिया-गंगपुर, पारसमलजी छाजेड़-भीलवाड़ा, विजयजी-चन्दाजी सुराणा-मुम्बई, शंकरलालजी-मंजुलाजी सुराणा, शांतिलालजी कोठारी-सूरत, द्वारकादासजी वैष्णव, मंजूजी सिद्धार्थजी बोहरा-होलेनरसिंहपुर, मदनलालजी-कमलादेवी चण्डालिया	
3	रात्रिभोजन का त्याग	प्रेमबाई सूर्या, हर्षजी जैन-कल्याणपुर, ललिताजी लोसर-भीलवाड़ा, लाडदेवी सूर्या, मुन्नालालजी आँचलिया, साधनाजी कोठारी-रतलाम, अशोकजी तातेड़	
4	एकासन	50 एकासन	पारसबाई सूर्या
		40 एकासन	ऊषाजी तातेड़
		एकान्तर एकासना	सरस्वतीजी विनायकिया-भीलवाड़ा
5	टी.वी. का त्याग	अनिलजी सूर्या, हर्षजी सूर्या, गौतमजी सूर्या, पुष्पाजी संचेती, इंद्रजी आँचलिया	
6	उपवास	आजीवन टी.वी. का त्याग	शान्तिलालजी सैन
		12 उपवास	बसन्तीजी सूर्या, प्रियंकाजी कोठारी, श्वेताजी डगलिया-सूरत
		वर्ष में 24 उपवास	अभयजी मुणोत-रतलाम
7	आयंबिल	प्रत्येक पक्खी को उपवास	लक्ष्मीलालजी अनिताजी आँचलिया
		वर्ष में 12 आयंबिल	बसन्तीजी सूर्या
		वर्ष में 200 दिन	विमलजी देसरड़ा-गंगपुर
8	पोरसी	150 पोरसी	पानबाई जैन
		100 पक्की पोरसी	ललिताजी लोसर-भीलवाड़ा, वर्षाजी दक-भीलवाड़ा, जमनाबाई पितलिया
		आजीवन बड़े स्नान का त्याग	कैलाशजी आँचलिया, सुरेशजी आँचलिया
9	बड़े स्नान का त्याग	वर्ष में 100 दिन	आशाजी मुलावत-भीलवाड़ा, सुशीलाबाई मेहता-नीमच, हरिसिंहजी भण्डारी
		वर्ष में 150 दिन	सज्जनबाई साँखला
		वर्ष में 100 दिन	रंजनाजी पितलिया, सागरमलजी दलाल, मंजूजी चपलोट, सुजाताजी कोठारी, हेमलताजी गिलुडिया, पलकजी जैन, कमलाजी कोठारी, जमनाबाई पितलिया, सुशीलाजी लोसर, ललिताजी लोसर, कैलाशबाई पिछोलिया, पुष्पाजी सुराणा, रेखाजी पामेचा, शान्ताजी सूर्या, मनोहरदेवी कांटेड़, सोहनलालजी आँचलिया, अशुलजी आँचलिया, मनोहरदेवी, मंजूजी आँचलिया, हीरादेवी ओरस्तवाल, पारसबाई साँखला
10	पक्की नवकारसी	आजीवन पक्की नवकारसी	मनोहरजी सूर्या-मुम्बई
		300 पक्की नवकारसी	सुशीलाबाई साँखला
		250 पक्की नवकारसी	साधनाजी कोठारी-रतलाम
		150 पक्की नवकारसी	सुशीलाजी लोसर
		100 पक्की नवकारसी	सीमाजी पितलिया, विमलाजी पिछोलिया, सीमाजी कटारिया-उज्जैन
11	बाजार की मिठाई का त्याग	50 पक्की नवकारसी	भावनाजी पिछोलिया, नीरुजी पिछोलिया, सोनमजी सुराणा, मंजुलाजी सुराणा, सपनाजी चेलावत-जावद, यशवन्तजी मारू, मनोरमाजी पटवा-कोलकाता
		कान्ताजी बोधरा-गुवाहाटी, कमलाजी पिछोलिया, सुशीलाजी सिंघवी, सुनीलजी तातेड़, सूरजदेवी आँचलिया, चंचलजी आँचलिया	
		कान्ताजी बोधरा-गुवाहाटी, कमलाजी पिछोलिया, सुशीलाजी सिंघवी, सुनीलजी तातेड़, सूरजदेवी आँचलिया, चंचलजी आँचलिया	
12	जमीकंद का त्याग	मुकेश जी देरासरिया, मिश्रीलालजी चपलोट, सम्पत्तजी मोगरा, अनिलजी तातेड़	
13	सामायिक	700 सामायिक	रोशनलालजी पितलिया
		365 सामायिक	साधनाजी चपलोट
14	12 पौषघ, 12 संवर	मंजूजी भड़कतिया-पाली	
15	सचित्त का त्याग	सुनीताजी सिंघवी, गणेशजी आँचलिया	
		100 सचित्त का त्याग	लक्ष्मीजी पितलिया
16	होटल का त्याग	सुनीताजी लोसर, प्रकाशदेवी सुराणा, भगवतीदेवी संचेती, गणेशजी तातेड़, गोटीलालजी सूर्या, रखबलालजी सूर्या	
17	आजीवन किसी भी प्रसंग पर गिफ्ट लेने का त्याग	राजेशजी-दीपिकाजी मोगरा-श्यामगढ़	
18	21 द्रव्य उपरांत का त्याग	अमिताजी ओरस्तवाल	
19	1 लाख गाथा का स्वाध्याय	रेखाजी बोरदिया-चित्तौड़गढ़	
20	मोबाइल का त्याग	आजीवन मोबाइल का त्याग	शान्तिलालजी सैन
		माह में 4 दिन मोबाइल का त्याग	मंजूलाजी पिरोदिया, लक्ष्मीजी पितलिया, लादुलालजी कांटेड़
		माह में 2 दिन मोबाइल का त्याग	रोशनलालजी पिछोलिया, जमनाबाई पितलिया, प्रकाशजी आँचलिया
		22 दिन मोबाइल का त्याग	चन्दनबालाजी सिरोंया
		माह में एक दिन मोबाइल का त्याग	विनोदजी देसरड़ा, सुषमाजी कोठारी, शीलाजी कोठारी, सुहानीजी जैन, लीलाजी नवलखा, सपनाजी नवलखा, सुरेशजी सिंघवी, ललिताजी चौरडिया, लक्ष्मीलालजी कूकड़ा, प्रज्ञाजी मुणोत, हेमन्तजी मेहता, प्रेमलताजी मेहता-रतलाम, रोशनलालजी गिलुडिया, डिम्पलजी गन्ना, प्रकाशजी कोठारी, गौतमजी गन्ना, सुरेशजी संचेती, प्रकाशचन्दजी संचेती, भगवतीलालजी सुराणा, रिद्धिचंदजी मोगरा, भंवरलालजी तातेड़, शान्तिलालजी चांदेरिया, सम्पत्तलालजी मोगरा, महावीरजी तातेड़, लाडदेवी सूर्या, प्रेमदेवी देसरला, मनोजजी सरोगी, कुलदीपजी ओरस्तवाल, ललितजी आँचलिया, मनोहरलालजी आँचलिया, गणेशजी ओरस्तवाल, सागरमलजी आँचलिया, ललित विद्याजी जैन, विजयलक्ष्मी चौधरी, पवन चौधरी, सम्पत्तलालजी बोरदिया, बाबुलालजी महेन्द्रजी कर्नावट, विजयजी जैन, वीरेन्द्रजी सकलेचा-रतलाम, मनोहरजी चण्डालिया, छितरमलजी चण्डालिया, सुरेशजी चण्डालिया, ललिताजी जैन-बिरमावल

-महेश नाहटा



श्रमणोपासक शासन प्रभावक श्री सेवन्तमुनिजी म.सा. संक्षिप्त परिचय

जन्मतिथि	:	कार्तिक सुदी 15 संवत् 2000 दिनांक 31/10/1944
जन्मस्थान	:	बनेड़ा, भीलवाड़ा (राज.)
दीक्षा तिथि	:	कार्तिक सुदी 3 संवत् 2019 दिनांक 31/10/1962
दीक्षा स्थल	:	उदयपुर (राज.)
व्यावहारिक शिक्षा	:	9वीं
आध्यात्मिक ज्ञान	:	जैन सिद्धान्त रत्नाकर
वैराग्य का कारण	:	श्री सुमेरमुनिजी म.सा. से कथा श्रवण कर
दीक्षा प्रदाता	:	आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. के सान्निध्य में युवाचार्य श्री नानालालजी म.सा.

सांसारिक पारिवारिक परिचय

माता-पिता	:	श्रीमती सुन्दरदेवी-श्री देवीलालजी ढाबरिया
भाई	:	बसंतीलालजी, रामपालजी, धर्मचन्दजी, समुन्द्रसिंहजी ढाबरिया
बहिन	:	श्रीमती शान्ताबाई शाह-अहमदाबाद, श्रीमती गोविंदाबाई शाह-मुम्बई, श्रीमती पुष्पाबाई कोठारी-उदयपुर
महाप्रयाण	:	ज्येष्ठ सुदी 7 संवत् 2079 दिनांक 07/06/2022 (ब्यावर)

शासन प्रभावक श्री सेवन्त मुनिजी म.सा.

अथ से इति की ओर सजग यात्रा ब्यावर धरा फिर हुई केशरिया-केशरिया

ज्येष्ठ सुदी 7 संवत् 2079 बुधवार दिनांक 07 जून 2022 को शुद्ध संयम साधना के पर्याय, शासन प्रभावक श्री सेवन्तमुनिजी म.सा. ने ब्यावर की पुण्यधरा पर चौविहार संधारा साधना सहित पण्डितमरण को प्राप्त किया।

दिनांक 06 जून 2022 को मध्याह्न के पश्चात् आपका स्वास्थ्य अनुकूल न लगने पर आपश्रीजी ने संधारा प्रत्याख्यान करवाने हेतु कहा। मुनिश्री की स्थिति को देखते हुए व सभी संत-महापुरुषों की सहमति से शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा. ने तिविहार संधारे के प्रत्याख्यान श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में पूर्ण सजग अवस्था में करवाए। रात्रि व्यतीत हो जाने के पश्चात् 07 जून को प्रातः संधारा साधक मुनिश्री के स्वास्थ्य में कुछ सुधार हुआ तो समस्त जनमानस को राहत मिली, लेकिन मध्याह्न में पुनः स्वास्थ्य अस्थिर होने लगा। साँसें लम्बी-लम्बी चलने लगी, जिनसे लग रहा था कि म.सा.श्री को साँस लेने में परेशानी हो रही है। स्थिति को गंभीरता को समझते हुए शासन प्रभावकजी को चौविहार संधारे के पचक्खाण करवाए गए।

स्थिति अनुसार मुनिश्री का अन्तिम समय करीब जानकर ब्यावर परिसर में विराजित सभी महासतीवर्याएँ- शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा., साध्वी श्री परागश्रीजी म.सा. आदि ठाणा समता भवन पधार गए। उपस्थित चारित्रात्माओं एवं श्रावक-श्राविकाओं द्वारा “अरिहन्त प्रभु का शरणा, सिद्ध प्रभु का शरणा” का गान निरन्तर किया जा रहा था।

जाप को अक्षरशः आत्मसात् करते हुए 07 जून को सायं 6:31 बजे आचार्य श्री नानेश के प्रथम शिष्य संधारा साधक श्री सेवन्तमुनिजी म.सा. जैसा दिव्य सितारा नश्वर देह का त्याग कर काल-कवलित हो गया। आपश्रीजी लगभग 16 वर्षों से ब्यावर की धरा को पावन करते हुए अध्यात्म के पुष्पों की निरन्तर वर्षा कर रहे थे। मुनिश्रीजी का जीवन सहज, सरल, सजग, जागरूक एवं करुणाशील था। बापजी महाराज की “अथ से इति की ओर सजग यात्रा” सफल हुई। मुनिवर ने तीनों मनोरथों को पूर्ण कर पण्डितमरण को प्राप्त किया।

(विस्तृत समाचार अगले अंक में)

स्मृतिशेष साध्वी श्री कल्पमणिजी म.सा. संक्षिप्त परिचय

जन्मतिथि	:	वैशाख बदी 7 संवत् 2024 दिनांक 30/04/1967
जन्मस्थान	:	पिपलियामण्डी (म.प्र.)
दीक्षा तिथि	:	फाल्गुन सुदी 2 संवत् 2040 दिनांक 04/03/1984
दीक्षा स्थल	:	रतलाम (म.प्र.)
व्यावहारिक शिक्षा	:	6
आध्यात्मिक ज्ञान	:	जैन सिद्धान्त रत्नाकर
वैराग्य का कारण	:	साध्वी श्री मनोहरकँवरजी म.सा. का उपदेश
दीक्षा प्रदाता	:	आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

सांसारिक पारिवारिक परिचय

माता-पिता	:	श्रीमती प्रभादेवी-सुन्दरलालजी कच्छारा
भाई	:	प्रदीपजी-अंगुरबालाजी, मनोजजी-शोभनाजी कच्छारा
बहिन	:	श्रीमती सन्तोषबाई-रतनलालजी नलवाया
	:	श्रीमती सुनीताबाई-अशोकजी चन्द्रावत
महाप्रयाण	:	ज्येष्ठ सुदी 2 सं.2079 दिनांक-01.06.2022

मन्दसौर में साध्वी श्री कल्पमणिजी म.सा. का देवलोकगमन

आचार्य श्री रामलालजी म.सा. की शासन बगिया में पुष्पित, जिनशासन सेवा में समर्पित, गुरुआज्ञा को शिरोधार्य कर सिंहनी की भाँति संयम मार्ग पर दृढ़ प्रतिज्ञ रहने वाली साध्वी श्री कल्पमणिजी म.सा. का दिनांक 01 जून 2022 को दोपहर 2:30 बजे शुभभावों के साथ देवलोकगमन हो गया। आपश्रीजी पिपलियामण्डी में विराजमान थे, लेकिन गत कुछ दिनों से सिरदर्द की शिकायत होने पर आपश्री को मन्दसौर लाया गया था और मन्दसौर पहुँचने के एक दिन पश्चात् ही काल के क्रूर हाथों ने हमसे एक दिव्य मणि को छीन लिया।

आस-पास के क्षेत्रों में जैसे ही साध्वीवर्या के देवलोकगमन का समाचार ज्ञात हुआ लोग अपने श्रद्धासुमन अर्पित करने हेतु मन्दसौर पहुँचने लगे। स्थानीय संघ सदस्यों ने सेवा-भावना का अपूर्व परिचय देते हुए शीघ्र ही डोल यात्रा की तैयारी पूर्ण की।

01 जून 2022 को सायं 5 बजे समता सदन से आपकी डोल यात्रा रवाना हुई। रास्ते में अनेक स्थानों पर मार्ग के दोनों ओर स्थानीय लोग साध्वीश्रीजी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि देने हेतु उपस्थित थे। सम्पूर्ण मार्ग जैन शासन के नारों से गुंजायमान हो रहा है। हर किसी ने म.सा. के अन्तिम दर्शन कर अपना जीवन धन्य बनाया। डोल यात्रा में स्थानीय गुरुभक्तों के साथ-साथ रतलाम, जावरा, नीमच, जावद, पिपलियामण्डी के श्रावक-श्राविकाओं एवं सकल जैन समाज ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

अन्तिम विश्राम स्थल पहुँचने पर साध्वीवर्या की पार्थिक देह को चन्दन की लकड़ी मिश्रित चिता पर सजाया गया, जहाँ म.सा. के सांसारिक परिजनों ने मुखार्थि दी और देखते ही देखते रामेश शासन की एक अकल्पनीय मणि चिरशान्ति के साथ अनन्त में विलीन हो गई।

(विस्तृत समाचार अगले अंक में)

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु सुश्री आयुषी (आशी) मेहता (मूथा), बालाघाट

नाम : मुमुक्षु सुश्री आयुषी (आशी) मेहता (मूथा)

जन्मतिथि : 7 अक्टूबर 1997

जन्मस्थान : बालाघाट (म.प्र.)

आयु : 24 वर्ष

शिक्षा : बीबीए, योगा में डिप्लोमा

वैराग्यकाल : 2 वर्ष

धार्मिक अध्ययन : श्री दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 1-4, 9, 10

दोनों चूलिका, श्री उत्तराध्ययन सूत्र 1, 11, पुच्छिसुणं, जैन सिद्धान्त बत्तीसी, पाँच समिति, तीन गुप्ति, 67 बोल, 33 बोल

धार्मिक परीक्षा : जैन सिद्धान्त भूषण

संयम मार्ग के प्रेरक : साध्वी श्री पल्लवश्रीजी म.सा.



वार्षिक परिचय

दादाजी-दादीजी : स्व. सज्जनराजजी-स्व. कान्तादेवी मेहता

पिताजी-माताजी : श्री कुशलचन्दजी-नीताजी मेहता

भाई-भाभी : ऋषभजी-सिद्धिजी, सौरभजी-पूजाजी, श्रेयांशजी, निखिल मेहता

बड़े दादा-दादीजी : स्व. जीतमलजी-किरणदेवी मेहता

बड़े पिता-माताजी : सन्तोषकुमारजी-ममताजी मेहता

चाचाजी-चाचीजी : गौतमचन्दजी-रीनाजी मेहता

नानाजी-नानीजी : स्व. हुक्मीचन्दजी-शान्ताबाई बैदमूथा

मामाजी-मामीजी : नीरजजी-मनीषाजी, पंकजजी-मंजूजी, अमितजी-रितूजी बैदमूथा



Serving Ceramic Industries Since 1965

हमारे नवीं श्री चण्डिका पाम चण्डिका पाम समाना
 सतपचण्डिका, प्रसांतपना, अचार्य-पुनर 1888 श्री गणेशनाली पना.
 गार्डचण्डिका चण्डिकापना श्री चण्डिका श्री चण्डिका पाम



A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
 Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
 1st Floor, Labhuji Ka Katla,
 Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521824 / 3294234
 FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
 Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com



CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT



PATIENT ROOM



RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095
Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

श्रमणोपासक
॥ जय गुरु नाना ॥

॥ श्री महावीराय नमः ॥

15-16 जून, 2022
॥ जय गुरु राम ॥



उदयपुर का कण कण खिला,
गुरु राम का चातुर्मास मिला।



राम महोत्सव 2022

आचार्य श्री रामेश पावन वर्षावास प्रसंग

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, परमागम रहस्य ज्ञाता,
व्यसन मुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री रामलालजी म.सा.

बहुश्रुत वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर
श्री राजेशमुनिजी म.सा.

आदि ठाणा का पावन वर्षावास 2022 प्रसंग रखे जाने वाले
समस्त आगारों सहित उदयपुर श्रीसंघ को प्राप्त हुआ है।

सभी सम्मानित श्रावक-श्राविकाओं व श्रीसंघों से विनती है कि इस पावन अवसर पर श्रीसंघ और परिवार सहित
पधारकर धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता की भव्यता से अपने जीवन को आत्मकल्याण की ओर अग्रसर करें।

चातुर्मास स्थल - जैन स्थानक भवन, हिरण मगरी सेक्टर 4, उदयपुर 313002 (राज.)

Website - www.udaipurchaturmas.com | Email - udaipurchaturmas@gmail.com

निवेदक

श्री साधुमार्गी जैन संघ
समता युवा संघ

श्री साधुमार्गी जैन महिला समिति
समता बहु मण्डल

सहयोगकर्ता : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्थान, हि.म. से. 4, उदयपुर

चौका व्यवस्था

अनिल खटोड़
M. 97994-80715

गौतम आंचलिया
M. 97692-20788

आवास-निवास व्यवस्था

सौरभ गौलछा
M. 90015-91024

मनीष कोठारी
M. 90018-33333

चातुर्मास व्यवस्था समिति, उदयपुर

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक	
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ	
प्रधान कार्यालय	
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-2270261 helpdesk@sadhumargi.com	
अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक	
गौतम चन्द जैन, मुम्बई	
सह संपादिका	
श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर	
श्रमणोपासक सदस्यता	
आजीवन (अर्द्ध मूल्य) (केवल भारत में)	500/-
(विदेश हेतु)	10,000/-
वार्षिक (केवल भारत में)	60/-
(विदेश हेतु)	1,000/-
वाचनालय वार्षिक (केवल भारत में)	50/-
प्रस्तुत अंक मूल्य	10/-
संघ सदस्यता	
साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-
साहित्य सदस्यता	
15 वर्ष (केवल भारत में)	3,000/-
संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :- E-mail : ho@sadhumargi.com	

बैंक खाता विवरण	
Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner	
State Bank of India	
Account No. :	31264126681
IFSC Code :	SBIN0003401
Branch :	G.S. ROAD, Bikaner
Mob. :	7073311108
E-mail :	accounts@sadhumargi.com
	
व्हाट्सएप्प और ई-मेल आईडी	
श्रमणोपासक समाचार :	8955682153 ; -news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक :	9799061990 ;
साहित्य :	8209090748 ; publications@sadhumargi.com
महिला समिति :	7231033008 ; ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ :	7073238777 ; yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा :	7231933008 ; -examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त :	7976519363 ;
परिवारांजलि :	7231933008 ; anjali@sadhumargi.com
विहार :	8505053113 ; vihar@sadhumargi.com
पाठशाला :	9982990507 ; Pathshala@sadhumargi.com
शिविर :	7231833008 ; udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन :	6265311663 ; globalcard@sadhumargi.com
:- सूचना :-	
निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा। कार्यालय समय- प्रातः 10.00 से सायं 6.30 बजे तक लंच- दोपहर 1.00 से 1.45 बजे तक	

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर दें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।
मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप्प करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND



Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES
No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com



FIRST TIME IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED
CO-MOULDED DURO RING SEAL



www.shandgroup.com

रक्षा जीवन भर की सुरक्षा

www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए भण्डारी ऑफसेट, जोधपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24900

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261